तर्कशील पथ

TARKSHEEL PATH

जुलाई–अगस्त 2023

डा. नरेंद्र दाभोलकर
(शहादत दिवस 20 अगस्त)
(13)

कृत्रिम बुद्धिमता (22)
(Artificial Intelligence)

अंधविश्वास
(9)

क्रांतिकारी
बटुकेश्वर दत्त
(29)
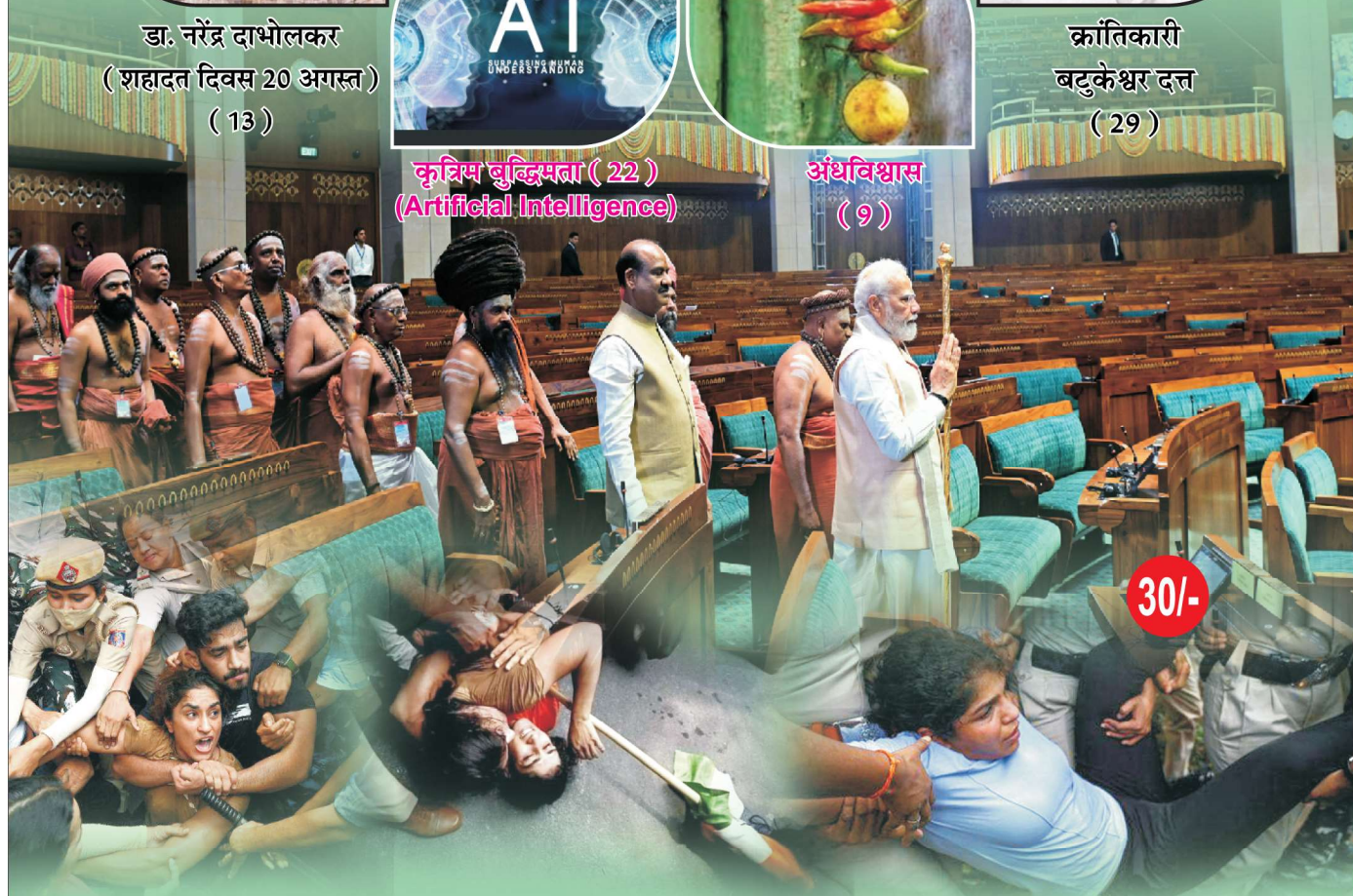
30/-

अगर जुल्म देख कर तुम्हारा खून खौलता है, तो तुम मेरे साथी हो--चे ग्वेरा

आज से लगभग सौ साल पहले अमेरिकन कवयित्री मिरियम वेडर (1894-1983) की लिखी कविता (Watchman)

चौकीदार

– मिरियम वेडर

तंग-संकरी गलियों से गुजरते
धीमे और सधे कदमों से
चौकीदार ने लहरायी थी अपनी लालटेन
और कहा था – सब कुछ ठीक है
बंद जाली के पीछे बैठी थी एक औरत
जिसके पास अब बचा कुछ भी न था बेचने के लिए
चौकीदार ठिठका था उसके दरवाजे पर
और चीखा था ऊंची आवाज में – सब कुछ ठीक है
घुप्प अंधेरे में ठिठुर रहा था एक बूढ़ा
जिसके पास नहीं था खाने को एक भी दाना
चौकीदार की चीख पर
वह होंठों ही होंठों में बुदबुदाया – सब कुछ ठीक है
सुनसान सड़क नापते हुए गुजर रहा था चौकीदार
मौन में डूबे एक घर के सामने से
जहां एक बच्चे की मौत हुई थी
खिड़की के कांच के पीछे झिलमिला रही थी एक पिघलती मोमबत्ती
और चौकीदार ने चीख कर कहा था – सब कुछ ठीक है
चौकीदार ने बितायी अपनी रात
इसी तरह
धीमे और सधे कदमों से चलते हुए
तंग-संकरी गलियों को सुनाते हुए
सब कुछ ठीक है!
सब कुछ ठीक है!!

मुख्य संपादक
बलबीर लौंगोवाल
balbirlongowal1966@gmail.com
98153 17028
संपादक
प्रा बलवंत सिंह
tarksheeleditor@gmail.com
94163 24802
संपादकी मंडल
अजायब जलालाना (94167 24331)
कृष्ण कायत (98961 05643)

विदेशी प्रतिनिद्धि
अवतार बाई कनेडा
प्रधान TRSC (+1-672-558-5757)
अछर सिंह खरलवीर कवैंटरी (इंगलैंड)
(+44-748-635-1185)
मा. भजन सिंह कनेडा, बलदेव रहिपा टोरांटो

पत्रिका शुल्क :-
वार्षिक : 150/- रू.
विदेश : वार्षिक : 40 यू.एस.डॉलर
रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:
मुख्य कार्यालय
तर्कशील भवन, संघेडा बाईपास
तर्कशील चौंक, बरनाला-148101
01679-241466, 98769 53561
tarkshiloffice@gmail.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:
www.tarksheel.org
Tarksheel Mobile App :
Readwhere.com

प्रा. बलवंत सिंह, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक, मकान न. 1062, आदर्श नगर, पिपली, जिला कुरूक्षेत्र-136131 (हरियाणा) द्वारा अप्पू आर्ट प्रैस, शाहकोट से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क
पंजाब नैशनल बैंक में
तर्कशील सोसायटी पंजाब (रजि.) के नाम से
खाता सं. 0044000100282234
IFSC: PUNB0004400 में जमा करा सकते है।
एंव पत्रिका भेजने के लिए एड्रेस व शुल्क की स्क्रीन शॉट/रसीद मोबाइल नम्बर
+91 98156 70725 पर वट्सएप कर दें।

इस अंक में

आनलाईन पत्रिका को पढ़ने के लिए:
www.tarksheel.org,
http://tarksheelblog.wordpress.com

Tarksheel on Mobile App:
Readwhere.com

संपादकीय

अपने साथ हुए यौन-शोषण के खिलाफ लगातार संघर्ष कर रही पहलवान लड़कियों के संघर्ष पर सरकार द्वारा किये गए अत्याचार ने 'विश्वगुरू' भारत को पूरी दुनिया में नंगा कर दिया है। ''इंडियन एक्सप्रेस'' द्वारा अपनी एक रिपोर्ट में महिला पहलवानों के द्वारा दर्ज करवाई गई एफ.आई.आर. का ब्यौरा प्रकाशित कर के बृजभूषण सिंह की करतूतों को जग जाहिर कर दिया गया है। दो एफ.आई.आर., एक 6 बालिग पहलवान लड़कियों तथा दूसरी एक नाबालिग के पिता के द्वारा दर्ज करवाई गई हैं। इन में लगाये गये गंभीर दोष-मदद के बदले में शारीरिक संबंध बनाने की मांग के दो केस, अनुचित ढंग से छूने, छेड़-छाड़ करने, छाती पर हाथ रखने, नाभि को छूने और नितम्बों पर हाथ फेरने इत्यादि की 15 घटनाएं-जिनसे मानवता शर्मसार हो जाती है। भाजपा के 'सांसद' और भारतीय कुश्ती संघ के इस 'अध्यक्ष' के गुनाहों का काला चिठ्ठा जनता की कचहरी में पूरी तरह से बेपर्दा हो जाने पर भी इस मामले पर 'अवतार' के रूप में प्रचारित किये जाने वाले प्रधानमंत्री की चुप्पी, सरकार द्वारा आरोपी को बचाने के लिए प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष ढंग से किये जा रहे प्रयत्न, गोदी मीडिया का कु-प्रचार, पीड़ितों को धमकियां तथा उन पर हर प्रकार से बनाया जा रहा मानसिक दबाव, साधु-संतों का आश्रय, संघर्षशील पहलवानों एवं उनके समर्थकों पर बरसाई गई लाठियां, पीडितों की गिरफ्तारियां, सरकारी कार्य में बाधा डालने के पहलवानों पर बनाए गए आपराधिक कार्यवाही करने के केस आदि सरकार तथा वह विचारधारा जो इस को पोषित करती है,पर गंभीर सवाल खड़े करते है। जनवरी 2023 से शुरू हुआ यह न्याय, मान-सम्मान को पाने का संघर्ष भिन्न-भिन्न रूपों-जांच कमेटी की रिपोर्ट, सुप्रीम कोर्ट तक पहुँच, जंतर-मंतर पर धरना, अपने मेडलों को गंगा में प्रवाहित करने के लिए हरिद्वार में पहुँचना इत्यादि में से गुजरते हुए इस पड़ाव तक पहुँचा है। पुलिस द्वारा पाक्सो एक्ट को लगाए बगैर ही आरोपी के खिलाफ़ अदालत में चार्जशीट दाखिल कर दी गई है। विनेश फौगाट, साक्षी मलिक, बजरंग पूनिया आदि के नेतृत्व वाले इस संघर्ष को देश के लोगों ने पूर्ण समर्थन प्रदान किया है। देश के अलग-अलग क्षेत्रों में न्याय के इस संघर्ष के समर्थन में लाखों की संख्या में मांग-पत्र दिये गये हैं, पुतला-दहन प्रदर्शन, धरना-प्रदर्शन किये गये, लाखों की संख्या में लोग जंतर-मंतर पर धरना-प्रदर्शन में जा कर शामिल हुए हैं, इस सभी के बावजूद सरकार द्वारा सभी को कुछ भी न समझना भारतीय लोकतन्त्र पर गंभीर सवाल खड़े करता है? कहां पर है लोकतन्त्र? यह सरकार किस हद तक असंवेदनशील, महिला विरोधी, एवं कानून विरोधी है? बृजभूषण ने देश के वर्तमान के साथ ही नहीं, भविष्य के साथ भी अपराध किया है। आने वाले समय में लोग इस क्षेत्र में अपनी लड़कियों को भेजने से कतराएंगे। साधू-संतों का इस अपराध के पक्ष में बोलना लोगों की धार्मिक आस्थाओं पर भी गंभीर सवाल खड़ा करता है? क्या धर्म का यही संदेश है? क्या ऐसे साधू-सन्यासियों के पास जाना महिलाओं के लिए सुरक्षित होगा? एक तरफ नये बनाये गये संसद भवन का उद्घाटन, दूसरी तरफ अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने वालों पर लाठियां। नंग-धड़ंग साधू संसद के भीतर, महिलाएं इस संसद भवन से बाहर। वैसे भी आम लोग इस सब कुछ से बाहर, हाशिए से बाहर धकेले हुए है। कहां है 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' का नारा देने वाले? बेटियां पूछ रही है? शर्म करो। मौजूदा भारतीय शासक जिस पुस्तक 'मनु-स्मृति' को अपना संविधान मानते है, वह महिलाओं को नागरिक ही नहीं मानती। औरत को एक उपभोग की वस्तु, पुरूषों की सेवादार, वंश चलाने वाली अर्थात् बच्चे पैदा करने वाली मशीन मानती है। इस लिए यह लड़ाई सिर्फ कानूनी/न्याय की प्रप्ति की नहीं, बल्कि विचारधारक-राजनीतिक एवं सामाजिक भी है। महिलाओं को ऐसी धक्काशाही के खिलाफ मैदान में उतरना ही पड़ेगा, कोई दैवीय शक्ति उमकी रक्षा नहीं करेगी, उनको स्वयं ही एक शस्त्र बनना पड़ेगा। विनेश फौगाट द्वारा सोशल मीडिया पर पुष्यमित्र उपाध्याय की शेयर की गई कविता 'सुनो द्रौपदी शस्त्र उठा लो, अब गोविंद ना आएंगे, छोड़ो मेहंदी, खड़ग संभालो, खुद ही अपना चीर बचा लो..' अपने मनों में बसानी पड़ेगी। यह संघर्ष अभी खत्म नहीं हुआ, न ही खत्म होगा। संघर्ष जारी है और जारी रहेगा।

केस रिपोर्ट

अंधश्रद्धा जब मुसीबत बनी

बलवन्त सिंह लेक्चरार

गुरजीत बचपन से ही अत्यधिक धार्मिक प्रवृति की थी। बचपन में वह अपनी मां के साथ बहुत चाव के साथ धार्मिक उत्सवों पर जाया करती थी। शादी के बाद अपने ससुराल में भी उसे वैसा ही धार्मिक माहौल मिल गया था। उसके ससुराल वाले उनके एक पड़ोसी गांव में एक सन्यासिनी बनी 'देवी जी' के श्रद्धालु थे। गुरजीत भी अपने पति और अपनी सास के साथ सप्ताह में एक दिन उस 'देवी जी' के सत्संग में पूरे सेवा भाव के साथ जाने लग गई थी। वह अत्यधिक संवेदनशील स्वभाव वाली महिला थी तथा सेवा-भाव उसमें कूट-कूट कर भरा हुआ था। वह अपने सास-ससुर एवं पतिदेव की सेवा करना अपना अहोभाग्य समझती थी।

इसी दौरान शादी के लगभग दो साल बाद उनकें घर में एक पुत्र ने जन्म ले लिया । अपने पुत्र की प्राप्ति को वह उस 'देवी जी' का आशीर्वाद ही मानती थी। फिर कुछ समय के पश्चात् उसके देवर की भी शादी हो गई। कुछ समय तक तों उसके अपनी देवरानी के साथ बहुत मधुर संबन्ध बने रहे परन्तु धीरे-धीरे उन दोनों में तकरार बढ़ता चला गया। गुरजीत को किसी तरीके से पता चल गया कि उसकी देवरानी बाबाओं की चौकियों पर भी जाती है। गुरजीत अत्यंत श्रद्धालु तो थी परन्तु वह बाबाओं की चौकियों पर नहीं जाती थी। चौकियां लगाने वाले बाबाओं एवं तांत्रिकों के बारे में उसकी धारणा थी कि ये बाबा एवं तांत्रिक साधारण लोगों को मूर्ख बनाते तथा उन का शोषण करते हैं। जब उसे अपनी देवरानी के बाबाओं की चौकियों पर जाने के बारे में पता चल गया तो उसके मन में अपना देवरानी के प्रति कई प्रकार की शंकाएं उतपन्न होना शुरू हो गई। देवरानी का स्वभाव शुरू से ही अपने ससुराल वालों के प्रति नकारात्मक प्रकार का था। कुछ समय के पश्चात् उसकी देवरानी के घर में एक पुत्री ने जन्म ले लिया। इससे उसकी देवरानी के मन में गुरजीत के प्रति कड़वाहट और अधिक बढ़ गई । इस सब के बावजूद गुरजीत अपनी सास-ससुर की सेवा पूरी तनदेही से निभाती चली आ रही थी। सास-ससुर जब गुरजीत के सेवाभाव की प्रशंसा करते तो उसकी देवरानी पूरी तरह से जल-भुन जाती और बात-बात पर गुरजीत से झगड़ा करना शुरू कर देती।

अंत में तंग आकर उनके सास-ससुर ने घर का बंटवारा कर के दोनों भाईयों को अलग-अलग करने में ही भलाई समझी। बंटवारे में छोटे भाई को नये बनाए गए मकान दे दिये गए तथा गुरजीत व उसका पति जगजीत पुराने मकानों में ही अपने माता-पिता के साथ रहने लग गये। गुरजीत अपनी सास के साथ अथवा अपने पति के साथ 'देवी जी' के सत्संग में नियमित तौर पर जाती रही। समय बीतता चला गया और उनका पुत्र भी बड़ा होता चला गया। उसकी देवरानी अब भी बाबाओं की चौकियों पर अपना माथा रगड़ती रही। वैसे तो वह दोनों भाई अलग-अलग हो गये थे परन्तु दोनों परिवारों का एक-दूसरे के घर में आना-जाना तथा अपसी लेन-देन अब भी जारी ही रहा। दोनों ही परिवार किसी भी धार्मिक स्थल से लाया गया प्रसाद बगैरह एक-दूसरे के घर में भी बांट दिया करते थे। गुरजीत हमेशा अपनी देवरानी द्वारा किसी मंदिर व गुरूद्वारे से लाया गया प्रसाद तो खुशी से ले कर खा लिया करती थी परन्तु जब उसे पता चलता कि उसकी देवरानी किसी बाबा की चौकी से प्रसाद लेकर आई है तो वह उसे लेकर रख लिया करती और फिर आंख बचा कर उसे बाहर फैंक दिया करती थी।

एक दिन गुरजीत अपने घर की छत पर हवा में अनाज की सफाई कर रही थी। उसी समय उसकी सास ने ऊपर आ कर उसे थोडा सा प्रसाद दे दिया, उसने वह प्रसाद उसी समय खा लिया। थोड़ी देर बाद उस का पति अनाज संभालने में उसका सहयोग करने के लिए छत पर आया। अपने पति से गुरजीत को जब यह पता चला कि वह प्रसाद तो देवरानी ने सास को दिया था और संयोगवश वह दिन भी वही था जिस दिन उसकी देवरानी बाबाओं की चौकी पर जाया करती है। यह सुनते ही गुरजीत को चक्कर आने लग गये। वह अत्यधिक घबरा गई। अपने पति द्वारा भाग कर पकड़ने से पहले ही वह छत से नीचे गिर गई। उसकी टांग व बाजू की हड्डियां टूट गई। फिर कई दिन तक अस्पताल मे

दाखिल रही और फिर घर आकर महीनों तक बिस्तर पर पडी रही। ठीक हो कर वह अपने मायके में कुछ दिन के लिए चली गई। अपने मायके में एक दिन वह कुर्सी पर बैठने लगी तो कुर्सी के चार टुकड़े हो गये। फिर उसे दौरे भी पड़ने शुरू हो गये।

अपने घर में वापिस आने के बाद उसकी हालत और अधिक बिगड़ती चली गई। उसे अत्यधिक क्रोध आना शुरू हो गया। हर समय उसका शरीर टूटता रहता और वह निढाल हो कर चारपाई पर पड़ी रहती। अपने पति पर उसे बहुत अधिक गुस्सा आता रहता था। अपने पति से उसकी विरक्ति इतनी बढ़ चली थी कि उसे खाना अथवा चाय देते समय पर भी वह एकदम से घबरा जाती। अपने पति से बातचीत करने से भी बचने की कोशिश करती थी। घर में कोई मेहमान आ जाएं तो वह पूरी तरह से प्रसन्न हो जाती। घर में चाहे दस मेहमान भी आ जाएं,खास तौर पर उसके मायके के पक्ष के,तो वह पूरी लगन के साथ उनकी टहल-सेवा करती परन्तु अपने पति के साथ बात करने से भी वह कतराने लग गई थी। कई बार उसके कपड़े भी कई जगह से अपने आप ही कट जाते। उसके कई नये-नये सूट भी अल्मारी में रखे हुए ही अपने आप कट गये। लगभग उसके सभी अच्छे और महंगे सूट ही अपने आप कट गये थे।

वह 'देवी जी' की पक्की श्रद्धालु तो थी ही, अत: परिवार वाले उस 'देवी जी' के पास ही फरियाद लेकर जाते रहे। 'देवी जी' ने उनको सिमरन करनी वाली माला दे कर प्रभु का ध्यान करने का उपदेश दे दिया। परन्तु माला फेर-फेर कर प्रभु का ध्यान लगाने से गुरजीत की हालत और भी अधिक खराब होती चली गई। परेशान हो कर परिवार वाले गुरजीत को लेकर बाबाओं की शरण में जाने के लिए भी मजबूर हो गये। फिर एक के बाद एक वे अनेक बाबाओं,तान्त्रिकों एवं मुल्ला-मौलवियों के पास जाते रहे परन्तु गुरजीत की हालत और अधिक खराब होती चली जा रही थी। अन्त में उनके एक परिचित ने गुरजीत की ऐसी हालत देख कर उन्हें मेरा पता दे कर मेरे पास परामर्श केन्द्र में भेज दिया। मैंने गुरजीत एवं उसके पति जगजीत से बारी-बारी से बातचीत करके उनकी समस्या के मर्म को पहचान लिया तथा मनोवैज्ञानिक काउंसलिंग के द्वारा गुरजीत का मनोविश्लेषण करके उसके अवचेतन मन में सार्थक सुझाव देने की कोशिश की। इन मनोवैज्ञानिक सुझावों का गुरजीत पर अत्यधिक सार्थक प्रभाव पड़ा। जब उसे सम्मोहक नींद से उठाया गया तो वह बेहद प्रसन्न दिखाई दे रही थी। उसके बाद उसे चार-पांच बार परामर्श केन्द्र में बुलाकर उसकी मनोवैज्ञानिक तौर पर काउंसलिंग की। उसके बाद उसे किसी प्रकार की कोई भी परेशानी नहीं हुई।

कारण: गुरजीत बचपन से ही एक धार्मिक प्रवृति की तथा अत्यंत संवेदनशील स्वभाव वाली महिला थी। उस के ससुराल वाले 'देवी' जी के श्रद्धालु थे। अत: वह भी उस 'देवी जी' की पक्की श्रद्धालु बन गई। हर सप्ताह होने वाले सत्संग में 'देवी जी के प्रवचनों को ध्यानपूर्वक सुनने के पश्चात वह काफी समय तक 'देवी जी' के सान्निध्य में बैठ कर उस से बातचीत तथा उस की सेवा टहल करती रहती थी। लम्बे समय तक देवी जी के प्रवचनों को सुन-सुन कर उस की श्रद्धा अंध श्रद्धा में बदल चुकी थी। क्योंकि 'देवी जी' ने खुद शादी न करके सन्यास धारण किया हुआ था, अत: वह अपने पास आई हुई अपनी अनुयायी महिलाओं के सामने गृहस्थ जीवन को बेहद निकृष्ट रूप में प्रस्तुत किया करती थी। 'देवी जी' के उपदेशों के प्रभाव में गुरजीत भी अपने गृहस्थ जीवन से पूर्णत: उदासीन होती चली जा रही थी।

दूसरी तरफ उसकी देवरानी का व्यवहार उसे अत्यधिक मानसिक कष्ट पहुँचाता था। उस की देवरानी बात-बात पर उस पर कटाक्ष कर दिया करती थी। देवरानी की कटाक्षपूर्ण बातें गुरजीत के संवेदनशील मन को अत्यंत गहरा आघात पहुंचा दिया करती थी। यद्यपि गुरजीत स्वयं अंधश्रद्धा में डूबी हुई थी परन्तु वह अपनी देवरानी को ही अंध श्रदालु समझती थी। तार्किक दृष्टिकोण न होने के कारण अपनी देवरानी द्वारा बाबाओं की चौकियों से लाया गया प्रसाद उसे अपने ऊपर किसी अनिष्ट की छाया महसूस होता था। इसी कारण जब छत पर काम करते हुए अपनी सास द्वारा दिया गया प्रसाद खा लेने के पश्चात जब अपने पति द्वारा यह पता चला कि वह प्रसाद तो उसकी देवरानी किसी बाबा की चौकी से लेकर आई है तो वह एकदम से घबरा गई। उसी घबराहट में वह निढाल हो गई और एकदम से छत पर से नीचे गिर गई जिस से उसे बहुत सी चोटें भी आ गईं। बाद में जब वह अपने मायके परिवार को मिलने के लिए वहां गई हुई थी तब एक दिन वह बेध्यानी में प्लास्टिक की कुर्सी पर बैठने लगी तो एकदम फिसलने से और संतुलन बिगड़ जाने से कुर्सी टूट गई। ***शेष पृष्ठ 27 पर***

क्या भूतप्रेतों का अस्तित्व है?

गंगा सहाय

भारत के ही नहीं, संसार के सभी देशों के लोग भूतप्रेतों के नाम से अपरिचित नहीं है, उन की सत्ता में विश्वास करते हों या नहीं, यह एक दूसरा प्रश्न है, ऐसा लगता है कि सभ्यता के विकास के प्रारंभिक युगों में प्रत्येक जाति कुछ अमानवीय तत्वों की कल्पना करती थी। ये तत्व सौम्य, क्रूर अथवा दोनों ही गुणों से युक्त हो सकते थे। यहीं कारण है कि आज पिछड़ी एवं अविकसित जातियों में भूतप्रेतों की उपासना, मान्यता एवं भय की भावना जितनी प्रबल है, उतनी सभ्य देश के लोगों में नहीं मिलेगी।

इस दृष्टि से यदि भारतवासियों को देखें तो यहां के भी अधिकांश निवासी इस भावना के शिकार मिलेंगे। आदिवासी, अविकसित अथवा अनपढ़ लोग तो इन्हें मानते पूजते ही हैं, सनातन धर्म पर विश्वास रखने वाले व पढ़े-लिखे लोग भी इस श्रेणी में आते हैं। उन लोगों की इस मान्यता का मुख्य कारण धर्म ग्रंथ हैं। सनातन धर्मी जनता में प्रचलित धर्म ग्रंथ भूतप्रेतों के अस्तित्व का समर्थन करते हैं और यह कह कर जनता को इन की पूजा के लिए उकसाते हैं कि यह पूजा भी अंत में भगवान के पास ही पहुंचती है।

यदि शास्त्रीय दृष्टि से भी विचार किया जाए तो भूतप्रेत आदि की सत्ता किसी प्रकार भी सिद्ध नहीं की जा सकती। आत्मा की सिद्धि विवाद का विषय है। यदि उस का होना मान लिया जाए और उस की विशेषताएं स्वीकार कर ली जाएं तब भी भूतप्रेतों की कल्पना हास्यास्पद ही जान पड़ेगी।

भूत और प्रेत शब्द प्राय: मरे हुए लोगों की आत्मा के लिए प्रयोग किए जाते हैं। देहातों या अनपढ़ लोगों में भूत शब्द ही अधिक प्रचलित है। इन भूतों की भी स्थानस्थान पर अनेक जातियां मानी जाती हैं। लोगों का विश्वास है कि पुरुष मर कर भूत आदि बनते हैं और स्त्रियां मर कर चुड़ैलों में बदल जाती हैं। हिंदू भूत समूह के लिए 'भूतावली' और मुसलमान भूतों के लिए 'पीराना' शब्द का प्रयोग होता है।

लिंग, रंग जाति आदि शरीर से संबंधित होते हैं, आत्मा से नहीं। अत: भूतप्रेत संबंधी मान्यता शास्त्रीय आधार पर खरी नहीं उतरती। कुछ लोगों को भूतप्रेत साक्षात दिखाई देते हैं। यह और कुछ नहीं मन का भ्रम अथवा विश्वास है।

कुछ लोगों की मान्यता है कि भूतप्रेत आदि तमोगुणी होते हैं। वे बिना पूजा के किसी का भला करना तो दूर रहा, भारी पूजा ले कर भी कोई भलाई का काम नहीं करते। हां, जो उन की पूजा करते हैं, उन को सताते नहीं। यदि यह कहा जाए कि भूतप्रेत अपनी पूजा लेने के लिए ही लोगों को सताते हैं तो अधिक ठीक रहेगा। पूजा लेने, कष्ट देने तथा समाप्त करने की बात वास्तव में कुछ लोगों का स्वार्थपूर्ण दिखावा तथा अपने ही मन का भ्रम है।

कुछ लोग भूतप्रेतों को निराकार योनि का मानते हैं। आत्माएं अपने कर्मानुसार उन में जाती हैं। इस के उत्तर में यही कहना है कि एक तो निराकार योनि की बात कुछ जंचती नहीं और जब यह योनि आकारहीन है तो कौन सा जादू आत्मा को सात्त्विक से तामसिक बना देता है। यदि इसे आत्मा का दूसरा जन्म मान भी लें तो फिर उस के लिए अमुक व्यक्ति का भूत अथवा अमुक व्यक्ति भूत हो गया है, कुछ विचित्र सा लगता है। दिलचस्प बात यह है कि उन्हीं लोगों के घर वाले भूत बनते हैं जो भूतों को मानते और पूजते हैं। ये भूत अपने गांव छोड़ कर नहीं जाते।

कुछ लोग कह सकते हैं कि शास्त्र चाहे तो मान्यताएं रखते हों पर जिन लोगों ने भूत को प्रत्यक्ष देखा है अथवा जिन्होंने भूत के क्रोध से दुख और कृपा से सुख भोगा है, वे उन की सत्ता क्यों न मानें। इसी आधार पर दूसरे भूतप्रेतों को मान सकते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि हम मुंबई का होना तब तक न मानें जब तक कि उसे स्वयं न देख लें।

लगभग सभी लोगों ने अपने पड़ोस, महल्ले या गांव में भूतबाधा द्वारा लोगों के पीड़ित होने की बात देखी या सुनी होगी। मेरे समीप इस प्रकार की जो घटनाएं हुई हैं, उन का विवरण भी दिलचस्प है।

मेरे गांव में एक वैश्य परिवार है, संपन्न और प्रतिष्ठित। उन के घर में प्रतिदिन कोई न कोई सदस्य भूतबाधा से पीड़ित होता रहता था। कई वर्ष पहले उन में से एक व्यक्ति आर्यसमाजी हो गया। तभी से भूतप्रेत उस घर से ऐसे भाग गए मानो थे ही नहीं।

मेरे पिता जी बताया करते थे कि हमारे परिवार के एक सज्जन को जस (देवी, भूतों आदि की देहाती स्तुतियां) गाने का चाव था। अन्य प्रेतभक्तों की देखादेखी उन्होंने दरवाजे के पास खड़े पेड़ पर लाल ध्वजा फहरा दी और नीचे एक थान बना दिया।

थोड़े दिनों में घर के अधिकांश सदस्यों के सिर भूत आने लगे। पिता जी परेशान हो कर भूतों के एक प्रसिद्ध पुजारी को लाए जो देहात में स्याना, ओझा या भगत कहलाता है। उस ने डट कर भोजन किया और लाल ध्वजा वाले वृक्ष के नीचे सो गया। सुबह वह यह कह कर चला गया कि यह काम मेरी शक्ति से बाहर है। भूतों ने रात को मुझे खूब मारा है और मेरा सारा शरीर दुख रहा है।

उस के चले जाने पर पिता जी को जाने क्या सूझा कि उन्होंने ध्वजा तोड़ कर फेंक दी और थान खोद डाला। जस गाना भी बंद करवा दिया। उस दिन से घर में किसी के सिर भूत नहीं आया।

मेरे मामा पिता जी के ही पास रहते थे। वह प्रेतविद्या सीख रहे थे। नई भैंस ब्याने पर उन्होंने अपने देवता की पूजा चाही। पूजा नहीं की गई तो प्रतिदिन शाम को दूध फटने लगा। पिता जी परेशान थे कि अगर भैंस बीमार है तो सुबह का दूध क्यों नहीं फटता?

एक दिन पिता जी ने मामा को दूध में नमक डालते देख लिया, तब से दूध फटना बंद हो गया। बात यह थी कि मामा तड़के ही हल ले कर चले जाते थे, इसलिए सुबह दूध में नमक नहीं डाल पाते थे।

मेरे घर के पास रहने वाले एक धोबी की दो जवान लड़कियां एक विचित्र रोग से पीड़ित थीं। जब तक वे अपने पीहर में रहतीं, तब तक कोई बात नहीं होती थी। ससुराल जाते ही उन्हें भूत इतना सताते कि तीसरे चौथे दिन ही उन्हें पीहर लौटा दिया जाता।

उन के घर में एक प्रेत विशेषज्ञ आता था जो आकर्षक था। उस की झाड़फूंक से वे लड़कियां तुरंत ठीक हो जाती थीं। दोनों लड़कियां असाधारण रूपवती थीं। जब उन लड़कियों के दो तीन बच्चे हो गए तो भूतप्रेतों की छाया भी उन पर से हट गई। अब वे लड़कियां वर्षों पीहर नहीं आतीं।

मेरे गाव में एक सज्जन हैं। उन का दावा था कि उन्हें एक चुड़ैल सिद्ध है। जो भी चाहे प्रसाद के ढाई आने दे कर चुड़ैल के दर्शन कर सकता है। उसे एक निश्चित बाग, जिसे गांव के लोग बड़ा बाग कहते हैं, के बीच में स्थित पीपल के पेड़ के नीचे सोना पड़ेगा। वह गांव के कई ऐसे पुरुषों को उस के दर्शन करा चुके थे जो भूतों का अस्तित्व नहीं मानते थे। यह एक ऐसा प्रत्यक्ष प्रमाण था जिस के आगे लोग कोई तर्क मानने के लिए राजी नहीं थे।

मैंने स्वयं ढाई आने दे कर चुड़ैल को देखना चाहा। वह सज्जन मुस्करा कर बोले, ''तुम्हारे पिता जी तुम्हें वहां सोने कैसे देंगे? कहीं डरडरा गए तो वह मेरे सिर पड़ेंगे। ऐसे झगड़ालू से कौन सुलझेगा?''

रात को मैं उसी पीपल के नीचे सोया। रात में कई बार उठ कर देखा पर कोई कहीं नहीं दिखाई दिया। पीपल के पत्ते अवश्य फड़फड़ा रहे थे। सवेरे मैं ने उन को यह बताया तो वह ढाई आने लौटाते हुए बोले, "तुम पढ़लिख कर नास्तिक बन गए हो, इसलिए वह तुम्हारे सामने नहीं आना चाहती।"

स्पष्ट है कि चुड़ैल को देखने वाले अपने मन के भय से ही डर गए थे। सुनसान रात, एकांत बाग और पीपल के पेड़, पत्तों की खड़खड़ाहट ही भयभीत करने के लिए काफी थी।

लोगों में यह विश्वास है कि कब्रिस्तान और मरघट भूतप्रेतों के क्रीड़ास्थल हैं। कभी-कभी वहां भूत एकत्र हो कर गाते, नाचते और जुलूस निकालते हैं। इस अंधविश्वास का लाभ उठा कर बहुत से चोर खेतों में रखवालों को डरा देते हैं।

लगभग बारह वर्ष पहले की बात है। मैं दबथरा, बदायूं की संस्कृत पाठशाला में ठहरा था। वहां के प्रधानाध्यापक मेरे एक सहपाठी के भाई थे। अत: वह स्थान मेरे घर जैसा था। अषाढ़ का महीना था। रात के बारह बजे के लगभग कुछ लोगों ने उन से दियासलाई मांगी। कारण पूछने पर कहा कि वे लोग एक रखवाले को डरा कर उस के खेत के तरबूज खाएंगे। मुझे उन लोगों ने सोता हुआ समझा था पर मैं जाग रहा था।

सवेरे आठ बजते बजते सुनने में आया कि एक रखवाला रात में भूतों को देख कर डर गया और उस की हालत खराब है। हम उस के घर गए तो उसे तेज बुखार में पड़ा पाया। रात उस ने देखा था चार पांच पेड़ों पर भूतों ने मशालें जलाईं और वे नाचते कूदते एक जगह मिल गए।

जब वे उस के खेत की ओर आने लगे तो वह भाग आया। हम ने उसे असली बात बता दी। वास्तविकता जानते ही उस का बुखार उतर गया और व भलाचंगा हो गया। उस ने खेत में जा कर देखा, अधिकांश तरबूज तोड़ लिए गए थे।

भूत बन कर लोगों को डराने के संबंध में मेरे एक मित्र ने एक बड़ी करुण घटना सुनाई थी जो बदायूं के पास गंगा तट पर बसे कछला गांव में घटी थी। एक दिन कई मुरदे बह कर आए और एक घाट के किनारे अटक गए। भूतप्रेतों के होने और उन से डरने के संबंध में बात चलते चलते यहां तक आई कि कोई अकेला जा कर मुरदे के हाथ में काला डोरा बांध आए। एक युवक तैयार हुआ। दूसरे ने उसे उक्त कार्य करने में असमर्थ बताया। दोनों में सौ सौ रुपए की शर्त लग गई।

युवक भाला ले कर श्मशान की ओर चल पड़ा। विरोध में शर्त लगाने वाला भी चुपचाप वहां से चल दिया और दूसरे मार्ग से तेज दौड़ कर मुरदों के बीच में जा लेटा। युवक ने घाट के पास जा कर भाला गाड़ दिया और एक मुरदे के हाथ में डोरा बांधने के लिए झुका, तभी मुरदों के बीच लेटा वह व्यक्ति खड़ा हो गया और मिनमिना कर नाक के स्वर में कहने लगा, ''भैया, पैंलें मेंरें डोंरां बांधिंयों।'' इतना सुनना था कि युवक भयभीत हो कर भागा। भाला वहीं छूट गया। वह कई जगह गिरा और अंत में बेहोश हो गया।

मुरदों के बीच लेट कर डराने वाला व्यक्ति फिर चुपचाप लोगों में आ बैठा। युवक बहुत देर तक नहीं लौटा तो लोग उसे देखने निकले। रास्ते में उसे बेहोश पा कर एक व्यक्ति ने शर्त लगाने वाले का चुपचाप जाना और आना बता दिया, क्योंकि वह उसे देखता रहा था। लोगों के धमकाने पर उस ने सारी बात बताई। होश आने पर युवक को वास्तविकता बताई गई पर वह इतना डर गया था कि बच नहीं सका।

यहां यह जान लेना आवश्यक है कि लोगों में भूतों के मिनमिना कर नाक के स्वर में बोलने की धारणा घर किए हुए है।

मुंबई में एक बंगले के विषय में भुतहा होने की प्रसिद्धि थी। बंगला बहुत सुंदर एवं सस्ते किराए का था, पर कुछ एकांत में था। अगर कोई साहस कर के उस में रहता भी तो दो चार दिन बाद उसे छोड़ देता। इन घटनाओं से उस के भुतहे होने की धारणा और भी बढ़ती रही।

भूतप्रेतों में विश्वास न करने वाला एक अंगरेज उस में रहने के लिए तैयार हुआ। उस के साथ परिवार नहीं था। नौकर दिन भर काम कर के रात को चले जाते थे। रात में वहां रहने के लिए कोई भी तैयार नहीं हुआ। अंगरेज दिन में सो लेता था और रात भर बैठ कर जागता था। भरे हुए रिवाल्वर, बंदूक तथा नंगी तलवार उस के पास रहती थीं।

दो दिन आराम से बीत गए, तीसरे दिन उसे आधी रात के समय बाहर विचित्र प्रकार की आवाजें सुनाई दीं। वह संभल कर बैठ गया। थोड़ी देर बाद एक कटा हुआ हाथ आंगन में गिरा। फिर थोड़े-थोड़े अंतर से किसी व्यक्ति के सभी अंग गिरे पर वह भयभीत नहीं हुआ।

इस के लगभग घंटे भर बाद काले कपड़े पहने एक असाधारण कद का लंबा व्यक्ति छत पर से सीढ़ियां उतर कर आंगन में आया। अंगरेज इस अमानवीय तत्व से कुछ विचलित हुआ और बंदूक चला दी। अंगरेज के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब गोलियों का उस पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। उस ने रिवाल्वर भी खाली कर दिया। पर व्यर्थ रहा, अब उसे अपनी मृत्यु निश्चित जान पड़ी। उस ने मरने से पहले कुछ कर गुजरना ही उचित समझा। वह तुरंत तलवार ले कर झपटा, वह उस अमानवीय तत्व से थोड़ी ही दूर था कि वह आकृति हाथ जोड़ कर क्षमा मांगती हुई बोली कि वह मनुष्य है।

अंगरेज ने उस आकृति को पकड़ कर सारी बातें पूछीं तो उस ने बताया कि वे लोग वहां नकली नोट बनाने का काम करते हैं और बंगला खाली रखने के लिए इस को भुतहा बनाए हुए हैं। उस के असाधारण लंबे होने का रहस्य यह था कि उस ने पैरों में बांस बांध रखे थे। उस व्यक्ति ने यह भी बताया कि उन्होंने काफी लालच दे कर नौकरों द्वारा असली कारतूस आवाज वाले कारतूसों से बदलवा दिए थे, जिस से गोलियां व्यर्थ गईं।

एसे उदाहरणों की कमी नहीं है जहां भूतप्रेतों के विश्वास निराधार सिद्ध होते हैं। आप के निजी जीवन में न सही, आप के आसपास ऐसे अनेक उदाहरण बिखरे होंगे, अधिकांश लोग या तो इन मामलों से डरते हैं या इन्हें उदासीनता की दृष्टि से देखते हैं। आप कहेंगे कि भूतों के कुछ उदाहरण कल्पित हो सकते हैं पर भूतप्रेतों द्वारा बहुत से लोगों को कष्ट मिलता तथा उन के प्रसन्न होने से लाभ होता है।

इस प्रकार की शंकाओं पर यदि थोड़ा भी ध्यान दिया जाए तो ये निराधार प्रतीत होंगी। किसी व्यक्ति के भूत द्वारा पीड़ित होने का क्या प्रमाण है? भूतप्रेतों में विश्वास करने वाले लोग अपने कष्टों का कारण भूतबाधा मान लेते हैं। विचित्र बात यह भी है कि ओझा को कोई भी रोगी दिखाया जाए वह उस के रोग का कारण भूतबाधा ही बताएगा।

एक बात यह भी है कि कभी दो ओझा इस विषय में एकमत नहीं होते। कोई एक प्रकार का भूत बताता है तो दूसरा अन्य प्रकार का। भूतबाधा के चक्कर में ही बहुत से लोगों का रोग असाध्य हो जाता है। पिछड़े लोगों में ऐसे बहुत से मिलेंगे जिन की आंखे इसी चक्कर में खराब हो चुकी हैं। जब बेचारे डाक्टर के पास गए तब तक रोग काबू से बाहर हो चुका था।

यही बात रोगियों के स्वस्थ होने के विषय में है। उन्हें भूतबाधा से ठीक किया है, इस का प्रमाण भी सहज ही नहीं दिया जा सकता। कुछ लोग तो अपने आप ही ठीक हो जाते हैं। कुछ में रोगी की मानसिक शक्ति और विश्वास काम करता है। वह समझता है कि उस की ठीक चिकित्सा हो रही है अत: उसे स्वस्थ हो जाना चाहिए।

जिस प्रकार नगरों में फैमिली डाक्टर होते हैं, उसी प्रकार गांवों में परंपरागत स्याने या ओझे होते हैं। बच्चा होते ही उस के गले में ओझे का डोरा बांध दिया जाता है और विश्वास कर लिया जाता है कि बच्चे के सब कष्टों का निवारण होता रहेगा, जिस प्रकार नगरों में रोगी के विषय में "किस का इलाज चल रहा है?" पूछने की परंपरा है, उसी प्रकार गांव वाले पूछते हैं, "बालक पर किस ओझा का डोरा चल रहा है?"

मेरे एक मित्र हैं उन के विवाह को लगभग बीस वर्ष हो गए पर कोई बच्चा नहीं हुआ। अब से लगभग पांच वर्ष पहले उन्होंने डाक्टरों को दिखाया तो पत्नी में कमी निकली। चिकित्सा चलने लगी और कुछ लाभ भी जान पड़ा। तभी उन के मामा आ गए जो भूतविद्या में दिलचस्पी रखते थे। उन्होंने सफलता और आश्वासन का ऐसा जाल बिछाया कि मेरे मित्र ने डाक्टरी चिकित्सा छोड़ कर उन के मंत्रतंत्र शुरू कर दिए।

मैंने बहुत समझाया पर उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। मामा कुछ लेते तो नहीं थे, पर उन की शर्तें विचित्र थीं। घर से बाहर मत जाओ, अगर जाना आवश्यक हो तो किसी को उन के पास भेज कर स्वीकृति मंगाओ। दूसरी शर्त थी कि जहां भी जाओ, अपने घर का बना खाना खाओ। मामा का इलाज चार वर्ष से चल रहा है पर उन की पत्नी की गोद सूनी है। वैसे मामा ने आश्वासन दिया था कि डेढ़ वर्ष में घर बच्चे के रोने से गूंज उठेगा। सुना है, मेरे मित्र महोदय फिर डाक्टरी चिकित्सा शुरू करने वाले हैं।

इतना विवेचन करने के बाद मैं आप से पूछता हूं कि क्या आप भूतप्रेतों में विश्वास करते हैं? यदि हां, तो क्या आप का यह विश्वास उचित है, अंधविश्वास नहीं है?

(स्रोत : पुस्तक "तंत्र मंत्र यंत्र")

संपादक : राकेश नाथ

यह कैसी शिक्षा है?

डॉ. 'हैम गिनोत' अपनी मशहूर पुस्तक 'टीचर ऐंड चाइल्ड' में लिखते हैं–

''मैं यातना कैम्प का भुक्तभोगी हूं।
मेरी आँखों ने वह देखा है जो शायद किसी को नहीं देखना चाहिए।
गैस चैम्बर का निर्माण प्रशिक्षित इंजीनियरों ने किया है।
बच्चों को ज़हर शिक्षित डॉक्टरों द्वारा दिया गया।
नवजात बच्चों को प्रशिक्षित नर्सों ने मारा।
बच्चों, महिलाओं को हाईस्कूल व विश्वविद्यालय में पढ़े लोगों ने गोली मारी।
अब आप ही बताइये यह कैसी शिक्षा है?''

डर

जिसने भी लिखे हैं धर्मग्रंथ
कितना डरा हुआ था वह शख्स
धर्मग्रंथ के पहले पन्ने से आखिरी पन्ने तक
बिल्कुल किसी तानाशाह की तरह
हर वक्त खौफ़ज़दा–शंकाग्रस्त
ईश्वर या खुदा की कुटिया में
आज तक भूमिगत!

कितने डर कर जिए हम भी
उस शख्स से!

–जय पाल

अंधविश्वास के चलते

महिला से दुष्कर्म के दोषी तांत्रिक को 10 साल कैद

-संवाद न्यूज एजेंसी

कुरुक्षेत्र- चार साल पहले महिला के साथ दुष्कर्म करने के आरोपी कथित तांत्रिक को अदालत ने दोषी करार दिया है। अदालत ने दोषी तांत्रिक रामकरण निवासी छोड़पुर को 10 साल कारावास की सजा सुनाई है। अदालत ने दोषी पर 85 हजार रुपए जुर्माना भी लगाया। जुर्माना न भरने की सूरत में दोषी को पांच माह की अतिरिक्त सजा भुगतनी होगी।

जिला उप न्यावादी भूपेंद्र कुमार ने बताया कि पंजाब निवासी महिला ने थाना शाहाबाद में शिकायत दी थी कि उसे पता चला था कि मोहड़ा के पास गांव छोड़पुर में एक तांत्रिक है। यह तांत्रिक पितृ दोष की समस्या का निवारण करता है। वह 4 मार्च 2019 को अपने पति के साथ गांव छोडपुर में गोगामेड़ी पहुंची थी। यहां तांत्रिक रामकरण मिला था। तांत्रिक पूजा करने के बहाने उसे एक कमरे ले गया और उसके साथ दुष्कर्म किया था।

शिकायत पर पुलिस ने आरोपी तांत्रिक के खिलाफ धारा 376 व 506 आईपीसी के तहत मामला दर्ज किया था। महिला पीएसआई सतविंदर कौर ने जांच करते हुए 16 मार्च को आरोपी को गिरफ्तार किया था। मामले को सुनवाई करते हुए अतिरिक्त जिला एवं सेशन न्यायाधीश की अदालत ने गवाहों व सबूतों के आधार पर रामकरण को दोषी करार देते हुए कैद व जुर्माने की सजा सुनाई।

रोहतक में गोरखनाथ मठ के महंत पर दुष्कर्म का केस दर्ज

जागरण संवाददाता

रोहतक: शहर में स्थित गोरखनाथ मठ के महंत पर महिला श्रद्धालू के यौन शोषण और बंधक बनाकर रखने का केस दर्ज हुआ है। इसके महंत बाबा बालकनाथ पर करीब 20 साल से आश्रम में सेवादार के तौर पर काम कर रही महिला ने आरोप लगाए हैं। बाबा बालकनाथ के खिलाफ शहर थाना में केस दर्ज किया गया है।

पुलिस को दी शिकायत में रोहतक के एक एरिया की रहने वाली महिला ने आरोप लगाया कि वो मठ के तहत संचालित गोशाला में सेवादार लगी थी। करीब 20 साल से बाबा बालकनाथ उसका यौन शोषण कर रहा है। मठ छोड़कर जाने पर परिवार को खत्म करने की धमकी देते हैं। पीड़िता ने बाबा बालकनाथ की विशेष सेवादार रानी पर भी गंभीर आरोप लगाए हैं। महिला के अनुसार वो करीब आठ माह पहले मठ से निकलने में कामयाब हो गई थी लेकिन बाबा ने धमकी देकर उसे वापस बुला लिया।

मठ में तहखाना, उसमें कई की आबरू लूटी: पीड़िता ने रोहतक के शहर थाना में जो शिकायत दर्ज कराई है उसके अनुसार मठ में बाबा के कमरे के नीचे एक तहखाना है। बाबा ने उस तहखाने में आश्रम में आने वाली कई महिला श्रद्धालुओं के साथ दुष्कर्म किया है। पीड़िता का कहना है कि उसके परिवार की गुरु गोरखनाथ में आस्था थी। करीब 20 साल पहले पति की शराब की लत छुड़वाने के लिए वो बाबा बालकनाथ के संपर्क में आई थी।

केन्या में अंधविश्वास में पड़कर 200 से अधिक लोगों ने फर्जी पादरी के बहकावे में आकर स्वर्ग जाने, और ईसा मसीह से मिलने के लिए आत्महत्या कर ली।

केन्या में एक फर्जी पादरी फादर पॉल मैकेंजी के बहकावे में आकर ईसाई धर्म के 200 से अधिक अनुयाइयों के अंधविश्वास में पड़कर भूखे रहकर जान देने की ख़बर है। जानकारी है कि टैक्सी ड्राइवर से पादरी बने फादर पॉल मैकेंजी ने अपने गुड न्यूज़ इंटरनेशनल चर्च में आने वाले श्रद्धालुओं को कहा कि यदि वे भूखे रहकर उपवास कर अन्न जल छोड़ देंगे, तो उन्हें स्वर्ग नसीब होगा। उन्हें ईसा मसीह मिल जाएंगे। उन्हें जीसस के दर्शन होगें और वह कथित पादरी लगातार श्रद्धालुओं को निराहार रहने, उपवास के लिए प्रेरित करता रहा, जीसस से मिलने के अंधविश्वास में 200 से अधिकर लोगों ने जान दे दी और कथित पादरी अब पुलिस हिरासत में है। अंधविश्वास में पड़ कर इस प्रकार स्वर्ग जाने के लिए जान देने की घटना अत्यंत दुःखद है। धार्मिक कहलाने वाले ऐसे व्यक्ति कड़ी सजा के हकदार हैं।

-डॉ दिनेश मिश्र

महिला की बलि

यू.पी. के युवक ने कामारव्या में बंगाल की महिला की चढ़वा दी बलि, मंदिर की सीढ़ी पर मिली थी सिर कटी लाश, 4 साल बाद आरोपी को खोज निकाली पुलिस।

अंधविश्वास का जाल

ऋतुपर्ण देव

दुनिया बहुत तेजी से आगे बढ़ रही है, विज्ञान ज्यादा समृद्ध हो गया। कृत्रिम बुद्धिमता ने हर कुछ अपने वश में कर लिया लगता है। घर में तरह-तरह के कामकाज के लिए ऐसे तकनीक छा गए हैं जो बोलते या इशारा करते ही शुरू हो जाते हैं। लेकिन विडंबना यह कि इक्कीसवीं सदी के आधुनिकीकरण के इस दौर में भी अंधविश्वास नए-नए रूप में और ज्यादा फल-फूल रहा है। समृद्ध, विकसित, विकासशील और नित नई वैज्ञानिक उपलब्धियों, धरती तो दूर आसमान में कुलांचे भरती नई दुनिया कब तक ऐसे अंधविश्वासों को ढोएगी? रेखा और बिंदु का फर्क यानी रेखा में लंबाई हो, चौड़ाई न हो और बिंदु में लंबाई-चौड़ाई न हो, अनंत बहस का विषय हो सकता है, लेकिन यही सच है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण का सबसे गहराइयों को छूने वाला तत्व यही है कि जब प्रश्न उठाने की जरूरत हो तो चुप्पी तोड़ कर सवाल करें, क्योंकि इसी से अंधविश्वास टूटता है। लेकिन पता नहीं किस भ्रम या अज्ञात भय से कहीं न कही अनचाहे, अनजाने, अनकहे सब कुछ जानते, समझते हुए भी अनपढ़ छोड़िए, पढ़े-लिखे भी अंधविश्वास का शिकार हो जाते हैं या किसी गुप्त उद्देश्य के निहितार्थ हवा देने लगते है।

परंपरा के नाम जिस तरह के अंधविश्वास अब भी सामने आते हैं, वे हैरान कर देते हैं। मध्य प्रदेश के शहडोल संभाग से भी इस साल की शुरुआत में बच्चों को दागने की घटनाओं की खबरें आई थीं। बीस दिन की बच्ची से लेकर पांच-छह साल की उम्र के बच्चों को दागने की दर्दनाक घटनाओं से राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग तक चेतना पड़ा। राजस्थान में बीते वर्ष सात साल के बच्चे की सर्दी-जुकाम ठीक करने के नाम पर हाथ-पैर और पेट पर दागा गया, जिससे उसकी मौत हो गई। मामला तूल पकड़ने के बाद तांत्रिक पर गैरइरादतन हत्या का प्रकरण दर्ज हुआ। लेकिन न तो ऐसी परंपराएँ रुकीं और न दागने का सिलसिला थमा।

इस संदर्भ में दिल्ली में एक जुलाई, 2018 को बुराड़ी में हुई घटना ने पूरे देश को हिला दिया था। छह दिन की साधना बाद घर के दस सदस्य कथित तौर पर महान शक्ति पाने और संपन्नता प्रापत होने की सिद्धि के भ्रम में फंदा लगा कर झूल गए। न शक्ति बचा सकी, न सपंन्नता मिली, मौत जरूर गले पड़ गई। 18 सितंबर, 2015 को छत्तीसगढ़ के जशपुर बाजार में मनपसंद भूत बिकने आए। 21 सितंबर 2015 को कपिलवस्तु में महिलाओं ने थानेदार पर टोटका कर नहलाया और बारिश की मन्नतें की। बारिश न होने से सूख रही धान की फसल को बचाने इंद्रदेव से प्रार्थना कर थानेदार को 'राजा' मान कर पानी में डुबो कर टोटका किया गया। अब राजा-रजबाड़े तो रहे नहीं, इसलिए थानेदार को 'राजा' मान लिया गया।

देश में हर साल घटने वाली ऐसी घटनाओं में ये महज चंद है। ऐसे सभी कारणों की तह में अंधविश्वास ही निकलता है। कभी किसी बीमारी को ठीक करने, तो कभी मनचाहे विवाह, नौकरी, वशीकरण जैसे अनगिनत कारण मासूमों को बलि की वजह बनते हैं। कई बार तो ऐसी बीमारी जो जांच से पता चल सकती है, अज्ञात भय से बिना चिकित्सीय परामर्श के ओझा, गुनिया, तांत्रिकों के फेर में लोग पड़ जाते हैं। ऐसा भी नहीं कि अंधविश्वास की जड़े भारत में ही मजबूत हो। अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, चीन, जापान, मिश्र, दक्षिणी कोरिया, न्यूजीलैंड, स्पेन, यूनान, पाक्सितान, बंगलादेश, नेपाल...यानी दुनिया का कोई कोना अछूता नहीं है। खाली कैंची चलाना, कुछ नंबरों का अशुभ मानना, उल्लू को देखना, घर के अंदर सीटी बजाना, यात्रा के वक्त दाहिना पैर आगे बढ़ाना, पड़ोसी को नमक उधार देना जैसे हजारों अंधविश्वास अब भी दुनिया भर में प्रचलित हैं। हैरानी की बात है कि सड़क पर बिल्ली रास्ता काट दे तो अपशकुन, लेकिन घर की बिल्ली से लिपट-लिपट कर बाहर निकलना, चंद्रग्रहण-सूर्यग्रहण पर बाहर नहीं निकलने के वैज्ञानिक कारणों के बजाय अंधविश्वासी बातों पर भरोसा, छीकने पर रुक जाना, भले ही सर्दी से हो, रात में झाड़ू नहीं लगाना, दिन विशेष को दाढ़ी-बाल नहीं कटवाना, लोहा, तेल, काली उड़द दाल नहीं खरीदना, कभी आभूषणों के रूप में वैभव या संपन्नता प्रदर्शित करने वाले रत्न आज भाग्य से जोड़ दिए गए है। नींबू, नजरबट्टू, सिंदूर, चूड़ियां, हल्दी, मुर्गी, बकरा, पत्थर, संख्याएं, रंग, बाल, उतरे कपड़े,

पत्थर, निशान, दीवार पर गोबर को लकीर, रंग, गंडा-ताबीज, राख, हड्डी जैसी चीजें जो खुद भी या तो निर्जीव हैं या सजीव होकर भी इतनी निलंब कि खुद नहीं बच पातीं, दूसरों को बचाने की उम्मीद बंधाती हैं।

पुराने जमाने मे बीमारी में भभूति लगाने का प्रचलन था। तब होने वाले यज्ञों में कई औषधीय गुणों वाली वस्तुएं भरपूर डाली जाती थीं, जिसके चलते भभूति को लोग पवित्र और रोगों की नाशक मानते थे। अब भारत में तमाम ऐसे ओझा, गुनिया, तांत्रिक, बाबाओं की भारी संख्या है, जो अपने फरेब के जाल में लोगों को फंसा हर तरह से लूटते हैं। हाल के दिनों में ऐसे कितने बाबा है जो बेनकाब हुए, कई जेल के सींखों तक पहुंचे। दूसरों के दिन ठीक करने वाले खुद जेल की कोठरी में दिन काट रहे हैं। अपनी अलाय-बलाय खुद दूर नहीं कर पाए। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 51 ए वैज्ञानिक चेतना के विस्तार की वकालत करते हुए कहता है कि भारत के सभी लोगों के बीच सामंजस्य और सामान्य भाईचारों की भावना निरंतर बढ़ती रहनी चाहिए औरधार्मिक,भाषाई और क्षेत्रीय या अनुभागीय विविधता की भावना का त्याग होना चाहिए। साथ ही महिलाओं की गारिमा के प्रति अपमानजनक प्रथाओं को त्यागना आवश्यक है।

राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार केवल जादू-टोने के चलते 2012 से 2021 के बीच देश भर में 1098 मौते हुईं। वहीं बीते कुछ दशकों में बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ और ओड़ीशा में लगभग 800 से ज्यादा महिलाओँ को टोनही या डायन बताकर सरेआम मार डाला गया। अंधविश्वास, अज्ञात भय, बलशाली वैभवशाली बनने खातिर फरेबियों और पाखंडियों के जाल में लुटने, पिटने और मरने वालों को ठीक-ठीक संख्या नहीं है, वरना लाखों तक पहुंच जातीं। ऐसी घटनाएं पूरे देश से अक्सर इस दौर में भी सामने आ जाती हैं जो महज एक समाचार के रूप में ध्यान जरूर खींचती हैं। न ये घटनाएँ रुकती हैं, न इनके प्रचार-प्रसार में लगे ट्रेनों सार्वजनिक वाहनों पर चिपके पोस्टर हटाए जाते हैं, न दीवारों पर लिखना रुकता है। अब सोशल मीडिया में भी खुलेआम किए जाने वाले ऐसे दावों पर साइबर नियंत्रण मौन दिख रहा है। अंधविश्वास डर, भय या लोभ के रासतों पर भटका कर ऐसे नतीजों पर ला खड़ा करता है, जहां पछतावा, नुकसान या सब कुछ गंवाने के अलावा अंत में कुछ नहीं मिलता। अच्छा होता कि अंधविश्वास के डर और फैले मकड़ जाल में उलझाने वाले इस सच को हम स्वीकारते और सरकारें, स्वयसेवी संस्थाएं, जनप्रतिनिधि और समाज के तमाम जिम्मेदार इसके निर्मूलन के लिए कुछ कर पाते।

साभार: जनसत्ता (30 अप्रैल 2023)

पढ़ो कि नया जहान बना सको

-मुनेश त्यागी

पढ़ो कि नर्क सी जिंदगी मिटा सको
पढ़ो कि अन्याय का वजूद मिटा सको
पढ़ो कि भेदभाव के राज मिटा सको
पढ़ो कि जुल्म का राज मिटा सको।

पढो कि लूट के राज जान सको
पढ़ो कि लूट का राज मिटा सको
पढ़ो कि गिर जाए तो उठ सको
पढ़ो कि गिरे हुए को उठा सको।

पढ़ो कि जुल्म की रीत मिटा सको
पढ़ो कि रण की प्रीत निभा सको
पढ़ो कि अमन के गीत गा सको
पढो कि क्रांति के गीत गा सको।

पढ़ो कि लड़ाई से ही प्रीत हो
पढ़ो कि पढ़ाई हमारी मीत हो
पढ़ो कि जुल्म से लड़ाई की जीत हो
पढ़ो कि देश पर मिटना हमारी रीत हो।

पढ़ो कि जुल्म की किताब पढ़ सको
पढ़ो कि जुल्मों सितम से लड़ सको
पढ़ो कि हकों की खातिर अड सको
पढ़ो कि मुक्ति का मार्ग गढ़ सको।

मैं बग़ावत चाहता हूँ।
हर उस फ़र्द के ख़िलाफ़
बग़ावत चाहता हूँ,
जो हमसे मेहनत कराता है।
मगर उस के दाम अदा नहीं करता।

– सआदत हसन मंटो

जब 'देवी' माता शांत हो गई

संजीव खुदशाह

मुझे याद है स्कूल की छुट्टियाँ पड़ने के बाद गर्मियों में महीने दो महीने के लिए खड़गपुर स्थित अपने ननिहाल जाया करते थे। छुट्टियां बड़े मजे से कटती थी, फुल एंजॉयमेंट रहता, सात मामा और उनके बच्चे के साथ खेलना एक अलग ही अनुभव देता था। कुछ मामा निमपुरा में रहते थे,कुछ टाटा में। लेकिन हमारा जमावड़ा नया खोली स्थित रेलवे क्वार्टर में रहता था। यह रेलवे क्वार्टर न होकर ननिहाल का हेड क्वार्टर था। जहां सब आया जाया करते थे।

मेरे तीसरे नंबर के मामा जी ओम प्रकाश व्यास रेलवे में नौकरी किया करते थे। यह वाक्या है 1982 का, रेलवे क्वार्टर के पीछे खाली मैदान था। उसके बाद कुछ और क्वार्टर बने हुए थे। इस खाली मैदान में एक घर था। रेलवे की इस कॉलोनी में ज्यादातर दलित लोग ही निवास करते थे। इस घर में प्रति सप्ताह शुक्रवार को बड़ा जमावड़ा लगता था। एक महिला थी जिसकी शादी बिलासपुर में हुई थी लेकिन उसकी पति से नही जमी और वह लौट कर अपने मायके आ गई। यहां पर उसे देवी चढ़ती थी। शुक्रवार को देवी चढ़ने के बाद वह महिला लोगों के भूत भविष्य बताती थी। धीरे-धीरे इसकी ख्याति चारों ओर बढ़ने लगी।

जैसा कि होता है अंधविश्वास की ख्याति विज्ञान बरअक्स 100 गुना तेजी से बढ़ती है, वैसा ही हुआ। देखते देखते क्वार्टर के पीछे का ग्राउंड शुक्रवार को हाउसफुल रहता। दूर-दूर से लोग अपना भूत भविष्य जानने के लिए 'देवी' माँ का करिश्मा देखने के लिए आने लगे। चढोतरी का खेल चालू हो गया। जिनका काम बनता,जिनकी मनौती पूरी होती वह चढ़ावा चढ़ाते और पूरा चढ़ावा उस महिला और उसके परिवार को मिल जाता। धीरे-धीरे इसकी प्रसिद्धि और बढ़ने लगी। दूसरे जिलों से भी लोग आने लगे।

यह बताना जरूरी है कि उस समय रेलवे क्वार्टरों में नल का कनेक्शन नहीं था। 4-5 क्वार्टरों के बीच एक सार्वजनिक नल हुआ करता था। जहां सभी जाकर पानी भरा करते थे। ऐसा ही नल हमारे रेलवे क्वार्टर के पीछे होता था। जहां सभी महिला, पुरूष पानी भरा करते थे। वह महिला जिससे देवी चढ़ती थी, भी यहीं आकर पानी भरा करती थी।

ओम प्रकाश व्यास जी इसी नल से घर के लिए पानी भर रहे थे। बहुत सारी महिलाएं थी,आसपास कुछ पुरूष भी थे। देवी मां के बारे में बातचीत होने लगी। मामा जी ने कहा कि ''देवी चढ़ना एक ढोंग है। यहां पर चढ़ोतरी के लिए बड़ा-बड़ा ढोंग खेला जाता है। इस औरत को कोई काम धाम नहीं हैं, पति को छोड़ कर आ गई है और यहां पर नया धंधा चालू कर दिया है।''

कुछ लोगों ने इस बात पर सहमति जताई, तो कुछ लोगों ने असहमति।

लेकिन किनारे पर खड़ी वह महिला इस बात को सुन रही थी।

कुछ दिनों बाद फिर शुक्रवार आया और हमेशा की तरह महफिल जम गई। दोपहर का समय था। मामा जी, हम लोग सब रेलवे क्वार्टर में बैठकर खाना खा रहे थे। इतने में बाहर से आवाज आने लगी।

''ओमप्रकाश बाहर निकल''

''तूने मुझे ढोंगी कहा था, आज मैं तुम्हें ढोंगी का मतलब बताती हूं। कहां छुप कर बैठा है आ मेरे सामने।''

घर के सभी मेंबर घबरा गए। दो-तीन बच्चों ने घर आकर बताया कि देवी मां आपको बुला रही है। जल्दी चलो।

इसी बीच बाहर से फिर आवाज आने लगी ''कहां छुप कर बैठा है ओम प्रकाश। बाहर निकल। देख कितनी भीड़ मुझे देखने के लिए आई हैं। मेरे आशीर्वाद से कितने लोग फायदा उठा रहे हैं। तू मुझे ढोंगी कहता है, बाहर निकल।''

पहले तो ओमप्रकाश जी घबराए बोले कि मैं नहीं जाता, इतनी भीड़ में मेरा जाना ठीक नहीं हैं। लड़ाई झगड़ा हो जाएगा। लेकिन घर के मेंबर्स ने समझाया, अनीता मौसी की उस समय शादी नहीं हुई थी बोली कि ''नहीं भैया जाओ, वहां पर आपको जाना चाहिए। नहीं तो भीड़ यहां आ जाएगी।''

इसी बीच मामा जी को कुछ सूझा और किचन गए। किचन में भुट्टे के छिलकें,प्याज के टुकडे, हरी मिर्ची आदि कचरे को कमीज की बाही में तथा पॉकेट में छिपा लिया।

मौसी ने पूछा ''यह क्या कर रहे हो''

मामा जी ने कहा ''चुप रहो बाद में बताऊंगा''

और वे पीछे की ओर घर में जहां भीड़ लगी हुई थी वहां पहुंच गए। चारों तरफ श्रद्धालुओं की भीड़ लगी हुई थी। बीच के परिसर के गोल चबूतरे में वह महिला बैठ कर मामा जी को ललकार रही थी। मामा जी आए।

उस महिला ने कहा ''कहां छुप कर बैठा है? यहां सामने आ?''

उसने मामा जी को अपने पास बुला लिया। उस महिला ने कहा ''क्यों, तू मुझे ढोंगी कहता है, मेरे पास शक्ति नहीं है कहता है? बता क्या शक्ति देखनी है तुझे। देख कितनें लोग ठीक हो कर जा रहे है यहां से। माता की शक्ति को ललकारता है तू।''

मामा जी हाथ जोड़ कर खड़े होकर कहने लगे 'मुझे माफ कर दो देवी जी' वह और क्रोधित होने लगी।

फिर उसने ललकारा ''क्षमा मांग,सबके सामने नहीं तो मैं तुझे भस्म कर दूंगी''

मामा जी ने हाथ जोड़ा और कहा ''अगर आप में कोई शक्ति है तो मेरे कुछ प्रश्नों का जवाब दीजिए,''

देवी मां ने कहा ''पूछ, क्या प्रश्न पूछता है, तू''

मामा जी ने कहा ''आपने जब मुझे पुकारा तो मैं खाना खा रहा था। मैं जब घर से निकला हूं तब मैंने अपनी जेब में और अपनी कमीज की बाही में कुछ चीजें छुपा कर रख ली है। बस आपको यह बताना है कि मैंने क्या-क्या रखा हैं। अगर आप सही बताएंगी तो मैं जिन्दगी भर आपकी गुलामी करूंगा और पूरा जीवन आपके चरणों में बिताऊंगा।''

उस महिला ने कहा ''तू मेरी परीक्षा लेता है? इतनी हिम्मत है तेरी''।

मामा जी ने कहा ''हिम्मत नहीं है, लेकिन कोशिश कर रहा हूं आपकी शक्ति को जानने की, पहचानने की। आज बड़ा अच्छा मौका है आप यह बात बताएंगे तो आप की प्रसिद्धि और चारों तरफ फैल जाएगी।''

देवी मां एक टक लगाकर देखने लगी और थोड़ी देर बाद देवी माता उतर गई। वह महिला मामा जी के प्रश्नों का जवाब नहीं दे पाई। माता के करिशमा से प्रभावित लोगों को मायूस होकर लौटना पड़ा।

धीरे-धीरे देवी मां के घर में भीड़ कम होने लगी और एक समय ऐसा आया जब शुक्रवार को उस घर पर कोई कार्यक्रम नहीं होता। इस तरह मामा जी ने जाने-अनजाने बहुत सारे लोगों को तर्कशीलता का ज्ञान दिया। लोगों को ठगने से बचाया। उस समय तक हमारे ननिहाल में पूजा पाठ का माहौल नहीं था। न ही वह नास्तिक थे। इसी समझ ने मेरे अंदर तर्कशीलता की नींव भरने का काम किया।

मां अक्सर इस कहानी को हम चारों भाई बहनों के बीच सुनाया करती थी।

कविता

अमृत लाल मदान

सूरज
अगर हिन्दू होता
तो सिर्फ हिंदुओं के आँगन में
सोना बरसाता!
चाँद
अगर मुस्लिम चाँद होता
तो सिर्फ
मुसलमानों की छत पर
चांदी बरसाता!
बादल
अगर सिख बादल होते
तो सिर्फ
सिक्खों के खेतों पर
मोती बरसाते!
तारे
अगर ईसाई तारे होते
तो सिर्फ
ईसाईयों की आँखों के लिए
झिलमिलाते, टिमटिमाते!
पर ऐसा कुछ नहीं है
हम सबकी सांझी सांस है
धरती सबकी सांझी कोख।
सच्चा धर्म तो जीवन पोषक है
अन्यथा
राजनीति की कोख से
उपया सांप है
सांप्रयिक है, शोषक है।

कुलपतियों के नाम खुली चिटठी

डा. नरेंद्र दाभोलकर
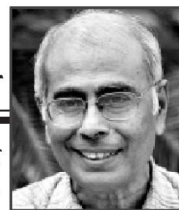
मा. कुलपति,

महाराष्ट्र के सभी विश्वविद्यालय

सादर सविनय,

शिक्षा क्षेत्र के बुनियादी वैज्ञानिक दृष्टिकोण को पीछे धकेलने वाले एक निर्णय के बारे में आप स्पष्ट और खुली भूमिका लेंगे, इस आशा से यह पत्र।

वैदिक ज्योतिष विषय का विभाग ज्योतिर्विज्ञान नाम से विश्वविद्यालय में शुरू करने का विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का निर्णय अब तक आपके पास निश्चित तौर पर पहुँचा होगा । आयोग के अध्यक्ष हरी गौतम के साक्षात्कार के आधार पर पता चलता है कि भारत के 70 से 80 विश्वविद्यालयों ने इसमें रूचि दिखाई है। इस संबंधी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा भेजा गया पत्र यदि अनजाने में आपके पास नहीं आया होगा तो आप कुलसचिव से माँगकर उसे जरूर ध्यानपूर्वक पढ़ने का कष्ट करें, ऐसी आपसे प्रार्थथा है। उसमें इस पाठ्यक्रम के कई सारे लाभ बताए गए हैं। छात्रों के साथ डॉक्टर, आर्किटेक्ट, वित्त और बाजार विभाग के विशेषज्ञ, आर्थिक और राजनीतिक विश्लेषक-सभी को इस पाठ्यक्रम से लाभ होने की बात स्पष्ट है। प्रमाणपत्र कोर्स के साथ बी.एस.सी. और एम. एस.सी. तक की स्नातक और स्नातकोत्तर शिक्षा की सुविधा ज्योतिर्विज्ञान विभाग में रहने की बात भी दर्ज है । इस विषय की जो सिफारिश इस पत्र में की गई है, उसे एक बार जरूर देखिएगा। इसकी प्रस्तुति के आधार पर वैदिक ज्योतिष अपने देश की परम्परा में अत्यंत उच्च कोटि की ज्ञान- शाखा है। इसके कारण काल के गर्भ में घटित होने वाली भविष्य की वैयक्तिक और वैश्विक घटनाओं का ज्ञान पहले मिल सकता है। इसी कारण स्वाभाविक रूप से इससे तनाव,चिंता तथा अनिश्चितता खत्म होने में मदद मिलेगी। आनेवाले समय का नियोजन बढ़िया ढंग से किया जाएगा। इसके साथ वैदिक गणित, वास्तुशास्त्र, खेती और अंतरिक्ष विज्ञान को भी इस अध्ययन से नए परिमाण प्राप्त हो जाएँगे। शायद यह कम था इसलिए आगे यह भी बताया गया है कि यह महत्वपूर्ण विज्ञान विश्वविद्यालय की इस ज्ञान-शाखा से सारे विश्व के ज्ञान-जगत पर अपना प्रभाव छोड़े।

मा. कुलपति महोदय, वैदिक ज्योतिष का डंका बजाने वाले विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के संबंधित सदस्यों को लोकहितवादी जोतिबा फुले, समाजसुधारक आगरकर, डॉ आम्बेडकर के ग्रंथ भेंट के रूप में भेज दें। पिछली सदी में इन विचारकों द्वारा बताए गए विचार इस सदी में भी यदि संबंधित लोगों की समझ में आए तो भी भला होगा। यदि उनके पास बिलकुल समय न हो तो, महाराष्ट्र के बुद्धिप्रामाण्यवादी विश्वविद्यालय के आद्य कुलपति जोतिबा फुले का इस संदर्भ में जो विचार है, वह तो अवश्य देखने को कहें। ज्योतिष को पाखंड ठहराते हुए आज जो प्रतिपादन हम करते हैं और जो समूचे ज्योतिष वर्ग को आज भी निरुत्तर करता है, उस प्रस्तुति की जड़ें महात्मा फुले जी के गँवार समझे जाने वाले उस स्पष्टीकरण में नजर आती है। फैसला लेने वाली समिति के संबंधित सदस्यों के दिमाग की बत्ती प्रज्वलित के लिए इतना भी काफी है। (दिमाग की बत्ती जलने का योग मात्र उनकी कुंडली में रहना चाहिए।)

आदरणीय कुलपति महोदय, महाराष्ट्र और उसमें भी विशेषत: शिक्षा क्षेत्र आज जो कुछ प्रगति कर रहा है, उसमें महाराष्ट्र के समाजसुधारकों और बुद्धिप्रामाण्यवादियों की परम्परा बड़ी और महत्वपूर्ण है। इस परम्परा का प्रतिनिधित्व करने वाले आप जैसों को इस प्रकार का खत लिखने की नौबत ही नहीं आनी चाहिए थी। सत्य साईंबाबा के कथित चमत्कार जिस समय अपनी चरम सीमा पर थे, उस समय बंगलोर विश्वविद्यालय के कुलपति रहे एच. नरसिंहा जी ने विश्वविद्यालय के द्वारा वैज्ञानिकों की समिति का गठन कर इन चमत्कारों को खुली चुनौती दी थी। सत्य साईंबाबा ने जली-कटी सुनाई लेकिन जांच के दायरा मात्र से वे दूर भागते रहे।

वैदिक ज्योतिष शुरू करने के इस फैसले के बारे में आपसे भी ऐसी ही आग्रही भूमिका की अपेक्षा करना अन्यथा नहीं माना जाएगा। संतोष इतना है कि मुम्बई विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ भालचंद्र मुणगेकर जी ने यह भूमिका जाहिर की है।

ज्येष्ठ खगोल वैज्ञानिक डॉ जयंत नारलीकर ने भी

साफ–साफ शब्दों में इसका विरोध किया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पूर्व अध्यक्ष तथा प्रतिष्ठत खगोल वैज्ञानिक यशपाल जी का इस फैसले से संबंधित लेखन आप जरूर देखें। उनकी दृष्टि से ग्रहों का नियमित भ्रमण और मनुष्य जीवन की कमाल की अनिश्चितता के कारण ग्रहों के पास मनुष्य जीवन को नियंत्रित करने की संभावना है, ऐसी धारणा संस्कृति के प्रारम्भिक अवस्था के मनुष्य की रही थी। उस समय ज्योतिष, गणित और खगोलविज्ञान–ये सारे एक साथ ही थे। आगे विज्ञान का विस्तार हुआ और गणित और खगोल अभ्यास दोनों स्वतंत्र शास्त्र बन गए। ज्योतिष मात्र ज्ञान की दृष्टि से हमेशा संदेह के घेरे में घूमता रहा। अब ज्योतिष की इस सुदीर्घ यात्रा, मानवी इतिहास पर उसके प्रभाव के अभ्यास को मनुष्य के सामाजिक विकास अथवा मानव वंश शास्त्र की दृष्टि से करने में कोई भी उज्र नहीं है। जारण–मारण, जादू टोना, जादूगरी जैसे प्रकार विश्व की सभी आदिम संस्कृतियों में मिलते हैं। उनका ऐतिहासिक अध्ययन में कोई आक्षेप नहीं है, लेकिन शत्रु को परास्त करने वाली प्राचीन परम्परा के अभिजात तंत्रज्ञान के रूप में जादू–टोना करने का अध्ययन संरक्षण विभाग द्वारा करना जितना हास्यास्पद–लज्जाजनक है उतना ही ज्योतिष की मदद डॉक्टर, आर्किटेकट, शेयर बाजार तथा अनेक उद्योग व्यवसाय को देना भी। बीमारी के कारणों का पता लगाने, इमारत की मजबूती समझने, भावी शेयर बाजार की निश्चित समझ मिलने और युद्ध की शुरुआत और दाँवपेंच लाभकारक रहने के लिए विश्वविद्यालय में शुरू होने वाले इस कथित वैदिक ज्योतिष का आधार क्या 21वीं सदी के भारत को लेना चाहिए?

माननीय कुलपति महोदय, भारतीय संविधान में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का पालन करना नागरिक का कर्तव्य माना गया है। वैज्ञानिक मनोभाव की निर्मिति शिक्षा का एक महत्वपूर्ण एवं मूलभूत कार्य है। इस शास्त्रीय दृष्टिकोण से वैदिक ज्योतिष का तिनके का भी संबंध नहीं है। इसे आप, आपके प्राध्यापक, छात्र और समाज तक नहीं पहुंचाएंगे, तो फिर ये काम कौन करेंगे? आप जानते हैं कि विज्ञान प्रमाण को अपनाता है। विशेष पद्धति की कठोर परीक्षा के तहत अनेक स्थलों पर अनेक प्रक्रिया से गुजर कर ही वैज्ञानिक नियम बनाये जाते हैं। उसमें निश्चित रूप से कसौटी पर उतरने से यह विचार ही आगे वैज्ञानिक सिद्धांत बनता है। इस वैज्ञानिक पद्धति की पहली सीढ़ी पर भी वैदिक ज्योतिष खरा नहीं उतर सकता। विवादास्पद होने वाला एक भी सिद्धांत अब तक इस कथित शास्त्र ने प्रस्तुत नहीं किया है। ज्योतिष का विचार है कि मनुष्य की कुंडली उसके जन्म के समय, जन्मस्थल से दिखाई देने वाले आकाश का उस व्यक्ति पर प्रभाव छोड़ने वाले स्थल–काल का मानचित्र है। यह प्रभाव अखंड रहता है और जन्म–समय पर निर्भर रहने की बात भी मानी गई है। वैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो इस प्रस्तुति में प्रचंड गोलमाल है और सबूत कुछ भी नहीं है। जन्म समय किसे मानेंगे और उसे ही सही क्यों मानेंगे, इसके पीछे कोई भी कार्य और कारण भाव नहीं है। सूर्य मंडल में सभी ग्रहों को मिलकर कुछ दर्जन उपग्रह रहते हुए और उसमें से कई चंद्र से भी बड़े रहने पर भी उनको कुंडली में स्थान क्यों नहीं? राहू और केतू जैसे काल्पनिक बिंदुओं को ग्रह क्यों समझें? मंगल ग्रह पुरुष प्रकृति का, शुक्र स्त्री प्रकृति का और शनि नपुंसक होने की बात किस जांच द्वारा तय की गई है? आजकल प्रकाश किरणों की ऊर्जा लहरों, गुरुत्वाकर्षण, विद्युतचुंबकीय आकर्षण जैसी संज्ञाओं को जबरदस्ती से पकड़कर ज्योतिष को शास्त्र ठहराने का घिनौना प्रयास चल रहा है। आपके विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान के कोई भी प्राध्यापक इसकी निरर्थकता को स्पष्ट करेंगे, इसका हमें भरोसा है। विश्वविद्यालय भी सार्वजनिक तौर पर ऐसा करे, ऐसी मांग हम प्रस्तुत पत्र के द्वारा करते हैं। एक ही ग्रह कुंडली के 12 जगहों पर 12 अलग–अलग परिणाम देता है, इसका अर्थ ग्रहों से मिलनेवाली प्रभाव लहरों का विभाजन (पृथक्करण) है जो उनके परिणाम की दृष्टि से वह 12 जगहों में विभाजित होती हैं। ये दो बातें जान–बूझकर किए बिना घटित होना असंभव है। लेकिन ऐसा घटित हुआ मानना यानी ग्रहों को बुद्धि और विचारशक्ति होने की बात मानना है। यह बात बुद्धि–सतर्क होनेवाला कोई भी व्यक्ति स्वीकार नहीं करेगा। फिर बुद्धि का उच्च स्तर पर विकास करने वाले विश्वविद्यालय में यह विषय पढ़ाना कालगति को उल्टे घुमाने जैसा है।

कुलपति महोदय, ज्योतिर्विज्ञान पढ़ाने की पुरजोर सिफारिश करने वाले फिर यह भी मांग करेंगे कि इतनी आपत्ति रहने पर यह विषय विज्ञानशाखा की अपेक्षा मानविकी शाखा में इसका समावेश करने में कौन सी आपत्ति है? महोदय हमारी आग्रही भूमिका है कि इसे भी आप बिलकुल

ठुकरा दें। बुद्धि और मानवीय संस्कृति की उन्नति शिक्षा का उद्देश्य है। कार्य और कारण का संबंध तो वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्राणतत्व है। इसके बिलकुल अनभिज्ञ रहने वाले ज्योतिविज्ञान से बुद्धि सम्पन्न होने का कतई संभावना नहीं है। यह जरूर स्पष्ट है। यदि संस्कृति मानविकी का विकास है, तो ज्योतिष इसके आड़े आता है। अन्य कोई भी सामाजिक शास्त्र हो या साहित्यशास्त्र हो, वैज्ञानिक दृष्टि से विज्ञान न होने की बात स्वीकारने पर भी मनुष्य जीवन को विभिन्न तरीकों से उन्नत करने की उनकी क्षमता स्पष्ट को चुकी है। ज्योतिष इसके बिलकुल उल्टे कार्य करता है। 'समय'के महत्वपूर्ण परिणामों का अंदाजा ज्योतिषी द्वारा लिया जाता है। इसका अर्थ है कि जीवन में आगे क्या होने वाला है, इसका पहले ही ज्ञान प्राप्त हो जाता है। लेकिन आगे जाकर इसका अर्थ यह होता है कि व्यक्ति के हाथ में कुछ नहीं बचता। व्यक्ति तो मात्र खिलौना है और पांच या पचास वर्षों में क्या होगा इसका निर्णय कुंडली में व्यक्ति का स्थान, ग्रहों का प्रभाव तथा जन्म समय से तय होगा। घटनाएँ यदि पहले ही तय हुई हैं, तो ज्योतिष निरर्थक है। और तय नहीं हुई तो भी निरर्थक है। इसके बावजूद उसे पढ़ाने की जिद क्यों? एक तो ग्रहों ने जो घटनाएँ तय की हैं, उन्हें ग्रहों की शांति, शुभ मुहूर्त, जप-जाप्य, होम-हवन के द्वारा दुरुस्त करने का लालच दिखाया जाता है और मनुष्य के मन में बैठे डर और अज्ञान की बदौलत पुरोहिताई मालदार बनती है। यह संस्कृति के लिए हानिकारक है। कुछ लोगों का दावा है कि रास्ते पर 'दुर्घटना क्षेत्र' जैसा बोर्ड वाहन को सावधानी की चेतावनी देता है। (रास्ता मात्र वही रहता है।) इसी प्रकार कुंडली भी जीवन की संभावनाओं के इशारे देती है, लेकिन वस्तुस्थिति को बदलना संभव नहीं होता, वह पूर्व जन्म के कार्य का भोग होता है, उसे भुगतना ही पड़ता है। जैसा विचार तो समाज परिवर्तन को ही हानि पहुँचाता है। मनुष्य अपनी बुद्धि से समाज और उसके व्यवहार को समझा सकता है तथा प्रकृति और समाज-रचना की उचित पुन:प्रस्तुति कर उसे स्वयं के अनुकूल बनाना ही तो मानवीय संस्कति की प्रगति में विवाद का मुद्दा रहा है। ज्योतिष को दी गई स्वीकृति इस प्रगति में ही सुरंग लगाती है।

आदरणीय कुलपति महोदय, महाराष्ट्र के शिक्षा प्रसार में बहुजन समाज की उन्नति के आग्रह की एक प्रगतिशील परम्परा रही है। ज्योतिर्विज्ञान का विश्वविद्यालय में होनेवाला प्रवेश इस परम्परा को सीधे बाधित करता है, इसे आप भली-भाँति जानते है और दुख की बात यह है कि सत्यशोधक विचारों की विरासत वाले महाराष्ट्र के बहुजन में ही मुहूर्त और जन्मपत्री का पागलपन आजकल अधिकाधिक बढ़ रहा है। ऐसे समय जो यह आग्रह होना चाहिए,वे अपनी शिक्षा संस्थाओं से प्रगतिशील युवा मन वहीं तैयार करें। सुधारक आगरकर के कथन के आधार पर कहा जाए तो बताना होगा कि 'जब तक अपने समाज में पढ़े-लिखे लोग सामान्य मनुष्य की गलतफहमियाँ दूर करने का साहस नहीं दिखाएँगे, तब तक अनुचित और अनिष्ट प्रथाएँ चलती रहेंगी। कोपर्निकस और गैलीलियों यदि साहस नहीं करते तो यूरोप में भी अज्ञान का अंत नहीं होता। नए तरीके से बर्ताव करने के साहस के सिवाय केवल ज्ञान के बढ़ने से उचित लाभ नहीं मिलता।' अपने समाज में पग पग पर और हमेशा इसका अहसास होता है। फिर भी वैदिक ज्योतिष विभाग विश्वविद्यालय में शुरू करने की सिफारिश की गई है और इस संबंध मे बुद्धिवादियों का स्वर तीव्र न होने की बात न सिर्फ अखरती है, अपितु उस पर आश्चर्य भी होता है। विश्वविद्यालय के कुलपति होने के नाते आप महाराष्ट्र राज्य के बुद्धिवाद का नेतृत्व करते हैं। इसके कारण आपसे हम अधिक उम्मीद रखे हुए है।

इस भूमिका को आप बड़ी दृढ़ता से निभाएँ, ऐसा समाज में मेरे जैसे कोशिश करने वाले अनेक लोगों को लगता है। उन सबकी व्यथा तथा पीड़ाओं को आप तक पहुँचाने के लिए यह पत्र लिखते समय अनजाने में यदि कोई मर्यादा भंग हुई हो तो उदार अंत:करण से क्षमा करें,यही हमारी प्रार्थना है।

भवदीयः नरेंद्र दाभोलकर
सचिव, महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति
स्रोतः पुस्तक ''अंधविश्वास उन्मूलन''
दूसरा भाग (आचार),
संपादकः डॉ. सुनील कुमार लवटे

हमारे जानी दुश्मन का
नाम हैं अज्ञान
उसे धर दबोचो
मजबूत पकड़ कर पीटो
और
उसे जीवन से भगा दो! - सावित्री बाई फुले

कवितायें

भारत एक है

सुरेश जैन

भारत एक स्वतंत्र
समाजवादी, लोकतान्त्रिक
धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है।

हाँ, एक स्वतंत्र राष्ट्र
जहाँ स्वतंत्रता है –
मालिक को लूटने की!
मजदूरों को लुटने की!

हाँ, एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र!
जहां हर गांव, हर शहर,
हर मुहल्ला और गली
धर्म के नाम पर
सुलग रहा है !

हाँ, एक लोकतान्त्रिक राष्ट्र
जहां अन्याय की खिलाफत करने पर
देशद्रोह के मुकद्दमे चलते हैं!

हां, भारत कि अदालतें न्याय करती है!
पर सिर्फ यूनियन कार्बाइड से
वही यूनियन कार्बाइड जिसे
इंसानों को मच्छर की तरह मारने का
लाईसेंस प्राप्त है।

हां, भारत एक समाजवादी राष्ट्र है!
जहां एक माँ भूख से तड़पते बच्चे को
कुतिया का दूध पिलाने को
मजबूर हो जाती है।

हां भारत एक स्वतंत्र
समाजवादी, लोकतान्त्रिक
धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है!
पर केवल संविधान के उन पन्नों में
जिनकी आवाज़ गूंजा करती है
दिल्ली की गोलाकार संसद में...
वही गोलाकार संसद
जिसमें भगत सिंह ने
बहरों को सुनाने के लिए
बम फेंका था। ...

शब्द और शब्द

प्रफुल्ल कुमार परवेज

कुछ शब्दों के लिए
रेडियो है, टी.वी है
लोकसम्पर्क का माइक है

कुछ शब्दों पर
बराबर नज़र रखी जा रही है
उन पर चौतरफा दबाव है
शब्दखोरों का!

कुछ शब्द केवल इसलिए
जिंदा जल रहे हैं
कि अंधेरे को आग लग जाए!

कुछ शब्दों को
गली- गली, घर घर
पहुंचाया जा रहा है
परन्तु नंगे पाँव चलते शब्दों का
चलना भी
अवरोधित करवाया जा रहा हैं!

कुछ शब्द तठस्थ है
कुछ दुविधा में है
अपने -अपने निचोड़ में
अंततः सुविधा में है!

कुछ शब्द
दिन को दिन
रात को रात
कहने पर अड़े है
हर गलत के खिलाफ
सही तरफ खड़े है

कुछ शब्द लगातार
सुलाने कि कोशिश में है
कुछ शब्द
खुद नींद से लड़ते हुए
जगाने कि कोशिश में है। ...

7. सहायक सामग्री

मार्क्स की "पूँजी" पर आधारित पाठ

रंगनायकम्मा

कच्चे माल और औजारों में दो फर्क हैं।

(1) कपड़े की कमीज बनाने पर कपड़ा कमीज में तब्दील हो जाता है। कमीज सिलने के काम आया हुआ धागा भी कमीज का हिस्सा हो जाता है। उसी तरह लकड़ी से कुर्सी बनाने पर लकड़ी खुद कुर्सी का हिस्सा बन जाती है। कील भी कुर्सी का हिस्सा बन जाते हैं। लेकिन 'औजार' हिस्सा नहीं बनते। न तो कपड़ा काटने के काम आने वाली कैंची और न ही कमीज सिलने के काम आने वाली सुई कमीज का हिस्सा बनती है। ये दोनों कमीज के अंदर नहीं जातीं। कुर्सी बनाने के काम आने वाले औजार- हथौड़ा, आरी, चाकू आदि चीजें कुर्सी का अंग नहीं बनतीं। कच्चे माल और औजारों में यह पहला फर्क है।

(2) जब कपड़े के और धागे जैसे कच्चे माल से कमीज सिली जाती है, तो इस सारे कच्चे माल का आकार बदल जाता है। चौकोर कपड़ा चौकोर नहीं रह जाता। धागे का गुच्छा, धागे का गुच्छा नहीं रह जाता। इनके आकार कमीज के आकार में बदल जाते हैं। इसी प्रकार जब लकड़ी के तख्तों से कुर्सी बनती है, तो तख्तों का आकार कुर्सी के आकार में बदल जाता है। कच्चा माल कोई भी हो, उसके साथ यही होता है। मगर औजारों के साथ ऐसा नहीं होता। नया उत्पाद तैयार हो जाने पर औजारों का आकार बदला हुआ नहीं होता। ये अपने पुराने आकार में ही रहते हैं। कपड़ा काट देने के बाद कैंची, कैंची के ही रूप में रहती है। कुर्सी तैयार हो जाने के बाद हथौड़ा, हथौड़े के ही रूप में रहता है। हल हो या करघा या आरी या दूसरा कोई भी औजार, फिर वह कितना भी पहले का क्यों न हो, वैसे का वैसा ही रह जाता है। वह अपने पुराने आकार में जैसा का तैसा रह जाता है। यह है कच्चे माल और औजारों में दूसरा फर्क।

जब भी कोई नया उत्पाद तैयार किया जाता हो, तो इन्हीं फर्कों के आधार पर हम समझ सकते हैं कि कच्चा माल क्या-क्या है और औजार कौन-कौन से हैं?

उत्पादों को तैयार करने के लिए हमें कच्चे माल और औजारों की जरूरत होती है। है ना?
लेकिन किसी-किसी उत्पाद को बनाने के लिए ये दो तरह की चीजें ही काफी नहीं होतीं। एक और किस्म की चीज जरूरी होती है। इसे 'सहायक सामग्री' कहते हैं। यानि सहायता करने वाली चीज। वह न कच्चा माल होती है, न औजार। पर कुछ उत्पादों को तैयार करने के लिए इनकी भी जरूरत होती है। कौन सी चीजें ऐसी होती हैं यह समझने के लिए चलें, हम पहले अपनी रसोई में चल कर देखें कि 'खाना बनाने' के लिए कौन-कौन सी चीजें लगती हैं।

चावल पकाने के लिए कौन सी चीजें लगती हैं? सबसे पहले जरूरी होता है **'चावल'**। चावल उबालने के लिए **'पानी'** जरूरी होता है। दोनों के मेल से भात पकता है। मतलब यह कि चावल और पानी **'भात'** के कच्चे माल हैं।

खाना बनाने के लिए और कौन सी चीजें लगती हैं? 'बर्तन' जरूरी हैं। 'चुल्हा' जरूरी है। ये हैं औजार।

बस? और कुछ नहीं? हमारे पासे इतने कच्चे माल और औजार हों, तो क्या भात बन पायेगा? नहीं, इतने से भात नहीं बन पायेगा। चूल्हे में जलाने के लिए क्या लकड़ियां जरूरी नहीं? चूल्हे पर रखे चावल को उबालने के लिए लकड़ियों का जल कर राख हो जाना जरूरी होता है। तो ये जलाव की लकड़ियां क्या होती हैं? कच्चा माल? नहीं। जलाव की लकड़ियां भात का हिस्सा नहीं हो जातीं, इसलिए ये कच्चा माल नहीं हैं। फिर क्या जलाव की लकड़ियां औजार हो सकती हैं? नहीं। इनका आकार कोई बिन-बदला तो नहीं न रह जाता? इन लकड़ियों का आकार जलते समय बदलता जाता है। इसीलिए ये औजार भी नहीं हो सकतीं।

फिर जलाव की लकड़ियाँ आखिर हैं क्या? किस श्रेणी में आती हैं? इन्हें हम 'सहायक सामग्री' या 'सहायता करने वाली सामग्री' कह सकते हैं। जलाव की लकड़ियों की जगह हम मिट्टी के तेल या कुदरती गैस या बिजली के प्रयोग से भी खाना पका सकते हैं। गर्म आँच पैदा करने के लिए जिस भी चीज का प्रयोग जरूरी हो, वह सहायक

सामग्री ही होगी। यह न तो कच्चा माल होगा और न ही औजार।

भात पकाने से पहले हमें चावल को पानी से धोना पड़ता है। है न? यह पानी क्या है? क्या यह कच्चा माल है? नहीं। कच्चा माल तो वह पानी है जो चावल को उबालने के लिए चावल के साथ मिलाया जाता हो। मगर यह पानी जो चावल धोने के काम आता हो, कच्चा माल नहीं होता। इसे तो बहा दिया जाता है। पर चावल धोने के लिए यह पानी जरूरी होता है। इसीलिए यह पानी सहायक सामग्री होगा। अगर हम चावल को धोये बिना ही उबाल दें तो? फिर यह सहायक सामग्री प्रयोग में नहीं लायी जायेगी।

मान लें कि हमें जूठी थालियाँ धोनी हों। जूठी थालियां धोने के काम के कच्चे माल क्या-क्या होते हैं? औजार क्या-क्या होते हैं? सहायक सामग्री कौन-कौन सी है? धोने का काम इन जूठी थालियों के साथ ही किया जाता है। इसीलिए ये जूठी थालियाँ ही कच्चा माल होंगी। जूठी थालियों के बगल में किसी बाल्टी या भगौने में जरूरत भर का पानी रख लेना पड़ता है। थालियों को हम इसी पानी से धो लेते हैं। वह बाल्टी या भगौना थालियाँ धोने के लिए जरूरी औजार है। साथ में राख, धान के छिलके या साबुन, थालियाँ धोने के लिए इस तरह का जो भी लगता हो वह सहायक सामग्री है। थालियाँ धोने के लिए जो पानी लगता हो वह भी सहायक सामग्री ही है। **मांजना** और **धोना** पूरी हो जाये, तो थालियाँ साफ हो जाती हैं। ये साफ थालियाँ हैं नये उत्पाद, जो थालियों को धोने के काम से तैयार होते हों। थालियाँ धोने के काम में कच्चा माल, औजार और सहायक सामग्री इस तरह होती है।

कपड़े धोने के काम में कपड़े कच्चा माल होते हैं। बाल्टियाँ औजार होती हैं। जिस पत्थर पर कपड़ों को रगड़-रगड़कर धोया जाता हो वह औजार है। साबुन और पानी सहायक सामग्री हैं। जिस डोरी पर कपड़े क्लिप लगा कर सुखाये जाते हों, वह डोरी और वे क्लिप भी औजार हैं। साफ कपड़े हैं नये उत्पाद, जो कपड़े-धुलाई के काम से तैयार होते हों।

हाथों से सिलाई करने के काम में सिर्फ कच्चे माल और औजार ही होते हैं। इसमें किसी सहायक सामग्री की जरूरत नहीं होती।

मान लेते हैं कि हमें एक धूल भरे कमरे की फर्श पर झाड़ू लगानी हो। झाड़ू लगाने का काम चूँकि फर्श पर किया जाता है, इसलिए फर्श ही स्वयं कच्चा माल है। झाड़ू लगाने के लिए जो झाड़ू हाथ में लिया जाता हो वह औजार है। इकट्ठा होने वाली धूल को हटाने के लिए किसी पौने की जरूरत हो, तो पौना भी एक औजार होगा। इस काम में कोई सहायक सामग्री नहीं होती। लेकिन फर्श की धूल को यदि पानी से धो डालना हो, तो वह पानी सहायक सामग्री होगा। यह सब कुछ करने के बाद वह कमरा एक साफ कमरा बन जाता है।

यहां एक और सवाल आ जाता है।

वहां एक गिलास में पीने का पानी रखा हुआ है। यह पानी क्या होगा? कच्चा माल या औजार या सहायक सामग्री? पीने के लिए रखा पानी कच्चा माल नहीं, औजार नहीं, सहायक सामग्री भी नहीं होता। इस पानी को हमें और कोई नाम देना होगा। ऐसा नाम जो उसके प्रयोग को बताये। जैसे, 'पेय पदार्थ'।

भात अगर पक कर तैयार हो, तो वह कच्चा माल नहीं, औजार नहीं और सहायक सामग्री भी नहीं। इसे 'खाद्य पदार्थ' कहना होगा। अगर वह पका हुआ न हो, कच्चा ही हो, तो खाने लायक नहीं होगा। अभी इसे किसी और पदार्थ में बदलना होगा। इसीलिए कच्चा चावल कच्चा माल होगा। पर भात कच्चा माल नहीं होगा।

जो भी चीजें न तो कच्चा माल हों, न औजार और न ही सहायक सामग्री, पर उपभोग के लिए तैयार हों, उन्हें 'उपभोग की चीजें या वस्तुएँ' कह सकते हैं।

जो भी चीज किसी श्रम के बाद तैयार होती हो, वह 'उत्पाद' या 'उपज' होगी। उत्पाद वह है जिसका उत्पादन हुआ हो। उत्पादन करने के लिए जो कच्चा माल, औजार आदि जरूरी हों उन्हें एक साथ 'उत्पादन के साधन' कहा जाता है। ये होते हैं उत्पादन करने के साधन। किसी भी वस्तु को बनाने के लिए या कोई भी काम करने के लिए उत्पादन के साधन जरूरी होते हैं। ये न हों, तो कोई भी काम नहीं हो पायेगा।

सवाल और जवाब

1. कच्चे माल और औजार में क्या फर्क है?

जवाब: कच्चा माल किसी नयी वस्तु में बदल जाता है। नयी वस्तु से कोई कच्चा माल कटा हुआ और दूर नहीं होता। मगर औजार उस नयी वस्तु के 'शरीर' में प्रवेश

नहीं करते। वस्तु तैयार हो जाने के बाद सारे के सारे औजार उससे हट जाते हैं।

2. हमें कम्बल बुनना है। बताइए, बुनाई के लिए कौन से कच्चे माल और औजार जरूरी होंगे?

जवाब: सूत ही एक कच्चा माल होगा। औजार होगा करघा और कुछ अन्य चीजें।

3. 'सहायक सामग्री' क्या होती है?

जवाब: यह एक खास किस्म की सामग्री होती है जो किन्हीं नयी वस्तुओं को तैयार करने के लिए या किन्हीं-किन्हीं गतिविधियों के लिए जरूरी हो सकती है। सहायक सामग्री वह सामग्री होती है जो न तो कच्चा माल होती है और न ही औजार, पर हो निहायत जरूरी।

4. कपड़ों की धुलाई में कच्चा माल क्या होगा? कपड़े धो डालने के बाद जो चीज तैयार होती हो वह क्या होगी?

जवाब: 'गन्दे कपड़े' होंगे कच्चा माल। धुलाई के बाद जो चीज तैयार होती हो वह 'धुले कपड़े' होंगे।

5. कपड़ों की धुलाई में पानी क्या है?

जवाब: सहायक सामग्री

6. कच्चा माल, सहायक सामग्री और व्यक्तिगत उपभोग की सामग्री – इन तीनों किस्म की सामग्री का कोई उदाहरण बताएँ।

जवाब: 'पानी' का उदाहरण है। जब हम भात पकाने के लिए पानी का इस्तेमाल करते हों, तो यह पानी कच्चा माल होगा। बर्तन माँजने के काम आने वाला पानी सहायक सामग्री होता है। जो पानी हम पीते हैं वह व्यक्तिगत उपभोग की सामग्री है। कुछ वस्तुएँ तीनों श्रेणियों में आती हैं।

7. पेंसिल, पुस्तक, भात, पानी, मेज, खाद्य, तेल, पेट्रोल, बैगन। इनमें कौन-कौन सी चीज कच्चा माल है? कौन-कौन सी सहायक सामग्री? और कौन-कौनसी औजार? (अगर ऐसी कोई चीज हो जो तीनों श्रेणियों में न आ पाती हो, तो उसे 'उपभोग की वस्तु' कहें।)

जवाब: पेंसिल-औजार। सन्दर्भ के अनुसार सहायक सामग्री भी।

पुस्तक-औजार। या उपभोग की वस्तु।

भात-उपभोग की वस्तु।

पानी-कच्चा माल, सहायक सामग्री और उपभोग की सामग्री

मेज- औजार। या उपभोग की वस्तु।

खाद्य तेल-कच्चा माल।

पेट्रोल-सहायक सामग्री।

बैगन-कच्चा माल।

चश्मा-उपभोग की वस्तु।

जूतों की जोड़ी-उपभोग की वस्तु।

हल-औजार।

8. 'बीजों' को किसी 'श्रेणी में रखना हो, तो किस श्रेणी में रखे जा सकते हैं।'

जवाब: बीजों को हम 'कच्चा माल' मान सकते हैं। इसलिए कि बीजों के पौधे उग आते हैं। बीज औजार नहीं हो सकते। सहायक सामग्री भी नहीं। बीजों को यदि कुछ कहना ही हो, तो कच्चा माल कहा जा सकता है। मगर यदि वे कुदरती तौर पर पले हुए बीज हों, तो हमें 'कुदरती तौर पर पाया जाने वाला जैविक पदार्थ' जैसा कुछ कहना होगा।

9. घड़े में पानी है। घड़ा क्या है? पानी क्या है?

जवाब: घड़ा-यहां यह औजार के रूप में इस्तेमाल हो रहा है। पानी- यहां यह उपभोग की वस्तु है। हर वस्तु उपभोग के लिए ही होती है। वह क्या है, यह उसके भिन्न-भिन्न प्रयोग के अनुसार नाम देकर बताना होगा।

10. 'उत्पादन के साधन' क्या होते हैं?

जवाब: किसी भी चीज का और हर चीज का उत्पादन करने के लिए जितने भी 'साधन' जरूरी होते हों, वे 'उत्पादन के साधन' कहलाते हैं। किसी-किसी उत्पादन को बनाने में कोई कच्चा माल नहीं लगता। किसी-किसी काम में कोई सहायक सामग्री नहीं होती। सन्दर्भ कोई भी हो, किसी भी उत्पादन में जो कुछ भी जरूरी हो वह सब उत्पादन के साधनों में आता है।

(स्रोतः पुस्तक 'बच्चों के लिए अर्थशास्त्र')

रुढ़ियों को लोग इसलिए मानते हैं, क्योंकि उनके सामने रूढ़ियों को तोड़ने वालों के उदाहरण पर्याप्त मात्रा में नहीं हैं।

– राहुल सांकृत्यायन

भारत के विभाजन के ऐतिहासिक घाव

भूरा सिंह महिमा सरजा

15 अगस्त 1947 को भारत और पाकिस्तान आजादी के जश्न मना रहे थे, मगर पंजाब जल रहा था। पूर्वी पंजाब से मुसलसानों और पश्चिमी पंजाब से हिंदू सिखों को निकाला जा रहा था, जो सदियों से इकट्ठा रह रहे थे। घरों और संपति को लूटने के बाद आग लगा कर जला दिया जाता था। धार्मिक उन्मादी जुनून में भाई बंधुओं को कत्ल कर, जवान बहू बेटियों को बदमाश जबरदस्ती उठाकर ले जा रहे थे। छोटे मासूम बच्चे यतीम हो गए। लाखों लोग मीलों लंबे काफिलों में नंगे पैर भूख प्यास के मारे, बूढ़ों को कंधों पर उठाये, पैदल या बैल गाड़ियों पर चल पड़े। परिवार बिखर गये। बहुत से कभी नहीं मिल पाए। मंजिल पता नही थी कि कहां जाना है। माल मवेशी, ज़मीन, घर, कारखाने, दुकानें यहीं छोड़कर लाखों लोग अनजाने मुल्क की ओर सफर कर रहे थे। रास्ते में आस-पास के लुटेरों ने जगह-जगह उन पर हमले किए। घायल होकर चलना पडा। खाने के लिए कुछ नहीं था। वृक्षों के पत्ते खाए। अगस्त के उमस में पानी नहीं मिल रहा था। जगह-जगह लाशें पड़ी हुई बदबू फैला रही थी, वही बरसात का गंदा पानी पिया। फसलों में छुपते-छुपाते, मीलों दूर अनजान देश में फेंक दिए गए। लाखों के कैंपों में हैजा फैल गया। बीमारों को छोड़कर बाकी परिवार के सदस्य भाग गए। कुछ लोगों को जमीन जायदाद अभी तक भी नहीं मिल पाई। जबरी धर्म परिवर्तन हुआ। जवान बहू बेटियाँ बलात्कार का शिकार होकर अनजान घरों में सालों रही। बच्चे पैदा हुए। भारत-पाक समझौते अधीन पुलिस लेकर उनके परिजन पहुंच गए। कुछ औरतें साथ चली गई और कुछ ने इंनकार कर दिया? कुछ बच्चों को साथ ले गई, कुछ वहीं छोड़ गई। यतीम बच्चे माँ बाप के प्रेम को सारी उम्र तरसते रहे। पूरे के पूरे गांव की औरतों नें कुएं में छलांग लगा दी और कुएं भर गये। यह त्रासदी इतनी बड़ी है कि इस छोटे से पेपर में इसकी कहानी बता पाना बहुत मुश्किल हैं। बंटवारे में 8 लाख से लेकर 10 लाख लोग मारे गए। एक करोड़ से 1.40 करोड़ विस्थापित हुए। 1 लाख औरतें अगवा की गई। आधी भी परिजनों के पास वापस नहीं जा सकीं। कुछ दोंनो तरफ अभी भी जिंदा है। अब इंटरनेट की वजह से 75 साल बाद करतारपुर में विछड़े परिवार मिल रहे है। बुजुर्ग अपने छोड़े हुए घर और गांव देखने की चाह मन में लेकर गुजर गए। दोनों देशों की सरकारों ने आज तक इन लोगों के लिए कोई सार्थक कदम नहीं उठाया।

पंजाब से बाहर शेष भारत के लोगों को इस त्रासदी का इतनी शिद्दत से एहसास नहीं है। इस पर्चे का मकसद, इस कॉन्फ्रेंस में भारत के कोने-कोने से आए माननीय बुद्धिजीवी, स्कॉलर, तर्कशील, और सामाजिक कार्यकर्ताओं और अन्य लोगों के सामने पंजाब के जनमानस पर गहरी छाप छोड़े इस घाव को वह सारे भारत के लोगों से साझा करेगें जैसा संप्रदायिक माहौल बीजेपी और इसके घटक अब बना रहे हैं, ऐसा ही माहौल इन्होंने 1940 से लेकर 1947 तक बनाया था, जो विभाजन का कारण बना। मुस्लिम लीग और आर एस एस ने अपनी प्राइवेट सेनाएं बना ली थी।

मुख्य सचिव अख्तर हुसैन की 30 सितंबर 1946 की रिपोर्ट बताती है कि मुस्लिम लीग की नेशनल गार्ड सेना की संख्या 15000 थी जो बढ़कर 22000 हो गई है। आर एस एस के स्वयंसेवक 14000 से बढ़कर 40000 हो गए हैं। सिखों की अकाल सेना 3 मार्च 1947 के बाद बनती है। बड़ी संख्या में लोगों के कत्लेआम के जिम्मेदार यही लोग है। 16 अगस्त 1946 को मुस्लिम लीग ने ड्रग एक्शन का ऐलान किया। बंगाल में दंगे हो गए देखते ही देखते 4000 लोग कतल, 15000 जख्मी, 100000 बेघर हो गए। मुंबई में 400 और बिहार में 2000 लोग मारे गए। 20 फरवरी 1947 को अंग्रेजों ने भारत छोड़ने का ऐलान किया। इन हथियारबंद सेनाओं नें देश में कहर बरपा दिया।

सबसे भयानक प्रभाव पंजाब पर हुआ क्योंकि इस के दो टुकड़े हो गए थे। यहाँ पर संप्रदायिक नस्लकुशी की गई। पंजाब के पश्चिमी जिले हजारा, अटक, रावलपिंडी में मुस्लिम लीग के नेशनल गार्डों ने हिंदू सिखों पर हमले शुरू कर दिए। बहुत थोड़े भागकर बचे। यह लुटे पुटे लोग पूर्वी

पंजाब आ गए। यहां प्रतिकर्म शुरू हो गया। यहां सिखों की हथियार बंद सेना ने गांवों में मुसलमान लोगों पर हमले शुरू कर दिए। यह सिलसिला सितंबर अक्टूबर 1947 तक चला। अब गोदी मीडिया इस नरसंहार का जिम्मेदार मोहम्मद अली जिन्नाह की टू नेशन थ्योरी को मानता है। इसी टू नेशन थ्योरी की शुरूआत हिंदू चिंतकों ने सबसे पहले की थी कि हिंदू और मुसलमान इकट्ठे नहीं रह सकते। सावरकर अपनी किताब ''वार ऑफ इंडिपेंडेस 1857'' में बहादुर शाह जफर की प्रशंसा करते है और यह बताते हैं, कि हिंदू और मुसलमान दोनों ने यह लड़ाई इकट्ठे होकर बहादुरी से लड़ी। पर बाद में जब वह माफी मांग कर जेल से बाहर आता है, तो उसके विचार बदल जाते है। 1857 में हिंदू और मुसलमानों की इस एकता ने अंग्रेज को भयभीत कर दिया। 1860 में मुंबई प्रेसिडेंसी के गवर्नर ऐलफिनस्टन ने कहा कि हम इन दोनों कौमों का मुकाबला नहीं कर सकेंगे। यहां से अंग्रेज मुसलमानों और हिंदुओं में फूट डालने की प्लानिंग शुरू कर देता है। सावरकर को मिली माफी इसी प्रसंग में देखी जाती है। इसके बाद सावरकर ने हिंदू राष्ट्र के लिए काम करना शुरू कर दिया।

मुसलमानों ने अलग देश की बात 1940 के बाद की। वह हिंदुओं में बहुत पहले शुरू हो चुकी थी। बंगाली चिंतक अरबिंदो घोष के नाना राज नारायण बोस और उसके दोस्त अब्बा गोपाल मित्रा नें यह कहना शुरू किया कि अब हिंदू जाग गए हैं और इनको आर्य देश मतलब हिंदू राष्ट्र की तरफ बढ़ना चाहिए। इन्होंने 1867 में बंगाल हिंदू मेला लगाना शुरू किया जो बंगाली साल के आखरी दिन होता था। मेले में वह हिंदुओं का महिमामंडन करते थे और इनको सबसे बढ़िया नस्ल और कौम कह कर गर्वान्वित करते थे। आर्या-देश बनाने के लिए संगठनात्मक कार्य भी करते थे। मेला 1890 तक लगता रहा। फिर हिंदू महा समिति बनाई जो बाद में भारत धर्म महामंडल बन गया। इसके बाद हिंदू महासभा बनाई गई। लाला लाजपत राय ने 1899 में अखबार हिंदुस्तान रिव्यू में एक लेख में हिंदू राष्ट्र की धारणा पेश की। 1924 में इसका एक खाका पेश किया। बी एस मुंजे और भाई परमानंद ने 1925 में कहा कि मुसलमानों और हिंदुओं का आपस में कुछ भी मिलता नही हैं और दोनों अलग-अलग कौमें है। 1890 के बाद दंगे शुरू होते हैं। अंग्रेजों ने 1857 की लड़ाई के सबक को लागू कर दिया था जिसका नतीजा भारत और पाकिस्तान बनने के रूप में सामने आया। अंग्रेजों ने सावरकर को माफी देकर अपना निशाना साध लिया था। मुस्लिम लीग और संघ परिवार को आजादी आने तक किसी किस्म के दमन का सामना नहीं करना पड़ा क्योंकि वह अंग्रजों की पॉलिसी को आगे बढ़ा रहे थे, तो फिर बंटवारे के लिए कोई और दोषी नहीं हो सकता।

राम मनोहर लोहिया अपनी किताब ''गिलटीमैन ऑफ द पार्टीशन'' में पहले ही शुरू में लिखते हैं कि गांधी बंटवारे के लिए सहमत नहीं था। सारे कांग्रेसी उसको मनाने के लिए जोर लगा रहे थे। वह बटवारे के लिए सहमत नहीं था। अब तक कांग्रेस हालात को समझा चुकी थी। एच वी शेषाद्री जो आर.एस.एस. का चोटी का चिंतक था अपनी किताब ''द ट्रैजिक स्टोरी ऑफ पार्टीशन'' में पन्ना नंबर 181, 82, 83 पर लिखता है कि एक ही शख्स था जो पार्टीशन का विरोधी था और वह थे गांधी। इससे साबित हो जाता है कि हिंदू महासभा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, मुस्लिम लीग से बहुत पहले से ही बंटवारे के पक्षधर थे। अकेली मुस्लिम लीग पर यह आरोप नहीं लगाया जा सकता। इसकी नींव 1870 के दशक में ही रखी जा चुकी थी और रखने वाली थी हिंदू महासभा।

यहां तक के डॉ बी आर अंबेडकर भी अपनी पुस्तक'' पाकिस्तान एंड पार्टीशन ऑफ इंडिया'' में लिखते है कि मोहम्मद अली जिन्नहा और सावरकर दोनों के विचार टू नेशन थ्योरी पर एक जैसे थे। दोनों ही भारत के विभाजन के पक्षधर थे।

सुभाष चंद्र बोस भी किताब ''एसेंशियल राइटिंग्स ऑफ नेता जी सुभाष चंद्र बोस'' में यह लिखते हैं कि आर एस एस और मुस्लिम लीग दोनों ही संगठन अंग्रेजों के स्पॉन्सर्ड थे।

उपरोकत सभी हवालों से पता चलता है कि मुस्लिम लीग से भी पहले हिंदू संगठन जैसे हिंदू महासभा और आर.एस.एस. शुरू से ही मुसलमानों के साथ नही रहना चाहते थे और अलग हिंदू राष्ट्र बनाना चाहते थे। किसी भी और संगठन पर देश के विभाजन का दोष लगाना सरासर गलत हैं। यह शुरू से ही लोकतंत्र, जो धर्मनिरपेक्षता पर आधारित हो, का मजाक उड़ाते हैं। ***शेष पृष्ठ 33 पर***

कृत्रिम मेधा : संभावनाएं, सीमाएं और चुनौतियां

आजकल कृत्रिम मेधा या कृत्रिम बुद्धि (आर्टिफिशियल इंटेलीजेन्स) की काफी चर्चा है। पिछले नवम्बर में CHAT GPT के आने के बाद से ही लोग इस पर जोर-शोर से बात करने लगे हैं। कुछ लोग इससे उत्साहित हैं, तो कुछ भारी आशंकित। कुछ इसमें फायदा देख रहे हैं, तो कुछ भारी नुकसान। कुछ तो हाल फिलहाल कृत्रिम मेधा से जुड़े हर तरह के शोध पर पाबंदी लगाने की बात कर रहे हैं।

इस तरह की बातों से जाहिर है कि कृत्रिम मेधा का मामला अब एक ऐसे मोड़ पर पहुंच रहा है जहां से चीजें भिन्न रूप ग्रहण कर सकती हैं। जो चीज अभी दूर की कौड़ी नजर आती थी अब वह बेहद नजदीक नजर आ रही है।

बीसवीं सदी के मध्य में कम्प्यूटर के आविष्कार के साथ ही यह सवाल उठने लगा था कि क्या कभी ऐसा हो सकता है कि मशीनें इंसानी दिमाग जितनी सक्षम हो जायें? इस संबंध में भांति-भांति की कल्पनाएं की गईं। कहानियां-उपन्यास लिखे गए और फिल्में बनीं। इन सबकी एक लम्बी सूची है। लेकिन तब भी लोगों को लगता था कि इंसानी दिमाग की तरह की क्षमता वाली मशीन का आविष्कार दूर की चीज है। तब तक मजे से अटकलबाजी की जा सकती थी और इस अटकलबाजी का आनंद लिया जा सकता था। पर अब इसके नजदीक की संभावना महसूस करते ही एक किस्म की दहशत को महसूस किया जा सकता है।

इंसानी दिमाग एक अदभुत चीज है। अभी तक ज्ञात ब्रह्माण्ड में यह अपने आप में अनूठी चीज है। इसके जैसा कुछ और नहीं है। हालांकि ढेरों किस्म के जन्तुओं में दिमाग है और स्तनधारी जन्तुओं में तो काफी विसकित दिमाग है पर ये सब इंसानी दिमाग के नजदीक नहीं बैठते। इंसानी दिमाग इनसे गुणात्मक तौर पर भिन्न है। इंसानी दिमाग की तर्कशीलता, कल्पनाशीलता और रचनात्मकता का कोई जवाब नहीं है। इसी तरह इसकी भावनात्मकता और अंतर्दृष्टि का भी कोई जवाब नहीं है।

कैलकुलेटर और कम्प्यूटर बहुत सारे काम इंसानी दिमाग से ज्यादा तेजी से तथा सटीकता से कर सकते हैं। सामान्य जोड़-घटाना से लेकर अन्य तरह के गुणा-भाग और गणना इसमें शामिल हैं। इन सबने पिछली तीन-चौथाई सदी में इंसान का काम काफी आसान भी बनाया है। पर इन सबमें इंसानी दिमाग की उपरोक्त खासियतें कहीं नहीं थीं। वे बस ज्यादा तेज गति से काम करने वाली मशीनें ही रहीं। जैसे बाकी मशीनें इंसानी हाथ से बहुत ज्यादा विशाल पैमाने पर तथा ज्यादा तेज गति और सटीकता से काम करती हैं वैसे कम्प्यूटर भी इंसानी दिमाग से ज्यादा विशाल पैमाने पर तथा ज्यादा तेज गति और सटीकता से काम करने वाली मशीन था। बस!

पर अब कृत्रिम मेधा के विकास के साथ यह सब बदल रहा सा लगता है। ऐसा लगता है कि मशीन और इंसानी दिमाग के बीच का विशाल फर्क कम हो रहा है। कि मशीन अब इंसानी दिमाग की तरह की क्षमता की ओर बढ़ रही है। कि वह भी अब तर्कशीलता और रचनात्मकता का परिचय दे रही है। अभी वह भले की कल्पनाशीलता और भावना न दिखा रही हो पर उधर और बढ़ सकती है। जो भी हो, अभी ही यह दिख रहा है कि रोजमर्रा के मानसिक कामों के ढेरों मामलों में कृत्रिम मेधा वह कर दे रही है जो एक सामान्य प्रशिक्षित व्यक्ति कर सकता है।

यहीं से कृत्रिम मेधा के बारे में आशंका और दहशत भी पैदा हो रही है। यहीं से कृत्रिम मेधा और इंसानी दिमाग के बीचे फर्क के बारे में बहस ही पैदा हो रही है। यहीं से इस क्षेत्र में और आगे शोध पर पाबंदी लगाने की बात भी उठ रही है। नोम चोम्स्की जैसे लोगों का मानना है कि अभी घबराने की आवश्यकता नहीं है क्यों कि अपने वर्तमान रूप में कृत्रिम मेधा कभी भी इंसानी दिमाग की बराबरी नहीं कर सकती। उनके अनुसार वर्तमान कृत्रिम मेधा उच्च तकनीक वाली नकलबाजी मात्रा है। उनके इस कथन का निश्चित मतलब है। सरल रूप में इसे इस रूप में समझा जा सकता है।

आजकल भारत में स्कूली बिताबें (टेकस्ट बुक) लिखने का एक सामान्य तरीका है। इसमें कोई लेखक किसी विषय पर पहले लिखी हुई स्कूली किताबें लेकर बैठ जाता

है। वह सभी किताबों को पढ़ता है और फिर उन्हें मिलाकर एक नयी किताब लिख देता है। बस उसे यह ध्यान रखना पड़ता है कि किसी किताब का कोई वाक्य वह हूबहू नकल न करे नहीं तो उस पर चोरी का आरोप लग जाएगा।

कृत्रिम मेधा भी इसी तकनीक का इस्तेमाल करती है। किसी विषय पर कुछ लिखने के लिए वह अपने पास मौजूद सारी सामग्री को देखती है और फिर उनसे सबसे संभावित चीज लिख देती है। इसे प्रायिकता माडल कहते हैं।

कृत्रिम मेधा की ट्रेनिंग या प्रशिक्षण उसके डाटाबेस पर ही होता है। इसीलिए उत्तर उसी के हिसाब से मिलेगा। यदि बाघ की ट्रेनिंग के लिए चीते के चित्रों को प्रयोग किया जाये तो उत्तर में बाघ के नाम पर चीते का चित्र ही देखने को मिलेगा।

यहीं से नोम चोम्स्की की बात पर आया जा सकता है। हो सकता है कि कोई बच्चा गलत ढंग से छपी किताब को बार-बार देख कर चीते को ही बाघ समझने लगे। पर उसके मां-बाप या अध्यापक यदि उसे एक बार भी बाघ का चित्र दिखाकर बताएं कि बाघ असल में ऐसा होता है तो बच्चा फिर चीते को बाघ समझना बंद कर देगा। उसकी पहले की बार-बार की याद को यह एक बार की शिक्षा निरस्त कर देगी। उसका दिमाग पुरानी बार-बार की बात को भूलकर इस एक बार की बात को मानना शुरू कर देगा।

पर कृत्रिम मेधा के साथ ऐसा नहीं होगा। यदि पहले बाघ के नाम पर चीते के सौ चित्र उसके डाटाबेस में हैं तो बाघ के नाम पर बाघ के एक-दो चित्र कुछ काम नहीं आयेंगे। वह बाघ के नाम पर चीते का चित्र दिखाता रहेगा। स्थिति तब बदलेगी जब बाघ के नाम पर बाघ के इतने चित्र डाल दिये जायें कि वे बाघ के नाम पर चीते के चित्र से ज्यादा हो जायें। यानी बाघ के नाम पर बाघ के चित्रों की डाटाबेस में प्रायिकता (प्रोबैबिलिटी) चीते के चित्रों से ज्यादा हो जाये।

यहीं से कृत्रिम मेधा और इंसानी दिमाग के अभी के फर्क को समझा जा सकता है। दोनों ट्रेनिंग और डाटाबेस पर काम करते हैं। कृत्रिम मेधा के डाटाबेस में बाघ के नाम पर चित्र डाले जाते हैं। बच्चे को बाघ का चित्र या असली बाघ दिखाकर बताया जाता है वह कि बाघ है। पर कृत्रिम मेधा के सटीक होने के लिए जरूरी है कि उसके डाटाबेस में जानकारी या सूचना ज्यादा हो। पर इंसानी दिमाग न्यूनतम सूचना पर काम करता है। इंसानी दिमाग में ज्यादा से ज्यादा सूचना नहीं भरी जा सकती। भूलना इंसानी दिमाग की चारित्रिक विशेषता है।

आज कृत्रिम मेधा और इंसानी दिमाग में बुनियादी फर्क है। इस फर्क से स्वाभाविक तौर पर बहुत सारे परिणाम निकलते हैं। कृत्रिम मेधा अधिकतम सूचना पर काम करती है जबकि इंसानी दिमाग न्यूनतम सूचना पर। इसी के साथ इंसानी दिमग भावनाओं और अंतर्ज्ञान को भी समेटता है जिन्हें इंसानी तर्कशीलता और रचनात्मकता से अलग नहीं किया जा सकता। भावनाएं और अंतर्ज्ञान ज्यादा आदिम हैं और किसी हद तक दूसरे जंतुओं में भी मिलते हैं। इन सबसे युक्त इंसानी दिमाग जो कर सकता है वह अधिकतम सूचना से प्रायिकता माडल पर चलने वाली कृत्रिम मेधा नहीं कर सकती। पर इसका यह मतलब नहीं है कि कृत्रिम मेधा अभी जो कर रही है या कर सकती है वह कोई 'महत्वपूर्ण' चीज नहीं है। सामाजिक दृष्टि से यह बेहद महत्वपूर्ण है। आने वाले समय में यह वैसे ही सामाजिक प्रभाव डालने में जा रही है जैसे पिछले तीन दशकों में मोबाइल फोन और इंटरनेट ने डाला है। 5-जी तकनीक के तहत इंटरनेट के बढ़ी गति के साथ इसके मेल से जल्दी ही इसके बड़े परिणाम देखने को मिलेंगे। उत्पादन-वितरण के तरीकों तथा स्वयं जीवन शैली पर भी इसका प्रभाव पड़ेगा।

पिछले लम्बे समय से रोबोटीकरण और इसके प्रभाव की चर्चा होती रही है। अब कृत्रिम मेधा से लैस रोबोट एक नये चरण के द्योतक होंगे। इनके जरिये उत्पादन-वितरण ही नहीं युद्ध तक बड़े परिवर्तन हो सकते हैं।

रोबोटीकरण और कृत्रिम मेधा के अन्य तरीकों (भांति-भांति के एप) के कारण रोजगार के कई क्षेत्रों पर गंभीर असर पड़ेगा। बहुत सारे मानसिक काम जो दुहराव की प्रकृति के हैं, उन पर सबसे ज्यादा असर होगा। जिस आई टी (सूचना तकनीक) की पिछले दिनों इतनी धूम रही है, उस पर भारी असर पड़ेगा। इसी तरह साफ्टवेयर और बी.पी.ओ. पर भी। वकीलों और उन्हीं तरह के अन्य काम भी प्रभावित होंगे। इंटरनेट की दूनिया में पिछले सालों में चमके 'कंटेन्ट राइटर' 'यू ट्यूबर' इत्यादि भी प्रभावित होंगे। आम तौर पर कहा जाये तो जो क्षेत्र आधुनिक सूचना और संचार तकनीक के जितना नजदीक था वह उतना ही ज्यादा

प्रभावित होगा।

इसके असल के एक उपमा से समझा जा सकता है। स्मार्टफोन आने के बाद बहुत सारे उपकरण एक तरीके से निरर्थक हो गए क्योंकि स्मार्टफोन ने उन्हें अपने में समेट लिया। कैमरा, घड़ी, टार्च, म्यूजिक सिस्टम, पुस्तकालय, अखबार-पत्रिकाएं, सिनेमा हाल, टी.वी. इत्यादि सब बदले रूप में इसमें सामाहित हो गये। सब अभी भी अलग से मौजूद हैं पर काम चलाऊ रूप में सब समार्टफोन में भी उपलब्ध हैं और ज्यादातर लोग इन्हीं से काम चलाते हैं। इससे उपरोक्त चीजों के बाजार पर भारी प्रभाव पड़ा है और उन्हें अपने अस्तित्व के संघर्ष से जूझना पड़ा है।

यही चीज भांति-भांति के क्षेत्र में कृत्रिम मेधा भी करेगी। बहुत सारे काम तब संकट में पड़ जायेंगे और उनमें काम कर रहे लोग बेरोजगार हो जायेंगे। बहुत सारे लोग आश्वस्त हैं कि कृत्रिम मेधा का इस्तेमाल नये रोजगार पैदा करेगा जैसे सूचना और संचार क्रांति ने किया। पर यह याद रखना होगा कि ठीक इसी काल में या सूचना और संचार क्रांति के काल में बेरोजगारी लगातार बढ़ती गई है। आबादी का अधिकाधिक हिस्सा बेरोजगारों की पांतों में शामिल होता गया है। स्थाई बेरोजगारों की दर विभिन्न देशों में एक चौथाई से एक तिहाई आबादी तक जा पहुंची है। हताश होकर काम की तलाश बंद कर देना, जिन्दा रहने के लिए कुछ भी करना, इत्यादि के कारण ही यह वास्तविक बेरोजगारी की दर आंखों से ओझल रहती है।

इसलिए यह खुशफहमी पालना कि कृत्रिम मेधा का इस्तेमाल रोजगार खत्म करने से ज्यादा रोजगार पैदा करेगा गलत होगा। हां, चूंकि इसके इस्तेमाल से पूंजीपति वर्ग को तात्कालिक तौर पर अपना मुनाफा बढ़ाने में मदद मिलेगी, इसीलिए पूंजीपति वर्ग के नुमाइंदे इस खुशफहमी को फैला रहे हैं। इतिहास में हमेशा ही पूंजीपति वर्ग ने हर नयी तकनीक का इस्तेमाल अपना मुनाफा बढ़ाने के लिए किया है। इस बार भी ऐसा ही होगा। इसमें हमेशा ही मजदूर वर्ग पर हमला होता रहा है। बेरोजगारी इसका एक परिणाम है तो बढ़ती बदहाली दूसरा।

पर इससे यह निष्कर्ष निकालना गलत होगा कि तकनीक मजदूर वर्ग या मानवता की दुश्मन है। तकनीक आज इसीलिए मजदूर वर्ग की और मानवता की दुश्मन है कि उस पर पूंजीपति वर्ग का नियंत्रण है जो उसे अपने मुनाफे के लिए इस्तेमाल करता है। यह इस्तेमाल किसी और रूप में नहीं हो सकता। सिवाय इसके कि ज्यादा आबादी को भयंकर कंगाली में धकेल दिया जाए।

इंसानी समाजों में धन-सम्पदा के दो ही मूल स्रोत रहे हैं-प्रकृति और इंसानी श्रम। पूंजीवाद अधिकाधिक मुनाफे के लालच में इन दोनों स्रोतों का अधिकाधिक दोहन कर उन्हें नष्ट करता है। प्रकृति के बारे में सारा ज्ञान (विज्ञान और उस पर आधारित तकनीक) इसके इसी काम आती है। कृत्रिम मेधा के मामले में भी यही होगा। इसके जरिए प्रकृति और इंसान का दोहन और बढ़ेगा।

यहीं से उन लोगों की बातों को समझा जा सकता है। जो कृत्रिम मेधा पर आगे शोध पर पाबंदी लगाने की बात करते हैं। उनकी आशंका जायज है। पर उसका प्रस्थान बिन्दु गलत है। समस्या किसी तकनीक में नहीं है। समस्या तकनीक का इस्तेमाल करने वाली समाज व्यवस्था में है। जो समाज व्यवस्था बिना अन्य किसी चीज की परवाह किये बस नयी-नयी तकनीक से प्रकृति और इंसान के अधिकाधिक दोहन को प्रोत्साहित करती हो, उसमें इस तरह की अभिनव तकनीक जरूर चिंता का विषय है। लेकिन एक भिन्न तरह के समाज में, जिसमें तकनीक का इस्तेमाल समूचे समाज के हित में होता हो, उसमें ऐसी चिंता नहीं हो सकती। उसमें किसी घातक तकनीक के आविष्कार के बाद भी उसका इस्तेमाल नहीं होगा क्योंकि वह समूचे समाज के खिलाफ होगा।

पूंजीवाद ने अपने पूरे इतिहास में अपने मुनाफे को बढ़ाने के खातिर नयी-नयी तकनीक के विकास को प्रोत्साहन दिया। इसके लिए उसने बुनियादी वैज्ञानिक शोध को भी प्रोत्साहित किया। आज ये दोनों अत्यन्त विशाल पैमाने पर हो रहे हैं। पर चूंकि यह सारा कुछ मुनाफे की खातिर हो रहा है इसलिए इस बात का खतरा पैदा हो गया है कि घातक तकनीक के रूप में 'भस्मासुर' पैदा हो जाए। कृत्रिम मेधा, बायो तकनीक और परमाणू ऊर्जा के क्षेत्र में 'भस्मासुर' की भारी संभावना है। इन्हें किसी तात्कालिक पाबंदी के जरिये नहीं रोका जा सकता। तत्कालिक पाबंदी तात्कालिक तौर पर ही कारगर हो सकती है। पूंजीवाद में मुनाफे का लालच हमेशा इस पाबंदी का उल्लंघन करेगा। स्थाई समाधान स्वयं इस मुनाफे की व्यवस्था के खात्मे की मांग करता है।

"नागरिक" अखबार से साभार

बिजली गिरने पर तुरंत अस्पताल ले जायें

* गोबर में गाड़ना नहीं है इलाज

-डा. दिनेश मिश्र

बरसात के मौसम में बारिश के साथ बादलों की गड़गड़ाहट तथा बिजली गिरने की अनेक घटनाएं सामने आती हैं, जिसमें व्यक्ति को त्वरित चिकित्सकीय उपचार की आवश्यकता होती है पर अंधविश्वास के चलते पीड़ित व्यक्ति को गोबर के गड्ढे में कंधे तक गाड़ कर इलाज करने के मामले छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड, ओडिशा के ग्रामीण अंचलों से सामने आते हैं, गम्भीर रूप से घायल मरीज को अस्पताल पहुंचाने की बजाय गोबर के गड्ढे में डालकर ठीक होने का इंतजार करते रहना इलाज नहीं, अंधविश्वास है।

सुरगजा के अलग अलग क्षेत्रों में बिजली गिरने की घटनाएं हुई हैं जिसमें 6 ग्रामीण प्रभावित हुए हैं। बैकुंठपुर के बहेराटोला ग्राम में बिजली गिरने की घटना पर 3 ग्रामीणों की मृत्यु हो गयी, ग्रामीणों ने उन्हें ठीक करने की उम्मीद में गोबर में गाड़ कर रखा, बाद में उन्हें अस्पताल पहुंचाया गया। इसके पहले जशपुर, सरगुजा में बिजली गिरने की घटना सामने आई थी, वहाँ उन्हें ग्रामीणों ने उपचार के लिए एक गड्ढे में डाल कर गोबर भर दिया, बाद में समझाने बुझाने पर उन्हें अस्पताल भेजा गया तब तक उनकी मृत्यु हो गयी थी। छत्तीसगढ़ के ग्रामीण अंचल सरगुजा के बैकुंठपुर कोरिया, रायगढ़ तथा अन्य ग्रामीण क्षेत्र से बिजली गिरने पर गोबर के गड्ढे में डालने की घटनाएं सामने आई हैं, जिनमें पीड़ित व्यक्ति अपनी जान से हाथ धो बैठता है।

दुनिया में हर साल बिजली गिरने की करीब 2 लाख 40 हज़ार घटनाएं दर्ज होती हैं, इन घटनाओं में कितनी जानें जाती हैं, इसे लेकर कई तरह के अध्ययन अलग आंकड़े बताते हैं। एक स्टडी की मानें तो दुनिया में 6 हजार लोग हर साल बिजली गिरने से मारे जाते हैं।

दूसरी तरफ, नेशनल क्राईम रिकॉर्ड ब्यूरो की मानें तो सिर्फ भारत में प्रतिवर्ष करीब 2500 व्यक्तियों की मृत्यु बिजली गिरने से होती है, जबकि इनसे कई गुणा व्यक्ति बिजली गिरने से आहत होते हैं। अनेक व्यक्ति अस्पताल पहुंचाए जाने के पहले ही दम तोड़ देते हैं और हजारों तो कुछ अंधविश्वास और स्थानीय स्तर पर झाड़फूंक, उपचार करते रहने के कारण अस्पताल ही नहीं ले जाए जाते। कुछ मामलों में तो पीड़ित को 2 घण्टे गोबर में गाड़ने पर ठीक नहीं होने पर उसे दुबारा गोबर में ही गाड़ दिया गया।

आकाश में बादलों के टकराव/घर्षण से इलेक्ट्रिसिटी उत्पन्न होती है जो तीव्र गति से पृथ्वी की ओर आती है इसे ही बिजली गिरना, तड़ित कहते हैं, आकाशीय बिजली में 10 करोड़ वोल्ट तथा 10 हजार एम्पीयर से अधिक करेंट होता है जो बहुत शक्तिशाली होता, हम अपने घरों जो विद्युत उपयोग करते हैं वह मात्र 220 वोल्ट होता है, जब बादलों में घर्षण से विद्युत उत्पन्न होती तब यह 3 लाख किलोमीटर प्रति घण्टे की रफ्तार से पृथ्वी पर आती है तथा इसमें 15 हजार डिग्री फैरनहाईट की ऊष्मा होती है जो सूर्य की ऊष्मा से भी अधिक होती है चूंकि प्रकाश की गति ध्वनि की गति से अधिक होती है इसलिए बिजली गिरती हुई पहले दिखाई देती है, आवाज बाद में सुनाई देती है।

बरसात के मौसम में बिजली गिरने का खतरा बना रहता है। इसलिए जब बरसात हो रही हो, बादल गरज रहे हों तब व्यक्ति को सावधानियां रखना चाहिए जैसे बिजली के उपकरणों को बंद रखें, लैंडलाईन फोन का उपयोग न करें, पेड़, बिजली के खम्भे, ऊंचे स्थानों के पास न खड़े हों, धातु/मेटल के उपकरण मशीने, बाईक का उपयोग न करें, यहां तक कि धातु के हेंडल वाले छाते का उपयोग न करें, यदि स्नान कर रहे हों तब भी नदी, नाले, तालाबों से बाहर निकलें, बचाव के लिए जमीन पर न लेटें बल्कि बैठे घुटनों पर हाथ रख सिर झुका बैठें सिर जमीन पर न टिकाएं। घर, दुकान बिल्डिंगों में तड़ित चालक लगायें।

बिजली गिरने से व्यक्ति की हृदय गति रुकने, साँस रुकने से मृत्यु हो जाती है जलने के निशान, कान के परदों का फट जाना, मोतियाबिंद, शरीर में खास कर दिमाग में रक्तस्राव, खून के थक्के जमना, लकवा, डिप्रेशन आदि होने की सम्भावना रहती है बिजली गिरने से पीड़ित व्यक्ति के उपचार के लिए उसे यथासम्भव अतिशीघ्र अस्पताल ले जाना चाहिए, जहां उसे भरती कर उसके *शेष पृष्ठ 37 पर*

सर्पदंश का जहर निकालने के नाम पर लोगों को मार डालते हैं ओझा-तांत्रिक

टिकेश कुमार

सर्प से कौन नहीं डरता? लोग अंधेरे में जाने से पहले टार्च लेना नहीं भूलते हैं, क्योंकि यही डर रहता है कि कही सांप-बिच्छू न कांट ले और हमें उसकी जहर का सामना करना पड़े। लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में सुविधा के अभाव और खेतखार व पेड़-पौधे के कारण आए दिन सर्पदंश के मामले सामने आते रहते हैं जिसमें ओझा-तांत्रिक ग्रामीणों को सर्पदंश से बचाने और सर्पदंश के बाद झाड़-फूंक से ठीक करने का दावा करते हैं। उसका बड़ा-बड़ा ड्रामा और कथित चमत्कार से लोग उसकी ओर आकर्षित होकर जाते हैं। गांव में किसी व्यक्ति को सर्प कांट देता है तो उस व्यक्ति को ओझा (बैगा) के पास ले जाता है और बैगा उस मरीज को अनेकों प्रकार के झाड़-फूंक करता है, जिससे मरीज की जान चली जाती है। मृत व्यक्ति के परिवार वाले किस्मत को दोष देते हुए 'भगवान की यही मर्जी थी, इतने ही दिनों के लिए आए थे' यह कह कर शान्त हो जाते हैं। कभी ये नहीं सोचते कि इस ओझा के चक्कर में मृत्यु हुई है। सही समय में डॉक्टर को दिखाते तो उसकी जिंदगी बचाई जा सकती थी।

झाड़-फूंक का ड्रामा

सर्पदंश से पीड़ित व्यक्ति को ओझा (बैगा) के पास लाते ही तांत्रिक का ड्रामा चालू हो जाता है। हर इक ओझा-तांत्रिक का भांति-भांति का ड्रामा होता है। जोर-जोर से मंत्र पढ़कर मरीज को भभूत से झाड़ना, फूंकना, भभूत खिलाना, सर्प कांटे स्थान पर भभूत लगाना, उस स्थान पर पानी छिड़कना, मसलना और मुंह से सर्पदंश स्थान के खून को चूसना ऐसे बहुत से मूर्खतापूर्ण कार्य करता रहता है और आस-पास के लोग तमाशा देखते रहते हैं। कुछ मरीज इस ड्रामा के बीच में ही खत्म हो जाते हैं। वहीं बहुत से सर्पदंश से पीड़ित लोग ठीक हो जाते हैं। तांत्रिक कहता है अब ये ठीक हो गया और सर्पदंश से पीड़ित व्यक्ति को घर ले जाता है, उस व्यक्ति को कुछ नहीं होता है, न ही उस तांत्रिक को कुछ होता है। लोग उस घटना को लेकर तांत्रिक को सिद्ध तांत्रिक कहकर प्रचार करते हैं। दूसरों को कहता है कि उस तांत्रिक ने सर्पदंश स्थान को चूसकर जहर को पी गया और सर्पदंश के बाद भी व्यक्ति बच गया, तांत्रिक को कुछ नहीं हुआ। जब उसी तांत्रिक के झाड़-फूंक की वजह से सर्पदंश पीड़ित व्यक्ति मर जाता है तो उस समय यहां लोग शांत बैठ जाते हैं, कोई यह नहीं कहता उस तांत्रिक ने उसी जान ले ली।

सांपों को लेकर सच्चाई

भारत देश में 70 फीसदी सर्प में बिल्कुल जहर नहीं होता है। अब बचे 30 प्रतिशत में 10 फीसदी सांपों में भारी मात्रा में जहर होता है, बाकी में नहीं के बराबर होता है। दस फीसदी सांप के काटने से व्यक्ति का बच पाना कठिन हो जाता है। उस तांत्रिक (बैगा) के पास इसी दस फीसदी सांप के कांटे मरीज की मृत्यु हो जाती है। बाकी 90 फीसदी सर्पदंश के शिकार व्यक्ति बच जाते हैं, इसी से तांत्रिक अपनी शक्ति सिद्धि का दावा करता है। मतलब 100 सर्पदंश व्यक्ति में कुछ ही लोग मर जाते हैं, बाकी सब बच जाते हैं। मर गए उसके लिए किस्मत ने साथ नहीं दिया या भगवान की मर्जी इतने दिनों के लिए ही आया था बेचारा कह कर तांत्रिक अपना पीछा छुड़ा लेता है।

रायपुर जिले की एक घटना

एक घटना छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर के पास के गांव की है। यह बात बारिश के समय की है, जब गांवों में खेती का काम चल रहा था।

मुझे फोन आया और बताया कि 18 साल की लड़की को सांप ने काट दिया है, हम क्या करें, कहां दिखाएँ?

तब मैंने पूछा- कौन सा सांप ने काटा है? उत्तर झट से मिला 'कोबरा'।

(मैं सोच में पड़ गया कोबरा बहुत जहरीला सांप है) मैं जितना जानता था उतनी सावधानी बताते हुए कहा तुरंत सरकारी अस्पताल मोकाहरा रायपुर ले आइए।

विज्ञान चौंपाल कार्यक्रम का पड़ा प्रभाव

हम कुछ ही समय पहले गांव में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विज्ञान चौपाल कार्यक्रम किए थे। वहां उस व्यक्ति ने हमारा कार्यक्रम को बराबर अटेंड किया था। 35-40 मिनट में हॉस्पिटल लेकर पहुंच गए। मैं और एक साथी पहले से हास्पिटल पहुंच चुके थे। मरीज के परिवार वालों से पूछा कि किसी ने देखा सच में 'कोबरा' ही है तो उन्होंने कहा 'हां'

हम लोगों ने उस सांप को देखा भी और उस सांप को मारा भी है। फिर डॉक्टर ने देखते ही बता दिया कि इसे सांप ने नहीं काटा है। उन्होंने कहा कि फिर भी कुछ टेस्ट है, इसे तुरंत करा कर दिखाए। टेस्ट से भी पता चला सांप ने नहीं काटा है। डॉक्टर ने बताया कि सांप खेलकर निकल गया और उसका कुछ स्क्रेच रह गया इसलिए ये चिन्ह पड़ा है।

सांप काटने पर पीड़ित को तुरंत पहुंचाए अस्पताल

अब यह बात समझने की है कि अगर ओझा-तांत्रिक के पास लेकर जाते तो अनेक ड्रामा करने के बाद ठीक हो गया। फिर क्या लोग उसकी जय जय करना न चालू कर देते। कहते कोबरा सांप काटा था उसे तांत्रिक ने ठीक कर दिया कभी ये नहीं पता करता कि सांप काटा है कि नहीं। ऐसे ही सांप जहरीला नहीं होता है या कुछ दूसरा कीड़ा काटा रहता है। सभी से अपील है कि कभी भी इस पाखंडी तांत्रिक के चक्कर में न पड़े। जब भी कोई सांप काटे तो अपने नजदीकी अस्पताल में पीड़ित को पहुंचाएं।

-अध्यक्ष, एंटी सुपरस्टीशन ऑर्गेनाइजेशन
(ए एस ओ)

पृष्ठ 3 का शेष अंधविश्वासी मानसिकता के कारण उन्होंने उसे भी कथित भूत-प्रेतो के साथ जोड़ दिया।

परामर्श केन्द्र में मनोवैज्ञानिक काऊंसलिंग के दौरान गुरजीत ने स्वीकार किया उस के सभी कपड़े उसी के द्वारा ही कैंची के साथ काटे गये थे। उसने यह भी माना कि 'देवी जी' के उपदेशों के प्रभाव में वह अपने गृहस्थ जीवन के प्रति पूरी तरह से उदासीन हो गई थी। इसी कारण उसे अपने पति पर अत्याधिक क्रोध आ जाता था। उसने यह भी बताया कि उसे अपने बेटे के साथ अत्यधिक स्नेह है, इसी कारण वह अपने घर में रह कर अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियां निभाती चली आ रही है। उसने माना कि कई बार उसके मन में घर-परिवार छोड़ कर 'देवी जी' के सान्निध्य में रह कर अपना 'जीवन सफल' करने के विचार आते रहते थे, परन्तु उसके पुत्र का स्नेह उसे ऐसा करने से रोक देता था।

बचपन से पारिवारिक माहौल के कारण गुरजीत के दिमाग में फंसे अंधविश्वास के इस कील ने लम्बे समय तक उनके पूरे परिवार को अत्यधिक कष्टमयी परिस्थितियों में डाल कर रखा हुआ था।

94163 24802

नोटः यह एक सत्य घटना है, परिस्थितिवश पात्रों के नाम बदल दिये गये हैं।

माँ का बहिष्कार

हिमांशु कुमार

मेरी माँ का जन्म कानपुर में एक संपन्न परिवार में हुआ। शादी मेरे फक्कड़ पिता से हुई।

पिता नें घर से ज्यादा समाज के काम को महत्व दिया।

पिता विनोबा भावे के भूदान आन्दोलन में देश भर के गांव गांव घूमने लगे। माँ नें हम चारों भाई बहन को अकेले पाला। माँ उस वख्त के आसपास के समाज से बहुत आगे थी। माँ को उपन्यास पढ़ने और सिनेमा देखने का शौक था। उस समय उपन्यास किराए पर मिलते थे। माँ एक के बाद एक उपन्यास किराए पर लाती थी। खाना बनाते समय भी रसोई में एक हाथ में करछुल और दूसरे हाथ में उपन्यास रहता था। आँखे उपन्यास में और हाथ काम में।

मैंने शरत चन्द्र, रविन्द्र नाथ टैगोर, प्रेमचंद, विमल मित्र के उपन्यास माँ के साथ साथ ही पढ़े। चार बच्चे होने के बाद भी माँ ने हाई स्कूल और इंटर मीडियर की परीक्षा पास करी। मेरी बहनें और माँ एक साथ परीक्षा देने गयी थी। माँ को सिनेमा और उपन्यास के अपने शौक की वजह से आस-पास के ताने और कटाक्ष भी सुनने पड़ते थे। लेकिन माँ पर किसी का फर्क नही पड़ता था। आज मुझ में आस-पास की आलोचनाओं से बेपरवाह रहने का गुण माँ से ही आया है।

पड़ोस के एक आर्थिक मुसीबत में पड़े मुस्लिम परिवार के साथ माँ का व्यवहार मुझे आज भी याद है। वह मुस्लिम परिवार हमारे रिश्तेदारों से भी हमारे ज़्यादा करीबी था। मेरठ के दंगो में वह पूरा परिवार हमारे घर में रहा। आज उस परिवार के सभी बच्चे ऊंची नौकरियों में हैं। आस-पास काम कर रहे सफाई कर्मचारियों को घर में बुला कर रसोई के भीतर बैठा कर खिलाने की वजह से माँ को परिवार और पड़ोसियों से बहिष्कार का सामना करना पड़ा था।

माँ को मैंने हमेशा आस-पास के समाज में अनफिट ही देखा, उनका यह गुण मुझ में पूरी तरह से आ गया। मुझे भी समाज में अनफिट रहने में मज़ा आने लगा। माँ अच्छा हुआ जो मैं तुमहरी संतान हुआ वरना पता नहीं मैं होता भी या नहीं।

''तर्कशील पथ'' पढ़े, ''तर्कशील'' बने।

मुक्ति युद्ध में नास्तिकता का सवाल

सुधीर विद्यार्थी
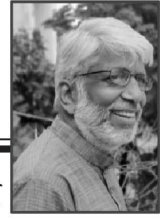
'गदर पार्टी' ने अपने ज्यादा जनोन्मुखी और धर्मनिरपेक्ष सिद्धांतों के साथ संघर्ष की इबारत को रचकर इतिहास में जो मुकाम तय किया वह अपने में अनोखा है, धर्मनिरपेक्षता की इसी जमीन पर आगे चलकर मन्मथनाथ गुप्त और भगत सिंह सरीखे युवा क्रांतिकर्मियों ने नास्तिकता का पौधा रोपा और पल्लवित किया।

भारत के मुक्तियुद्ध का दीर्घ संघर्ष जिन पड़ावों से हो कर गुजरा वह उसकी वैचारिक चेतना के विकास का जीवंत साक्ष्य है, सतावनी क्रान्ती के बाद आजादी के लिए चले संघर्ष के जिस दूसरे दौर की शुरुआत असहयोग आंदोलन की असफलता के बाद 'हिन्दुस्तान प्रजातंत्र संघ' (हिप्रसं) के निर्माण की प्रक्रिया से हुई, वह अपने लक्ष्य और उद्देश्यों के लिए ज्यादा मुखर और जनपक्षधरता के साथ निरंतर आगे बढ़ता दिखाई देता है, देखा यह भी जानना चाहिए कि हिप्रसं के गठन से पूर्व अमरीका की धरती पर बनी 'गदर पार्टी' ने अपने ज्यादा जनोन्मुखी और धर्मनिरपेक्ष सिद्धांतों के साथ संघर्ष की इबारत को रचकर इतिहास में जो मुकाम तय किया वह अपने में अनोखा है, लाला हरदयाल, सोहन सिंह भकना, करतार सिंह सराभा जैसे क्रांतिकारी व्यक्तित्वों ने संघर्ष और विचार के जिस ताने-बाने का निर्माण किया वह सचमुच बहुत रोमांचकारी है।

'गदर पार्टी' में धर्मनिरपेक्षता की सही नींव रखने वाले क्रांतिकारी इस दल के कारकुन थे जिनकी बनाई जमीन पर ही आगे चलकर मन्मथनाथ गुप्त और भगत सिंह सरीखे युवा क्रांतिकर्मियों ने नास्तिकता का पौधा रोपा और पल्लवित किया। हिप्रसं के नेता शचीद्रनाथ सान्याल का झुकाव अध्यातम की तरफ अधिक था पर वे बहुत खुले विचारों के थे। दल का संविधान बनाने से पहले उन्होंने एमएन राय के करीबी कुतुबूद्दीन और प्रथम कम्युनिस्ट कांफ्रेंस के संयोजक सत्यभक्त से पर्याप्त चर्चा की। काकोरी के मुकदमे के दिनों में क्रांतिकारियों के बीच अनीश्वरवाद पर विमर्श शुरू हो गया था। ईश्वर के अस्तित्व के विपक्ष में तब जिन नौजवान क्रांतिकारियों की मुखरता सामने आ रही थी, उनमें राजेंद्र लाहिड़ी और सन्मथनाथ गुप्त के नाम है। थोड़ा आगे चलकर लाहिड़ी अनीश्वरवाद से छिटक गए, लेकिन चिंतन के उस धरातल पर पहुंचकर मन्मथनाथ फिर लौटे नहीं, उनका अनीश्वरवाद उनके जीवन के अंतिम दिनों तक बरकरार रहा, बल्कि बाद में समय में इस पर उनकी आस्था दृढ़तर होती चली गई।

काकोरी की फांसियों के बाद राजेंद्र लाहिड़ी की फांसी का बदला लेने के लिए सी.आई.डी. के जीतेंद्र बनर्जी पर गोली चलाने वाले मणींद्र बनर्जी की शहादत फतेहगढ़ केंद्रीय कारगार में अनशन के दौरान हुई थी। यह घटना 20 जून 1934 की है जब उसी जेल में कैद मन्मथनाथ गुप्त की गोद में मणींद्र ने अपनी अंतिम सांस ली। मणींद्र के अंतिम क्षण और उनके मन्मथनाथ के भीतर मौजूद अनीश्वरवादी विचार संपदा का सबसे बड़ा साक्ष्य हैं। वे मरणासन्न होकर भी अनशन तोड़ने को तैयार नहीं थे, ऐसे में भौतिकवादी मन्मथनाथ उन क्षणों में किसी तरह मणींद्र के भीतर बचे दीपक की लौ को थोड़ा जगाना चाहते थे। मणींद्र एक समय के ईश्वरवादी थे, अब नहीं। एकाएक मन्मथनाथ ने सोचा कि शायद उनके मानस में इस समय ईश्वर नाम की कोई बची हुई चिंगारी अभी दबी पड़ी हो और वह इस आड़े वक्त में उन्हें थोड़ा सहारा दे सके। सो उन्होंने मणींद्र को खूब जोर से थामकर अपना भी समस्त भूतपूर्व ईश्वर-विश्वास बटोकर कहा, 'हे भगवान, यदि तू है तो मणींद्र को रोग मुक्त कर। मणींद्र ने जाने या अनजाने में कभी किसी किस्म का दुष्कृत्य नहीं किया।' पर मर्णीद्र ने उन कठिन पलों में भी इस प्रार्थना का प्रतिवाद किया। अंतिम समय में भी उनके भीतर कोई दुर्बलता नहीं थी। उन्होंने बीच में मन्मथनाथ को टोकते हुए (अंग्रेजी में) कहा, 'चुप! भगवान कहां है! न्याय कहां है! इस जगत में दुष्ट हमेशा सुख भोगते हैं और अच्छे लोग कष्ट सहते हैं।'

मणींद्र की ओर से ईश्वर के इस तिरस्कार को सुनकर मन्मथनाथ की आकृति मलिन सी हो गई। वे खुद अनीश्वरवादी थे। काकोरी की फांसियों के समय बिस्मिल गीता और अशफाक उल्ला कुरान हाथ **शेष पृष्ठ 30 पर**

जब बटुकेश्वर दत्त तरुण थे

चमनलाल आजाद

चमनलाल आजाद क्रांतिकारी संगठन हिंदुस्तान समाजवादी संघ के सदस्य थे, वे दो बार फांसी पर चढ़ाए जाने से बाल बाल बचे थे। वे ''प्रताप''' अखबार में पत्रकार थे और उनके बारे में बनारसी दास चतुर्वेदी ने लिखा कि 'गणेश शंकर विद्यार्थी के बाद चमनलाल आजाद ने ही उनकी परंपरा को कायम' रखा था। यह लेख ''युवक'' पत्रिका में प्रकाशित हुआ था और हमें ***चमन लाल*** *के सौजन्य से मिला है। 20 जुलाई को बटुकेश्वर दत्त का स्मृति दिवस है।*

विप्लवी बटुकेश्वर दत्त! आज वे हमारे बीच नहीं हैं। उस वीर विप्लवी ने जीवन भर तो देश की आजादी के लिए संघर्ष किया ही था, मौत से भी डट कर संघर्ष किया आज भी जब वे याद आते हैं, उनके त्याग-बलिदान पूरित जीवन की समस्त घटनाएं चित्रपट की भांति आंखों के सामने घूम जाती है। बचपन से ही कितना विशाल हृदय लेकर जन्मे थे दत्त! उनके जीवन के बाल प्रसंगों के कल्पना-चित्र अपनी गरिमा और श्रेष्ठता के कारण आज की सी घटनाएं प्रतीत होती हैं।

उस समय की बात है जब वे अल्पायु ही थे। नैपाल बाबू के संपर्क में आ चुके थे। एक दिन दत्त ने देखा कि सड़क पर एक निर्धन आदमी बीमारी से तड़प रहा है। पर दुखकातरता से अभिभूत दत्त यह दृश्य देखकर कर करुणा-विगलित हो उठे, एक कुटिया में उठा लाए उसे। उसकी दिन-रात सेवा में जुट गए। एक रोज स्कूल से लौटे तो देखा कुटिया खाली थी। पूछने पर पता लगा कि रोगी मर गया। इस कारण लोगों ने चंदा जमा करके उसका अंतिम संस्कार कर दिया। दत्त को यह सुनकर बड़ा दुख हुआ। कुटिया के बाहर बैठकर वे रोने लगे जैसे उनके परिवार का ही अभिन्न सदस्य रहा हो वह।

नैपाल बाबू को यह पता लगा तो वे दत्त के पास पहुंचे और उन्हें संसार की नश्वरता का बोध कराया। मरना तो सबको ही है इस संसार में। फिर इस विवश सत्य पर आंसू बहाने से क्या लाभ। उन्होंने दत्त से कहा: हम वही कर सकते हैं जो कुछ हमारी सामर्थ्य में है। भविष्य में देश का आदमी इस प्रकार निर्धन, असहाय और उपेक्षित होकर सड़क पर दम न तोड़े इसके लिए एक दत्त नहीं, समाज के हर व्यक्ति में यह परदुखकातरता उत्पन्न करने की जरूरत है और समाज में ऐसा भाव निर्माण करना ही हमारा 'धर्म' है।

नैपाल बाबू प्रसिद्ध विप्लवी सचिंद्रनाथ सान्याल के साथी थे, सान्याल जी आध्यात्मिक रंग मे रंगे हुए थे,उनके संपर्क से नैपाल बाबू पर भी अध्यात्म का वैसा ही प्रभाव पड़ा। सचिंद्रनाथ सान्याल का उस समय देश के क्रांतिकारी इतिहास में प्रमुख स्थान था। वह लॉर्ड हार्डिंग पर बम फेंकने वाले सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी रासबिहारी बोस के लेफ्टिनेंट थे। साल 1914-15 में पंजाब और बंगाल की क्रांतिकारी शाखाओं को सूत्रबद्ध करने के काम भी सान्याल जी ने ही किया था। अंग्रेज़ों ने उस सशस्त्र क्रांति को अति निर्दयता से कुचल दिया था। सैकड़ों क्रांतिकारी मौत के घाट उतार दिया गए थे। हज़ारों विपलवियों को जेल में ठूंस दिया गया था। सान्याल जी को भी उस प्रसंग में आजन्म कैद का पुरस्कार मिला था। दूसरे विश्वयुद्ध में विजयी होने पर जीत की खुशी में जब अंग्रेंजों ने अन्यान्य राजबंदियों को मुक्त किया तो सान्याल जी भी जेल से मुक्त हो कर बाहर आ गए।

जेल की विविध यातनाएं उनकी क्रांति भावना को कुचल न सकी और जेल मुक्त होते ही द्विगणित वेग से फिर स्वातंत्र्य युद्ध में कूद पड़े सान्याल जी का कार्यालय था तो बनारस में, लेकिन नैपाल बाबू की कर्मठता के कारण कानपुर इनकी गतिविधियों का विशाल केंद्र बन गया था और इस प्रकार दत सीधे सान्याल जी के संपर्क में आ गए।

जब घर से निकाल दिए गए

दो-तीन वर्ष बाद की घटना, कानपुर में भयंकर बाढ़ आ गई थी। सैकड़ों गांव बाढ़ की चपेट में आ गए। नैपाल बाबू और उसके साथी बाढ़ग्रस दुखी बंधुओं की सेवा में जुट गए। दत्त भी इस काम में आगे थे. एक दिन रात के समय दत्त को काम सौंपा गया कि वे लालटेन हाथ में लेकर नदी के किनारे घूमते रहे ताकि यदि कोई आदमी बहता हुआ जा रहा हो तो लालटेन का प्रकाश देख कर किनारे की ओर आने का प्रयत्न करे। दत्त रात भर नदी किनारे घूमते रहे। प्रात: घर पहुंच सीढियों पर चढते ही बड़े भाई ने क्रुद्ध हो डांट डपट की और कहा: 'वही जाओ जहां

रात बिताई है। अब इस घर में तुम्हारे लिए कोई स्थान नही है' और दत्त को पकड़ कर उनके कपड़े निकाल लिए गए। घर से निकाल दिया। नंगे पांव सिर्फ धोती पहन कर घर से निकल पड़े। थोडी दूर जाकर एक पेड़ के नीचे बैठकर सोचने लगे, मैंने कोई बुरा कार्य तो किया नहीं फिर यह प्रताड़ना!

इन घटनाओं ने दत्त के जीवन में क्रांतिकारी परिर्वतन ला दिया। अन्याय के प्रति निरंतर विद्रोह की प्रकति अब दब्ठ में पनप उठी। समाज में व्याप्त अन्याय, उत्पीड़न, शोषण के विरोध में संघर्षरत हो गए। फिर उस क्रूर विदेशी शासक के विरूद्ध भी जो निरंतर लूट खसोट द्वारा देश को निर्धन बना रहा था। दत्त में एक तड़पन उठी। क्रांति के लिए सर्वस्व समर्पण की भावना प्रबल हुई। घर का व्यामोह तो दत्त का टूट ही चुका था। केवल उन्हें अपनी माँ की चिन्ता थी। थोड़े दिन बाद उनकी माता जी गंभीर रूप से बीमार पड़ गई। उन्होनें दत्त से इच्छा प्रकट की कि उन्हें काशी तीर्थ यात्रा पर ले चलें। वे वही प्राण त्यागना चाहती थी। दत्त उन्हें काशी ले चले। वहां उनके एक संबंधी रहते थे। खुफिया पुलिस तो दत के पीछे बहुत पहले से पड़ी हुई थी। दत्त के काशी पहुंचने से पहले खुफिया पुलिस के अधिकारियों ने उनके संबंधी को धमकी दी। अपनी माँ को लेकर दत्त अपने संबंधी के घर पहुंचे तो उन्होनें सारा विवरण सुनाया और ठहराने से इंकार कर दिया। विवश हो दत्त मां को एक मठ में ले गए और उनकी माँ ने इस मठ में ही प्राण त्यागे। अब दत्त बंधन मुक्त थे। दत्त की आयु इस समय केवल 16-17 वर्ष की थी। परिवार और समाज के कठोर आघातों से दत्त का मन पहले ही वित्लवी बन चुका था। अब वे पूर्ण मुक्त थे। एकमेव अंतिम बंधन से भी। वह बंधन मां का ही था। अत: काशी से सीधे वे क्रांतिकारी कार्यालय पहुंचे।

स्रोत: पत्रिका ''फिलहाल'' (जुलाई 2022)

पृष्ठ 28 का शेष में लेकर तख्त-ए-मौत की ओर गए, लेकिन भगत सिंह फांसी घर की तरफ प्रस्थान करने से पहले लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे और उन्होंने 'इंकलाब जिंदाबाद' का उद्घोष किया। सवाल नास्तिकता के उस चिंतन का है जो कमोवेश राजेंद्र लाहिड़ी और फिर मन्मथनाथ से होता हुआ राधामोहन गोकुल और भगत सिंह तक पहुंचकर पूर्ण उपसंहार के रूप में क्रांतिकारी आंदोलन को उन दिनों धर्मनिरपेक्षीय जामा पहनाने में कामयाब हुआ। राधामोहन गोकुल ने 1925-26 में ईश्वर का बहिष्कार और 1932 में धर्म और ईश्वर जैसे लेख लिखे जबकि भगत सिंह 1931 में अपनी फांसी से पहले 'मैं नास्तिक क्यों हूं' लिखकर उस मुकाम तक पहुंचे।

कांग्रेस के आंदोलन में गांधी की ईश्वरीय आस्था और उसके प्रदर्शन ने इस दल को धर्मनिरपेक्षीय चिंतन की ओर ले जाने में निरंतर अवरोध का काम किया। जवाहर लाल नेहरू जरूर गांधी-चिंतन से भिन्न धर्म के मसले पर सर्वधा वैज्ञानिक ढंग से सोच रहे थे। उन्होंने कहा भी कि 'वह' (गांधी) राजनीतिक समस्या को धार्मिक और भावुकतापूर्ण दृष्टि से देखते हैं और समय-समय पर ईश्वर को बीच में लाते हैं, यह देखकर मुझे उन पर गुस्सा भी आया। उनके वक्तव्य से तो ऐसी ध्वनि निकलती थी कि शायद ईश्वर ने उन्हें अनशन की तारीख तक सुझा दी थी।

ऐसी मिसाल पेश करना कितना भयंकर होगा। गांधी को जेल से लिखे एक तार में नेहरू लिखते हैं कि मैं धार्मिक दृष्टिकोण से निर्णय करने में असमर्थ हूं। नेहरू आजादी के बाद भी निरंतर धर्म और राजनीति के घालमेल से विलग बने रहे। उनका दृष्टिकोण सर्वथा अनीश्वरवादी और धर्मनिरपेक्ष था।

97608 75491

अशिक्षित

''सबसे निकृष्ट अशिक्षित व्यक्ति वह होता है जो राजनीतिक रूप से अशिक्षित होता है। वह सुनता नहीं, वह बोलता नहीं, राजनीतिक सरगर्मियों में हिस्सा नहीं लेता। वह नहीं जानता कि जिन्दगी की कीमत, सब्जियों, मछली, आटा, जूते और दवाओं के दाम तथा मकान का किराया, यह सब कुछ राजनीतिक फैंसलों पर निर्भर करता है। राजनीतिक अशिक्षित व्यक्ति इतना घामड़ होता है कि इस बात पर घमण्ड करता है और छाती फुलाकर कहता है कि वह राजनीति से नफ़रत करता है। वह कूढ़मगज़ यह नहीं जानता कि उसकी रातनीतिक अज्ञानता एक वेश्या, एक परित्यक्त बच्चें और चोरों में सबसे बड़े चोर- एक बुरे राजनीतिज्ञ को जन्म देती है जो भ्रष्ट तथा राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का टुकड़खोर चाकर होता है।''

ब्रेटोंल्ट ब्रेष्ट

हरियाणा के बाद एम पी बना 'बाबाओं' का सबसे बड़ा अड्डा

सुनील कुमार

मध्यप्रदेश हिन्दुस्तान का 'बाबा' अड्डा लगता है। इस मामले में वह हरियाणा नाम के एक 'बाबा' अड्डे को टक्कर देता हैं। राजस्थान में एक बलात्कारी आसाराम का अड्डा चलता था जिसमें बलात्कार के शिकार भक्तों के परिवार का हाल देखते हुए भी दूसरे भक्त जानवरों की तरह बेदिमाग जुटते थे, और आज भी जुटते हैं। ऐसा ही हरियाणा में कई बलात्कारी और हत्यारे 'बाबाओं' का हाल है जिनकी दुकानें उनके जेल में रहने के बाद भी दूर छत्तीसगढ़ के सरकारी मेलों तक में चल रही हैं, और साबित कर रही है कि हत्या या बलात्कार जैसे जुर्म किसी को सरकारी मेलों में स्टॉल लगाने से नहीं रोक सकते। ऐसे माहौल में मध्यप्रदेश के कुछ बाबाओं का ऐसा बोलबाला है कि वहां से राजनीति को रास्ता मिलते दिखता है। प्रदेश की दोनों बड़ी पार्टियों के नेता इन बाबाओं के पैरों पर पड़े रहते है, और सरकारें अपनी ताकत इनके पांव दबाने में झोंक देती है। हिन्दी के कुछ समाचार चैनल इन बाबाओं की मेहरबानी से रोटी पर लगाने के लिए घी-मक्खन और जैम कमाते हैं,और जिंदगी से निराश आम जनता इन्हीं बाबाओं में अपनी तमाम दिक्कतों का इलाज तलाशती फिरती रहती है।

ऐसे ही पाखंडी 'बाबाओं' का बोलबाला मध्यप्रदेश से रिस-रिसकर छत्तीसगढ़ तक में आ जाता है, और यहां पर कुछ कुख्यात भूमाफिया अपनी संदिग्ध कमाई से इन त्रिकालदर्शी 'बाबाओं' के आयोजन करते है, जिनमें इन 'बाबाओं' को भक्तों की भीड़ के कपड़ों में लगे दाग का राज भी दिखता है,यह एक अलग बात है कि आयोजक-माफिया का कोई जुर्म उन्हें नही दिखता। मध्यप्रदेश में अभी एक बाबा ने रूद्राक्ष बांटने का एक बखेड़ा खड़ा किया जिसमें लाखों लोग जुट गए, ऐसी भगदड़ मची दस-बीस किलोमीटर तक सड़के जाम हो गई, लेकिन बाबा 30 लाख रूद्रक्ष बांटने पर उतारू रहे, और वहां के मीडिया के मुताबिक जब इस भीड़ में मौत भी हो गई, तो भी यह बाबा राक्षसी हंसी के साथ मौत के बारे में कहते रहा कि मौत आनी है तो आएगी ही। सरकार का किसी तरह का कोई काबू इस तरह की भीड़ पर नहीं था क्योंकि तमाम बड़े राजनीतिक दलों के नेता ऐसे हर बाबा के चरणों की धूल पाने पर उतारू रहते हैं, जब तक कि वे बलात्कारी साबित न हो जाएं।

किसी भी बाबा की कामयाबी उस प्रदेश में न सिर्फ वैज्ञानिक सोच की कमी बताती है, बल्कि वह सरकार की नाकामी और लोकतंत्र की असफलता का एक संकेत भी होती है। जहां पर लोग सरकार और अदालत पर भरोसा करते हों, जहां पर जिंदगी की उनकी दिक्कतें निर्वाचित सरकारों से दूर होती हों, वहां पर कोई किसी बाबा के फेर में आखिर पड़ेंगे क्यों?

जब सरकारी इलाज किसी काम का नहीं रहता, लोगों में भरोसा पैदा नहीं कर पाता, तब जाकर लोग पाखंडियों के चक्कर में पड़ते हैं, जो अलग-अलग कई किस्म के धर्मों के चोले पहने हुए रहते हैं और अलग-अलग तरीके से लोगों को धोखा देते हैं। सरकारें भी ये चाहती हैं कि जनता बाबाओं के चक्कर में इस हद तक पड़ी रहें कि वे अपनी जिंदगी की दिक्कतों के लिए, बेइंसाफी के लिए सरकार पर तोहमत लगाने के बजाए अपने ही पिछले जन्मों के गिनाए जा रहे कुछ काल्पनिक कुकर्मों को जिम्मेदार मानें और सरकार को बरी करें। यह सिलसिला हिन्दुस्तान की आजादी से या लोकतंत्र से शुरू हुआ हो ऐसा भी नहीं है, यह सिलसिला तो कबीलों में तब से शुरू हो गया था जब सरदार ने किसी ओझा को तैयार किया था जो कि लोगों की जिंदगियों की मुश्किलों के लिए कुछ दुष्टात्माओं को जिम्मेदार ठहराता था। वहां से शुरू होकर आधुनिक धर्म को बनाने, ईश्वर की धारणा विकसित करने और फिर इस धर्म के एक विस्तार के रूप में तरह-तरह के बाबा, पादरी, मौलवी खड़े करने की यह साजिश नाकामयाब राजाओं की एक कामयाबी रही है, जो आज भी जारी है।

चाहे ईसाईयों की चंगाई सभा हो, चाहे जन्नत और जहन्नुम के सपने और डर दिखाकर लोगों को बरगलाने वाली तकरीरें हों, या फिर आज के बाबाओं के आए दिन होने वाले भगवा जलसे हों, इन सबका मकसद सिर्फ यही है कि किस तरह लोगों की दिक्कतों के लिए जिम्मेदारी सरकार पर आने के बजाय उसे लोगों के तथाकथित पाप के सिर मढ़ा जाए, किस तरह चमत्कार को एक इलाज और समाधान बताया जाए, किस तरह ***शेष पृष्ठ 41 पर***

कविता

जुल्म के खिलाफ तनी हर मुट्ठी कविता है

बिन्दर

कुछ लोग समझते है
कविता को हथियार
सोचते हैं कि कविता खुद लड़कर
अपना रास्ता निकाल लेगी
पर यह कभी संभव नहीं
कविता हथियार तब है
जब लड़ने वाले हाथों से लिखी जाए
कविता हुंकार तब है
जब भूखे पेट से निकले!
पर लड़ने वाले हाथ आखिर हैं कहां?
कहां हैं वो जो जुल्म के खिलाफ
लहराते हाथ और तनी मुट्ठियां?

कुछ लोगों को भ्रम रहता हैं
कि कविता सिर्फ और सिर्फ
कलम से ही लिखी जा सकती हैं
वो लोग कविता तक कभी
पहुंच ही नही पाते...!
उठा लेते हैं इधर-उधर से
बिखरी हुई जूठन
और मान लेते है उसी को कविता!
पर सच तो यह है
कि वे कविता से बहुत दूर होते है!

कविता ऊंची कुर्सी पर विराज हो
नहीं आती कभी
मोटी तनख्वाहें भी कविता को
नहीं भाती कभी!
कविता बसती नहीं कभी
एयर कंडीशन महल-चौबारों में
चौंधियाती रौशनियों वाले बंगलों में
होटल पाँच सितारों में !
ना किताबों में, ना रोगों में
ना मिलती हाट-बाजारों में
सच्ची कविता वो मेरे दोस्त
जो ना बिकती सता के गलियारों में !
कविता सिर्फ कलम से नहीं लिखी जाती
कविता वहां होती है
जहां बदलाव की जरूरत होती है
और वो बदलाव लाने के लिए
जहां जागरूक जनशक्ति होती है
जो लिख देती है कविता
अपने खून से!

भूखे पेट के पैरों में
बंधे घंघुरू की
झंकार कविता है
सूदखोर की बही में कैद
बापू के अंगूठे को याद कर आई
वो हुंकार कविता है
अखबार के पन्ने पर बहते
बेरोजगारों के आंसुओं की
वो धार कविता है
भूखी मजदूरन की
सूखी छाती से चिपटे बच्चे की
दूध के लिए रार कविता है!

जुल्म के खिलफ उठी,
हर आवाज़ कविता है
हर साज कविता है
जुल्म के खिलाफ तनी
हर मुट्ठी में कविता है

बेहद पतली गली है
उधर
कार नहीं जाती

और चूंकि कार नहीं जाती
इसलिए
उधर कभी सरकार नहीं जाती।
- प्रशांत सागर

धर्म के ठेकेदारों

वतनप्रीत

ए धर्म के ठेकेदारों
मज़हबों की मंडी में
अपना अपना मज़हब बेचने वालों
मुबारक हो तुम्हें।
तुम्हारा मज़हब बढ़ रहा है
और नफ़रत की आग से
मेरा शहर जल रहा है।
मेरे शहर के मज़दूर
अब भी रोटी के लिए लड़ रहे
तो वहीं
धर्म के ठेकेदार
धर्म के नाम पर
लोगों को हैं ठग रहे।
कहीं राम के नाम पर
अखलाक को मारा जा रहा
तो कहीं अल्लाह के नाम पर
कोई कनहइया जान गंवा रहा।
इन फिजाओं में अब
नफरत का ही शोर है
कह रही हर जुबान
तेरी धरती और
मेरी धरती कहीं और है।
भूल गए हम शायद
संतालीस की दर्दनाक कहानियां
चरासी में खून से रंगी
दिल्ली की गलियां ।
चारों दिशाओं में जब
नफरत का ही जोर था
मज़हब के नशे में
हर कोई मदहोश था।
मेरी एक नसीहत है
धर्म के ठेकेदारों को
देश के चौकीदारों को
जख्म जो अभी भरे नहीं
उन जख्मों को मत कुरेदिए
नफ़रत की आग पर
मत सियासी रोटियाँ सेकिए ।

पृष्ठ 21 का शेष इसलिए इन्होंने भारतीय लोकतंत्र के प्रतीक तिरंगे को कभी भी स्वीकृति नहीं दी। हर धर्म में धार्मिक बुनियाद परस्ती के रूझान हमेशा मौजूद रहते है। किसी भी धर्म को मानने वालों का एक छोटा हिस्सा यह स्वीकार करता है कि दूसरे धर्म के साथ आपसी मेलजोल और भाईचारा बनाए रखना चाहिए। ऐसे लोग उदारवादी कहे जाते है जो जिंदगी में तर्क और निजी जिंदगी की भूमिका को स्वीकार करते हैं। मगर दूसरे वह हैं जो अपने ही धर्म को सर्वश्रेष्ठ मानते है और दूसरे धर्मों को निर्गुणा और अर्थहीन कहते है। ऐसे लोग तर्क एवं निजी आजादी को महत्व नहीं देते। यह लोग अंधविश्वास, कर्मकांड, परंपरा, मर्यादा आदि पर ज्यादा जोर देते हैं, इन्हीं लोगों को बुनियाद प्रस्त कहा जाता है।

उदारता एवं कटरता में यह जंग चलती रहती है पर इतिहास के कई निर्णायक मोड़ों पर बुनियाद प्रसत हावी हो जाते है। ऐसे होने से समाज में आपस में द्वेष भरने लगता है। छोटे या बड़े स्तर पर कत्लेआम या नस्लकुशी जैसी घटनाएं घटती रहती है और बहुत बार देशों में बटवारा हो जाता है।

असल में यही बुनियाद परस्त ताकतें भारत के बटवारे की जिम्मेंवार हैं। पंजाब के संदर्भ में सिख बुनियाद पस्त भी बराबर के जिम्मेंदार है। पर सिख नेता फरवरी–मार्च 1947 के बाद इस हालत को समझ पाते है कि अब बटवारा होकर रहेगा।

आज धर्म के आधार पर बने पाकिस्तान में मुस्लिम कट्टरपंथियों ने पाकिस्तान को बर्बादी के कगार पर पहुंचा दिया है। हिंदू और मुसलमान भारत में सबसे बड़े धर्म है। इस समय प्रमुख तौर पर भारत में हिंदू कट्टरपंथ की तरफ से सामाजिक सौहार्द को चुनौती दी जा रही है। देश में तर्क के लिए जगह घटती जा रही है। भारत के संविधान में मिले बुनियादी अधिकारों को भी खतरा हो रहा है। सत्ता रूढ़ीवादी कट्टरपंथियों का साथ दे रही है जो इतिहास में आमतौर पर होता रहा है। प्रगतिशील, समाजवादी, अंबेडकरवादी और तर्कशील शक्तियां मुकाबल तन कमजोर है और बिखरी हुई हैं। आज समाज की जरूरत है कि यह सभी शक्तियां आपस में तालमेल बिठाएं और भारत समेत पूरे भारतीय उपमहादीप की रूढीवादी कट्टरपंथी शक्तियों को चुनौती दें।

भूतपूर्व, मुखी संगठन विभाग
तर्कशील सोसायटी, पंजाब
98726 58711

वे हमारी बेटियां हैं

स्वराजबीर

समाज में विचरण करते हुए कई तरह के लोग मिलते हैं। दो-तीन दिन पहले एक सज्जन से मुलाकात हुई। बातचीत में उन्होंने दिल्ली में महिला पहलवानों के विरोध प्रदर्शन का जिक्र किया। मैंने उन्हें बताया कि हमारे अखबार ने उनके बारे में खबरें छापी हैं। उन्होंने बीच में टोका और पूछा, ''क्या आप वहां गए हैं?'' मैंने कहा, ''नहीं, लेकिन हम पत्रकारों और एजेंसियों की खबरें छाप रहे हैं।'' हमने दोनों पक्षों का पक्ष लिया है। उन्होंने पूछा, ''दूसरा पक्ष कौन सा?'' मैंने कहा कि एक तरफ महिला पहलवान हैं और दूसरी तरफ बृजभूषण शरण सिंह। उस सज्जन ने कहा, ''क्या कह रहे हो ? वे हमारी बेटियां हैं। आप वहाँ क्यों नहीं गए ?'' मैंने उससे पूछा कि क्या वह वहाँ गया था। उसने कहा कि उसे छुट्टी नहीं मिल रही है लेकिन छुट्टी मिलते ही वह वहां जाएगा। बातचीत समाप्त हुई ।

बातचीत तो समाप्त हो गई लेकिन मेरे कानों में यही विचार गूँज रहा है, 'वे हमारी बेटियाँ हैं।' उस सज्जन की आवाज में गहरी पीड़ा और दुख था, निराशा थी। शायद अपने वहां (जंतर-मंतर) न पहुंच पाने का दर्द या फिर यह दर्द कि मानवाधिकारों के पक्ष में आवाज उठाने वाले तमाम लोग जंतर-मंतर क्यों नहीं पहुंच रहे हैं? शायद यह वाक्य बहुत से लोगों के कानों में गूंज रहा है। लोग विरोध करने वाली महिला पहलवानों से संपर्क कर रहे हैं और उनके विरोध प्रदर्शन में शामिल हो रहे हैं। उनके साथ एकजुटता व्यक्त कर रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक जीत चुकीं खिलाड़ी विनेश फोगाट और साक्षी मलिक उनकी अगुवा हैं। पुरुष पहलवान और अन्य खिलाड़ी भी उनका साथ दे रहे हैं।

इन पहलवानों ने जनवरी में भी धरना लगाया था। इसके बाद एक जांच समिति का गठन किया गया और उन्हें आश्वासन दिया गया कि उनके साथ न्याय किया जाएगा। उन्होंने (महिला पहलवानों ने) उस वायदे पर विश्वास किया और धरना उठा लिया लेकिन उनका कहना है कि उन्हें न्याय नहीं मिला; उन्हें धोखा दिया गया।

उन्हें फिर से धरने पर बैठना पड़ रहा है। कुश्ती महासंघ के अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ भी मामला स्वत: दर्ज नहीं हुआ। ललिता कुमारी मामले में, सुप्रीम कोर्ट ने नवंबर 2013 में निर्देश दिया था कि अगर शिकायत में गंभीर अपराध के अंश शामिल हैं तो तुरंत मामला दर्ज किया जाना चाहिए; उसके लिए प्रारंभिक जांच की जरूरत नहीं है, लेकिन दिल्ली पुलिस ने मामला दर्ज नहीं किया और कहा कि वह (दिल्ली पुलिस) प्रारंभिक जांच कर कार्रवाई करेगी। महिला पहलवानों को केस दर्ज कराने के लिए सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाना पड़ा। सुप्रीम कोर्ट के दखल के बाद मामला दर्ज होना दिखाता है कि महिला पहलवानों का मुकाबला कितनी शक्तिशाली ताकतों के साथ है। सदियों से हमारे समाज के हालात ऐसे ही रहे हैं; सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक पुरुष-नेता बेटियों के साथ अन्याय करते रहे हैं, जैसा कि 350 साल पहले वारिस शाह ने पंजाब की बेटी हीर के पक्ष में लिखा था, ''शेखों की दाढ़ी, कसाइयों की छुरी/पंचायत में बैठ पंच कहलाते हैं।'' जुल्मी व अत्याचारी समाज के नेता/पंच बन जाते हैं।

यह धरना इसलिए दिया जा रहा है क्योंकि पहला धरना विफल हो गया था। असफलता के बाद फिर से संघर्ष करने के लिए बहुत साहस और समर्पण की आवश्यकता होती है। वैसे भी हमारे समाज में महिलाएं अक्सर अपने अधिकारों के लिए लड़ने से परहेज़ करती हैं। एक महिला जो अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए खड़ी होती है, वह शुरुआत में बहुत अकेली होती है। उसे समझाया जाता है कि अपने अधिकारों के लिए लड़ने का कोई मतलब नहीं है; ऐसा करने से उसकी बदनामी होगी; यह सामाजिक शिष्टाचार के विपरीत है; ऐसा करना अच्छी बेटियों को शोभा नहीं देता। अच्छी बेटियों को क्या शोभा देता है? अगर हम सामाजिक समझ की आवाज सुनें तो अच्छी बेटियों को अपने खिलाफ हर ज्यादती सहन कर लेनी चाहिए; मन से उठने वाली आवाज को मन में ही दबा देना चाहिए। सामाजिक मानसिकता के चरित्र को देखें तो पता चलता है कि जो नारी अपने अधिकारों के लिए उठ खड़ी होती है उसके पास बहुत हिम्मत होती है; उसके मन में घोर अंतर्द्वन्द्व होता है कि मैं अपने साथ हुए अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाऊँ या न; उसके मन में तरह-तरह के विचार और प्रश्न उठते हैं, 'चुपचाप

सहने और 'इज्जत' बनाए रखने में ही भलाई है; जो होना था सो हो गया।'' अधिकतर महिलाएं इस सोच को अपनाते हुए आवाज नहीं उठाती हैं। जो महिला इस सोच को खारिज कर अत्याचार और अत्याचारी के खिलाफ आवाज उठाने का फैसला करती है, वह बहुत बड़े खतरे को झेलती है।

जंतर-मंतर पर प्रदर्शन कर रही बेटियों ने बड़ा खतरा झेला है। हम देख सकते हैं कि उनसे क्या-क्या सवाल पूछे जा रहे हैं: इन महिलाओं ने तीन महीने पहले केस दर्ज क्यों नहीं करवाया? इन्होंने पहले आवाज क्यों नहीं उठाई ? उनकी मांगों के पीछे राजनीतिक एजेंडा क्या है ?

इन महिलाओं का राजनीतिक एजेंडा अपने शरीरों पर झेली पीड़ा का एजेंडा है। पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को हजारों मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। हमारे समाज में बेटियों के प्रति सबसे तीखी और छिपी हुई कुप्रथाओं में से एक है उन्हें समान इंसान नहीं बनने देना; उन्हें बताना कि वे अबला हैं; उन्हें सुरक्षा की जरूरत है और पुरुष उनकी रक्षा करेंगे। स्त्री में हीनता की भावना पैदा करना सबसे बड़ा सामाजिक और पारिवारिक अन्याय है। यह उसके अंदर आजीवन नाजुकता की भावना पैदा करता है जिससे वह अपने पैरों पर खड़े होने के लिए सहारे और मदद की तलाश करती रहती है; संघर्ष करने से घबराती/डरती रहती है।

जंतर-मंतर पर धरने पर बैठी महिलाओं ने अपनी अबला की प्रचलित धारणा को खारिज कर दिया है; अपने अस्तित्व पर विश्वास किया है। उन्नीसवीं सदी में पंजाबी की दलित शायरा पीरो ने आह्वान दिया था, ''आओ मिलो सखियो, मिल बैठ मसलित करें।'' मसलित से भाव मिल बैठ विचार-गोष्ठी करने से है। ये महिलाएं एक साथ बैठकर अपने हक के लिए आवाज उठा रही हैं। अमेरिकी कवयित्री माया एंजेलो ने कहा है, 'हर बार जब एक महिला अपने अधिकारों की रक्षा के लिए खड़ी होती है, बिना जाने, बिना दावा किए वह सभी महिलाओं के अधिकारों के लिए आवाज उठा रही होती है।'' जंतर-मंतर पर अपने अधिकारों के लिए आवाज उठा रही महिलाएं देश भर की महिलाओं के अधिकारों के लिए आवाज उठा रही हैं। परिचित सज्जन के शब्द मेरे कानों में गूंजते हैं, ''वे हमारी बेटियाँ हैं।''

महिलाएं सदियों से संघर्ष कर रही हैं। सोजॉर्नर ट्रुथ (कानूनी नाम इसाबेला वॉन वैगनर), 18वीं और 19वीं शताब्दी के दौरान अमेरिका में गुलामी झेल रही लाखों अश्वेत महिलाओं में से एक, गुलामी के खिलाफ लड़ी, खुद को मुक्त किया और अपने बेटे को एक सफेद मालिक की गुलामी से मुक्त करवाने वाली पहली महिला बनीं। 1851 में, ओहियो में एक महिला अधिकार सम्मेलन में, उन्होंने एक भाषण दिया, ''क्या मैं एक महिला नहीं हूँ?'' सम्मेलन में, अपनी दाहिनी भुजा दिखाते हुए, उन्होंने कहा, ''मैंने हल चलाया है, फसलें लगाई हैं, और बड़े खलिहानों/दालानों की साफ-सफाई की है और कोई भी आदमी मेरा मुकाबला नहीं कर सकता। क्या मैं एक महिला नहीं हूँ ? मैं किसी भी आदमी की तरह काम कर सकती हूं और अगर मुझे भरपेट खाना मिल जाए तो मैं उसके (आदमी) जितना खाना खा भी सकती हूं और कोड़े भी सह सकती हूं। क्या मैं औरत नहीं हूं ?''

जंतर-मंतर पर बैठी महिलाएं भी ऐसा ही सवाल पूछ रही हैं, जो मेरे परिचित सज्जन के सवाल में छिपा है, ''क्या हम आपकी बेटियां नहीं हैं?'' देश की सभी लोकतांत्रिक ताकतों को इन बेटियों के पक्ष में आवाज उठानी चाहिए। जैसा कि पंजाबी कवि अशक रहील कहते हैं, ''चलो उन पदचिन्हों को देखें जो हमें मंजिल तक ले जाते हैं।'' इन महिलाओं के ये कदम सामाजिक समानता की ओर बढ़ते कदम हैं; ये कदम लोकतंत्र के कारवां की पहचान बनने वाले हैं। देश की लोकतांत्रिक ताकतों को इन कदमों में शामिल होना चाहिए। देश की बेटियों के अधिकारों से बड़ा संवेदनशील मुद्दा कोई नहीं हो सकता। अगर हम उसमें संवेदना महसूस नहीं करते हैं तो हम खुद को क्या मुंह दिखाएंगे ?

(यह लेख पहलवानों द्वारा जन्तर-मन्तर पर दिए जा रहे धरने के दौरान लिखा गया था जो कि खिलाड़ियों द्वारा नए संसद भवन के उद्घाटन अवसर पर महिला संसद में भाग लेने के लिए निकाली जा रही यात्रा के समय दिल्ली पुलिस द्वारा बर्बरतापूर्ण कार्रवाई करते हुए धरना स्थल पर तोड़-फोड़ करके टैंट इत्यादि सामान जब्त कर लेने के कारण वहां से धरना समाप्त करा दिया गया था। लेकिन आंदोलन अभी भी जारी है व खाप पंचायतों तथा किसान संगठनों द्वारा आंदोलन को समर्थन दिए जाने के बाद भविष्य ही तय कर पाएगा कि इंसाफ की इस लड़ाई में न्याय रूपी ऊंट किस करवट बैठता है)

संपादक, पंजाबी ट्रिब्यून, चंडीगढ़।
अनुवाद- कृष्ण कायत, मंडी डबवाली।

तर्कशील सोसायटी पंजाब का प्रांतीय प्रतिनिधी सम्मेलन

सुमीत सिंह अमृतसर

समाज में व्याप्त अंधविश्वास, बहम-भ्रम, कथित चमत्कारों, पाखण्डी बाबाओं, सामाजिक कुरीतियों तथा हर प्रकार की अवैज्ञानिक परिघटनाओं के विरुद्ध वैज्ञानिक चिंतन के प्रचार व प्रसार तथा जनपक्षीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन के लिए पिछले 39 वर्षों से लगातार संघर्ष कर रही तर्कशील सोसायटी पंजाब का एक दिवसीय प्रांतीय प्रतिनिधी सम्मेलन तर्कशील भवन बरनाला में दिनांक 30-4-2023 को सम्पन्न हुआ जिसमें पंजाब के 10 जोन की 67 इकाईयों के 163 प्रतिनिधी एवं 47 दर्शक शामिल हुए।

इस अवसर पर प्रथम सत्र की शुरुआत से पूर्व अमृतपाल बुढलाडा, जोगा सिंह चंडीगढ़, दीप दिलबर, राम सिंह निर्माण, सुखविन्द्र खारा एवं जसपाल बासरके के द्वारा क्रांन्तिकारी गीत तथा प्रगतिशील कविताएं प्रस्तुत की गई।

प्रथम एवं द्वित्तीय सत्र के अध्यक्ष मंडल में हेम राज स्टेनो, सुखविन्द्र बागपुर, बलबीर लौंगोवाल, राजपाल सिंह, राम स्वर्ण लखेवाली तथा गुरप्रीत शहणा शामिल रहे। इस में राज्य कार्यकारिणी की तरफ से गुरप्रीत शहणा द्वारा पिछले सत्र की द्विवार्षिक रिव्यू रिपोर्ट तथा आगामी दो वर्ष कार्य-योजनाबंदी का खाका प्रस्तुत किया गया। इन दोनों रिपोर्टों पर अगल-अलग जोनों एवं इकाईयों से संबंधित प्रतिनिधियों राजवंत बागड़िया, मा. परमवेद, सुरजीत टिब्बा, जसवन्त जीरख, गुरमीत खरड़, राम कुमार पटियाला, मास्टर तरलोचन समराला, बलबीर लौंगोवाल, प्रवीण जंडवाला, भूरा सिंह महमा सरजा, जुझार लौंगोवाल, गगन रामपुरा, सुखविन्द्र बागपुर, मास्टर जगदीश, मुखत्यार गोपालपुर, कुलविन्द्र नगारी, जोगिन्द्र कुलेवाल, प्रो. मनजीत सिंह, डा. मजीद आज़ाद, अजायब जलालाना, जसवीर सिंह, सतनाम दाऊं, विश्व कांत सुनाम, हरचन्द भिंडर, संदीप धारीवाल भोजा, जसविन्द्र फगवाड़ा, सोहन माझी, संदीप कुमार दर्दी, नसीब चंद बब्बी, जसपाल बासरके, जोगा सिंह तथा सुरेंद्रपाल फगवाड़ा आदि ने रचनात्मक विचार-विमर्श करते हुए तर्कशील साहित्य वैन के वार्षिक कार्यक्रम की वार्षिक कार्ययोजना बनाने, तर्कशील मैगजीन की ग्राहक संख्या बढ़ाने, विद्यार्थी चेतना परख परीक्षा में समस्त इकाईयों की भागीदारी सुनिश्चित करने, तर्कशील टी.वी. कानून विभाग एवं सोशल मीडिया विभाग के और अधिक सरगर्म करने क साथ-साथ इकाई स्तर की मीटिंग, पाठक मिलनी, चेतना सेमिनार तथा प्रशिक्षण कार्यशालाओं की निरंतरता बनाए रखने आदि क्षेत्रों में और अधिक सरगर्म होने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया। इसके अलावा देश में दिनों-दिन बढ़ रहे अंधविश्वास, धार्मिक कट्टरपन, डेरावाद, बाबावाद, जनतान्त्रिक अधिकारों का उल्लंघन, शिक्षा में बढ़ रहे भगवाकरण, व्यापारीकरण तथा देश में बढ़ रहे सांप्रदायिक फासीवाद के हमलों के खिलाफ तर्कशील सोसायटी के द्वारा समाज में वैज्ञानिक एवं वर्ग चेतना की लहर को और अधिक तेजी के साथ विकसित करने के अतिरिकत प्रांत में अंधविश्वास विरोधी कानून लागू करवाने के लिए सांगठनिक तौर पर प्रयत्न और अधिक तीव्र करवाने का निर्णय लिया गया। इस सत्र में मंच का संचालन राम स्वर्ण लक्खेवाली द्वारा किया गया।

द्वित्तीय सत्र में रिव्यू रिपोर्ट के विषय में 13 विभागों के प्रमुखों द्वारा पिछले सेशन में रह चुकी कमियों, कमज़ोरियों तथा प्रतिनिधियों के सुझावों से संबंधित अपना पक्ष रखते हुए कहा कि जनपक्षीय वैज्ञानिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक बदलाव के लिए सोसायटी की इकाईयों एवं जोनों को लगातार प्रशिक्षण कार्यशालाओं एवं सेमिनारों के द्वारा और अधिक सरगर्म करना चाहिए। राज्य कार्यकारिणी के फैसलों एवं कार्य योजना को इकाई के स्तर पर लागू करवाने के लिए प्रान्तीय एवं ज़ोन के आगुओं के द्वारा विशेष प्रयत्न किये जाने चाहिएं। इस के साथ साथ देश में धार्मिक प्रतिक्रियावाद की राजनीति करने वाली सांप्रदायिक शक्तियों के द्वारा वैज्ञानिक विचारधारा एवं तर्कशील संसथाओं पर किये जा रहे हमलों एवं अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता पर लगाई जा रही पाबंदियों का मुकाबला करने के लिए समान विचारधारा एवं जनतान्त्रिक संगठनों के साथ साझा सरगर्मियां करने की जरूरत पर भी बल दिया गया। इस अवसर पर मंच संचालन गुरप्रीत शहणा द्वारा किया गया। इस अवसर पर तीसरे एवं

अन्तिम चुनाव सत्र में आगामी दो वर्षों के लिए 13 सदस्यों की नईं प्रांतीय कार्यकारिणी का चुनाव किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता राज्य कमेटी नेताओं मा. राजेन्द्र भदौड़, राजेश अकलिया, अजायब जलालाना, डा. मजीद आज़ाद, जसवन्त मोहाली तथा जुझार लौंगोवाल द्वारा की गई। मंच का संचालन मा. राजेन्द्र भदौड़ के द्वारा किया गया। इस अवसर पर कानून विभाग एवं सोशल मीडिया विभाग के चुनाव बहुमत के आधार पर हुए जबकि 11 विभागों के चुनाव सर्वसम्मति के साथ हुए। इस चुनाव में सांगठनिक विभाग के लिए मा. राजेन्द्र भदौड़, वित्त विभाग राजेश अकलिया, सांस्कृतिक विभाग जोगिन्द्र कुलेवाल, मीडिया विभाग सुमीत अमृतसर, संपादकीय विभाग बलबीर लौंगोवाल, साहित्य विभाग हेम राज स्टेनो, प्रिंटिंग विभाग राजपाल सिंह, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय तालमेल विभाग जसवन्त मोहाली, मानसिक स्वास्थ्य परामर्श विभाग अजीत प्रदेसी, कानून विभाग जसविन्द्र फगवाड़ा, विद्यार्थी चेतना विभाग राम स्वर्ण लखेवाली, साहित्य वैन विभाग गुरप्रीत शहणा तथा सोशल मीडिया विभाग के लिए संदीप धालीवाल भोजा आगामी दो वर्षों के लिए चुने गए।

इस अवसर पर तर्कशील लहर के विकास में लगातार सब से अधिक योगदान देने वाले चण्डीगढ़ जोन के आगू जरनैल क्रान्ति को लाईफटाईम अचीवमेंट पुरस्कार के साथ सम्मानित किया गया। इसके इलावा व्यक्तिगत स्तर पर सब से अधिक ''तर्कशील'' पत्रिका के सदस्य बनाने के लिए रोपड़ इकाई के आगू अजीत प्रदेसी तथा इकाई स्तर पर बठिंडा इकाई को तथा चौथी विद्यार्थी चेतना परख परीक्षा में सब से अधिक विद्यार्थियों को सम्मिलित करवाने के लिए पटियाला इकाई के साथियों को सम्मान पत्र एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर समस्त सम्मेलन के द्वारा जंतर-मंतर दिल्ली में शारीरिक एवं मानसिक शोषण के विरुध धरना-प्रदर्शन कर रहे महिला व पुरुष पहलवानों का समर्थन करते हुए केन्द्र सरकार से उन्हें उचित एवं शीघ्र न्याय देने की ज़ोरदार मांग की गई। इसके अलावा एन.सी.आर.टी. द्वारा पाठ्क्रम में से डार्विन के जीव-विकास के सिद्धान्त तथा अन्य वैज्ञानिक चिंतन वाले विषयों को पाठ्यक्रम से बाहर निकालने के विरुद्ध, जन विरोधी राष्ट्रीय शिक्षा-नीति 2020 को तुरन्त प्रभाव से रद्द करने, पंजाब में अंधविश्वास निरोधक कानून शीघ्र बना कर लागू करने, अपनी सजा पूर्ण कर चुके समस्त कैदियों तथा झूठे केसों में नाज़ायज तौर पर बन्द बुद्धिजीवियों व सामाजिक कार्यकर्ताओं को बिना शर्त तुरन्त रिहा करने, निर्दोष आदिवासियों पर हवाई हमले तथा अंधाधुंध नाज़ायज ग्रिफतारियां बन्द करने, औपनिवेशिक काले कानूनों यू.ए.पी.ए, एन.एस.ए., पी.एम.एल.ए. तथा अफस्पा को समाप्त करने, किसानों-मजदूरों को बेमौसमी बरसात के कारण हुए नुकसान का तुरन्त उचित मुआवजा देने, जलियांवाला बाग के मूल स्वरूप को बहाल करने तथा नाटककार गुरशरण सिंह के पैत्रिक घर को सांस्कृतिक विरासत का दर्जा देने की मांग करने से संबंधित विशेष प्रस्ताव भी पारित किये गये।

इस सम्मेलन में शामिल इकाईयों के प्रतिनिधियों के अलावा कुछ अन्य दर्शक सदस्यों ने भी भाग लिया। सम्मेलन में प्रतिनिधियों की रजिस्ट्रेशन के लिए तर्कशील कार्यकर्ताओं हेम राज स्टेनो, राजेश अकलिया, बलराज मौड़, भीम राज बरनाला तथा मक्खन भोतना द्वारा उचित प्रबन्ध किये गये। सम्मेलन में खान-पान एवं चाय-पान के प्रबन्ध की जिम्मेदारी राजेश अकलिया द्वारा बाखूबी निभाई गई। इस प्रकार यह प्रतिनिधी सम्मेलन तर्कशील लहर का दायरा और अधिक विशाल करने तथा एक स्वस्थ समाज व संस्कृति के निर्माण की शपथ लेता हुआ समाप्त हुआ।

हिन्दी अनुवादः बलवन्त सिंह लेक्चरार
76960 30173

पृष्ठ 25 का शेष हृदय, सांस, सहित पूरे शरीर की सही ढंग से जांच हो सके, एवम् सही इलाज हो सके।

बिजली गिरने से पीड़ित मरीज़ को गोबर से भरे गड्ढे में गाड़ कर रखना, झाड़ फूंक करना, उसे ठंडे पानी से नहलाना उस मरीज के स्वास्थय के साथ, अंधविश्वास तथा आपराधिक लापरवाही है, इससे उस प्रभावित मरीज की बचने की संभावना कम हो जाती है। बल्कि शासन को ऐसे स्थानों को चिन्हित कर वहां बरसात के मौसम में कम से कम 10 बिस्तरों का इंटेंसिव केयर यूनिट बना कर त्वरित चिकित्सकीय सहायता उपलब्ध करानी चाहिए तांकि लोगों की प्राण रक्षा की जा सके।

नेत्र विशेषज्ञ
अध्यक्ष अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति

अंतर

शविंदर कौर

कई दिनों से लगातार पड़ रही कड़ाके की ठंड ने जनजीवन को बुरी तरह प्रभावित किया हुआ है। बच्चों और बुजुर्गों का घर से निकलना मुश्किल हो गया है। सरकार ने भी अत्यधिक ठंड के मौसम कारण स्कूलों की छुट्टियां बढ़ा दी हैं। बच्चों को यूं ठंड से 'बचाने का तरीका' अच्छा लगा। बच्चे ही हैं जो हमारे जीवन में खुशियां और आनंद लाते हैं। उनकी भोली बातें, शरारतें और मासूम मुस्कान हमारे जीवन में रंग भर देती हैं।

बचपन जिंदगी का सबसे खूबसूरत और यादगार सफर होता है। मां-बाप का प्यार, बचपन के दोस्तों के साथ खेले गए खेल, साथ में की गई शरारतें और स्कूल की मस्ती जिंदगी के आखिरी पहर तक याद रहती हैं । बचपन की इन मीठी यादों में खोई हुई थी कि घंटी की आवाज ने फिर से यथार्थ में ला दिया। जब मैं बाहर निकली तो देखा कि सफाईकर्मी का दस साल का लड़का अपने से लंबी झाड़ू से सड़क पर झाड़ू लगा रहा था। शायद उसने ही घंटी बजाई थी। मुझे देखकर उसने झाड़ू देना बंद कर दिया और मैं कुछ पूछ पाती, इसके पहले ही वह बोला, "पापा को बुखार हो गया है, इसलिए आज मैं गली में झाड़ू लगाने आया हूं। बीबी जी, ठंड लग रही है, चाय पिला दो।"

"चाय तो मैं बना देती हूँ, पर तूं छोटे सा बच्चा इतनी ठंड में क्यों आया है, अपने बड़े भाई को भेज देना था।" मैंने बिना पूछे ही उसे सुझाव दिया।

"वह तो चाय की दुकान पर काम लगा हुआ है। सुबह जल्दी काम पर चला जाता है।"

मैं चाय बनाते हुए सोच रही थी कि इस देश में हर कोई ऐसा नहीं है कि जिसका बचपन तेरे द्वारा चित्रित बचपन जैसा हो! हमारे समाज में एक तबका ऐसा भी है जिसके बच्चों का बचपन कौड़ियों के भाव बिक जाता है। जिन नन्हें हाथों में किताब होनी चाहिए, वे ढाबों पर गंदे बर्तन धो रहे होते हैं। बच्चे जब स्कूल जा रहे होते हैं तो उन मेहनतकश बच्चों के नन्हें कदमों से उनकी दूरी तय हो रही होती है; स्कूल जाने के लिए नहीं बल्कि अपने कार्यस्थल पर पहुंचने के लिए। उन लड़कियों के लिए सरकारी छुट्टियों का क्या महत्व है जो कंपकंपाते हाथों से दूसरों के घरों में पोचा लगा रही होती हैं और उस समय उन घरों के बच्चे रजाई और कम्बल की गर्माहट का आनंद ले रहे होते हैं। उनमें से कई अपनी माताओं के साथ गोबर के तसले (बट्ठल) फैंकती हुए अपनी ज़िद से कड़ाके की सर्दी को मात दे रही होती हैं।

अचानक अख़बार में पढ़े आंकड़े आंखों के सामने आ गए। हमारे देश में लाखों बच्चे हैं जो खेतों में, निर्माण कार्यों में, खानों में, घरेलू कार्यों जैसे घरों की साफ-सफाई, झूठे बर्तन साफ करना, भट्ठों पर ईंटें बनाना, मोमबत्ती बनाना आदि मजदूरी कार्य करते हैं। जहां बाल श्रम उन्हें स्कूल जाने से रोकता है, वहीं यह उनके मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और नैतिक दृष्टिकोण से खतरनाक और हानिकारक है। इन जगहों पर काम करने से उन्हें तरह-तरह की बीमारियां भी होती हैं। अक्सर जब सामान्य बच्चे अपने माता-पिता के प्यार की गर्माहट का आनंद ले रहे होते हैं, तो इन बच्चों को उनके मालिकों द्वारा पिटाई और गालियों के रूप में इनाम मिल रहा होता है। यहीं बस नहीं, अधिक काम करना और कम मजदूरी मिलना भी उनके अस्तित्व का हिस्सा है। मां-बाप को गरीबी से कुछ राहत दिलाने के लिए चंद सिक्कों की खातिर अपना बचपन छोड़ देना उनकी नियति है।

हालाँकि, बाल श्रम को समाप्त करने के लिए देश में कानून बनाए गए हैं, कई अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने बाल श्रम को शोषणकारी घोषित किया है, और दुनिया भर के संविधान बाल श्रम पर रोक लगाते हैं। हर साल जून की बारह तारीख को विश्व बाल श्रम विरोधी दिवस मनाया जाता है, लेकिन बाल मजदूरों की दशा सुधारने या बाल मजदूरी समाप्त करने में कोई कानून मदद नहीं कर सका है। सड़कों पर भटकते बचपन और पालनों में पलते बचपन के बीच की खाई को कोई भी कानून पाट नहीं सका है।

देश को आजाद हुए साढ़े सात दशक हो गए हैं। इतने सालों के बाद भी न तो गरीबी दूर हुई है और न ही बाल श्रम। गरीबी बाल श्रम को जन्म देती है। सरल प्रश्न यह है कि मूल कारण को समाप्त किए बिना इससे उत्पन्न होने वाले कारणों को कैसे रोका जा सकता है ? यदि गरीबी का परिणाम बाल श्रम है तो पहले गरीबी को मिटाना होगा। अगर गरीबी खत्म करने का इरादा है तो ***शेष पृष्ठ 39 पर***

सरगर्मियां

आखों पर पट्टी बांध कर पढ़ने का दावा करने वाले नाकाम सिद्ध हुए

उकलाना ज़िला फतेहाबाद के आक्सफोर्ड स्कूल में हरिद्वार के गुरूकुल के योगाचार्य कर्मवीर बच्चों की आखों पर पट्टी बांध कर पढ़ने की ट्रेनिंग दे रहे थे। जब इस बात का तर्कशील सोसायटी के सदस्यों को पता चला तो सोसायटी के प्रदेश अध्यक्ष फरियाद सनियाना अपने कुछ साथियों समेत उस स्कूल में पहुँच गये। स्कूल के प्रिंसीपल की मार्फत योगाचार्य व उसके साथियों के साथ बात की गई तथा उस योगाचार्य को सोसायटी द्वारा रखी गई पांच लाख रूपये की चुनौती दी गई। योगाचार्य व उसके सहयोगियों ने सोसायटी की चुनौती को स्वीकार कर लिया तथा तय हुआ कि 15 मई 2023 को आक्सफोर्ड स्कूल के सभागार में आंखों पर पट्टी बांध कर पढ़ने का प्रदर्शन किया जाएगा। उस प्रदर्शन से पहले सोसायटी के सदस्य पाँच लाख रूपये का चैक तथा स्कूल में आयोजन करवाने वाले 50000 रूपये किसी साझे व्यक्ति के तौर जमानत के तौर पर रख देंगे। यदि योगाचार्य के शिक्षार्थी आखों पर पट्टी बांध कर किसी पुस्तक की कुछ लाईनें पढ़ देंगे तो पांच लाख रूपये तथा 50000 रूपये की जमानत राशि प्राप्त कर लेंगे। परन्तु यदि वे नहीं पढ़ पाये तो सोसायटी सदस्य 50000 रूपये की राशि अपने पास जब्त कर लेंगे। शर्तों में यह भी तय हुआ था कि बच्चों की आखों पर पट्टी सोसायटी के सदस्य अपने तरीके से बाधेंगे।

नियत दिन जब प्रदर्शन शुरू हुआ तो सोसायटी के सदस्यों ने बच्चों की आखों पर पट्टी बांध कर ऊपर तैराकी वाला चश्मा लगा दिया। इस पर योगाचार्य एवं आयोजक ऐतराज़ जताने लग गये और बच्चे भी कहने लग गये कि उन्हें चक्कर आने लगे हैं। काफी कशमकश के बाद सोसायटी सदस्यों ने बच्चों की आंखों को रूई से ढंक दिया और उन्हें ''तर्कशील'' पत्रिका के किसी पेज की कुछ लाईनें पढ़ने को कहा। बच्चे काफी देर तक पत्रिका पर हाथ फेरते रहे परन्तु एक भी अक्षर को पढ़ नहीं पाये। फिर आयोजकों ने बच्चों को एक करंसी नोट दिया, इस सोसायटी सदस्यों ने बच्चों को नोट पर लिखा हुआ पढ़ने के लिए कहा परन्तु बच्चे फिर भी एक अक्षर पढ़ नहीं सके।

इस पर बौखलाए हुए आयोजकों नें हंगामा करना शुरू कर दिया। आयोजक लड़ाई झगड़े पर उतर आये, इस पर सोसायटी सदस्यों नें समझदारी दिखलाते हुए बड़ी शालीनता से झगड़े को आगे बढ़ने नहीं दिया। इस योगाचार्य एवं आयोजकों ने दांवपेच खेलते हुए बच्चों से माईक पर ऊँचे स्वरों में शान्ति पाठ का गायन कराना शुरू कर दिया। बाद में आयोजकों ने अपनी सीधीं हार को स्वीकार करने की बजाए बच्चों की और अधिक ट्रेनिंग करवाने के नाम पर आगे 15 दिन का समय मांग लिया। परन्तु अब 20 दिन हो चुके हैं अब वे किसी प्रकार का कोई जवाब नहीं दे रहे। अत: एक बार फिर से आखों को बंद कर के पढ़ने का दावा करने वाले पूरी तरह से नाकाम साबित हुए और वैज्ञानिक सोच की जीत हुई। इस प्रदर्शन के दौरान प्रदेश अध्यक्ष फरियाद सनियाना, ''तर्कशील पथ'' के संपादक बलवन्त सिंह लेक्चरार, हरबलास, एडवोकेट अजय सिंह व इकाई उकलाना के सभी सदस्य तथा इकाई सफीदों से ईश्वर सिंह, चन्द्र सैनी, मास्टर कर्ण सिंह व गुरदेव सिंह तथा अश्विनी इत्यादि वहां पर उपस्थित रहे।

रिपोर्ट-बलवन्त सिंह लेकचरार

पृष्ठ 38 का शेष सोचना होगा कि गरीबी क्यों है ? इसका मुख्य कारण कुछ परिवारों द्वारा उत्पादन पर नियंत्रण और उनके पक्ष में सत्ता का प्रभाव है। काबिज कॉरपोरेट्स द्वारा शुद्ध लाभ के लिए उत्पादन करना ही भूख, गरीबी, असमानता जैसे लक्षणों को जन्म देता है। पता नहीं कब तक इन नन्हे जीवों को अमानवीय परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। विचारों का यह सिलसिला बेटे की आवाज से टूटा, ''माँ, आप किन गिनतियों में उलझे खड़े हो? बाहर बेचारा बच्चा ठंड से कांपता चाय का इंतजार कर रहा है।'' झट से प्याले में चाय डालकर व कुछ खाने को लेकर मैं गेट की ओर चल पड़ी।

76260-63596

पंजाबी ट्रिब्यून - 13 जनवरी 2023

अनुवादक- कृष्ण कायत, मंड़ी डबवाली।

सरगर्मियां

उकलाना में तर्कशील सोसायटी हरियाणा की बैठक हुई

दिनांक 14-05-2023 को तर्कशील सोसायटी हरियाणा की द्विमासिक बैठक कुम्हार धर्मशाला-उकलाना ज़िला फतेहाबाद में सम्पन्न हुई। इस मीटिंग में सभी साथियों के आपसी परिचय के बाद सर्वप्रथम सोसायटी के प्रचार सचिव सुभाष तितरम ने अपने संबोधन में कहा कि वर्तमान में हमारे देश में शिक्षा पर हमला किया जा रहा है, इस से आने वाले समय में लोगों में वैज्ञानिक चेतना कमजोर होगी तथा इस से अंधविश्वास को बढ़ावा मिलेगा। साथी हरबलास ने बताया कि वे बेहतरीन पशु पालन के साथ-साथ अंधविश्वासों की पोल खोलने का कार्य भी निरन्तर करते रहते हैं। अपने संबोधन में मा. राकेश कुमार ट्रीमैन ने कहा कि तर्कशीलता का मुख्य उद्देश्य मानवता की सेवा करना ही है तथा पेड़-पौधे लगा कर भी हम मानवता की बड़ी सेवा कर सकते है। अपनी बात रखते हुए कृष्ण राजौद ने कहा कि अंधविश्वास आमतौर पर रूप बदल-बदल कर आते रहते हैं तथा तर्कशील सोसायटी उन सभी घटनाओं का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करके उनका पर्दाफाश करने का कार्य करती है।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के तौर पर बोलते हुए डा. महेन्द्र विवेक ने बताया कि विज्ञान की पढ़ाई करके एक वैज्ञानिक बन जाना एक अलग बात है, परन्तु किसी व्यक्ति का वैज्ञानिक चिंतन होना एक दम दूसरी बात है। हम देखते है कि समाज में अन्ध-श्रद्धालुओं की संख्या बहुतायत में होती है परन्तु वैज्ञानिक सोच वाले लोगों की संख्या कम होती है। उन्होंनें आगे कहा कि विज्ञान और तकनीक के विकास के साथ-साथ मानव अपनी प्रथाओं को भी बदलता चला गया, परन्तु भारत में यह बदलाव किस्मत व परमात्मा की देन ही माना गया। हमारे समाज की विडम्बना है कि हमारी प्रत्येक पीढ़ी की अलग-अलग संस्कृति एवं अलग-अलग सोच बनी हुई है। हमें चुनौतियों के आगे घुटने टेक देने की बजाए उन चुनौतियों का सामना करते हुए आगे बढ़ना पड़ेगा।

अपनी बात रखते हुए भगवन्त सिंह सेठी ने कहा कि विज्ञान पहले जानता है फिर मानता है। परन्तु आस्था जानने की कोशिश ही नहीं करती, केवल मानती ही है।

आपनी बात रखते हुए ''तर्कशील पथ'' के संपादक बलवन्त सिंह ने कहा कि हमें अधिक से अधिक अध्ययन करने की जरूरत है, व्हटसएप के ज्ञान की बजाए पुस्तकों का गहन अध्ययन करना आवश्यक है। हमें तर्कशील साहित्य का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करना चाहिए। अपने अध्यक्षीय संबोधन में सोसायटी के प्रदेशाध्यक्ष फरियाद सनियाना ने किसी संस्था द्वारा आंखों पर पट्टी बांध कर पढ़ने वालों की चुनौती के विषय में पूरी जानकारी दी तथा बताया कि सोसायटी ने उन्हें चुनौती दी है। उन के दावों का पर्दाफाश किया जाएगा। इकाई उकलाना के प्रधान एडवोकेट अजय सिंह ने इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए सभी साथियों का हार्दिक धन्यवाद किया।

मंच का संचालन सत्यवान मुगलपुरा ने किया। कार्यक्रम में राम प्रसाद, सत्यवान, वेद प्रकाश एंव सुरेश कुमार इत्यादि ने विशेष सहयोग दिया। साथी सुभाष तितरम ने तर्कशील साहित्य की स्टाल भी लगाई।

रिपोर्ट- बलवन्त सिंह लेक्चरार

लीडर जब आँसू बहा कर लोगों से
कहते हैं कि मज़हब ख़तरे में है तो
इसमें कोई हकीकत नहीं होती ।
मज़हब ऐसी चीज़ ही नहीं कि ख़तरे
में पड़ सके। अगर किसी बात का
ख़तरा है तो वो लीडरों का है जो
अपना उल्लू सीधा करने के लिए
मज़हब को ख़तरे में डालते हैं।

- सआदत हसन मंटो

जहां सियासत धार्मिक विवादों को शांत करे,
वह देश महान होता है और जहां सियासत खुद धार्मिक
विवादों को पैदा करो तो समझ लो कि देश को गलत
लोग चला रहें हैं।

- मार्टिन लूथर किंग

ह्यूमनिस्ट कैंप का आयोजन

चंडीगढ़ ह्यूमनिस्ट ऐसोसिएशन द्वारा दो दिवसीय ह्यूमनिस्ट कैंप का आयोजन किया गया। यह कैंप 29 मई से 31 मई 2023 को रोड़ भवन निकट मनसा देवी, पंचकूला में आयोजित किया गया। इसका प्रमुख उद्देश्य नई पीढ़ी को मानववादी और वैज्ञानिक सोच से जोड़ना था। संयोजक मनोज मलिक ने बताया कि कैंप में चंडीगढ़ के 8वीं कक्षा से 11वीं कक्षा तक के 15 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इनके साथ 3 व्यस्क मानववादी भी पूरा समय कैंप में रहे। इसके अलावा 4 कार्यकर्ताओं ने आंशिक रूप से अपनी भागीदारी की।

कैंप में बच्चों ने सुबह-शाम एक घंटे की हयूमनिस्ट यूनिट लगाने, आज्ञा देने, फ्लैग सैल्यूट करने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। बच्चों ने विभिन्न खेलों का आनंद उठाया। ह्यूमनिस्ट नारे ''जय इंसान जय विज्ञान'', ''तर्क से तरक्की'', ''किस्मत नहीं मेहनत'' आदि से ह्यूमनिस्ट संस्कार ग्रहण किए। इसके अलावा योग, परेड आदि का अभ्यास किया। कैंप गीत ''तू हिंदू बनेगा न मुसलमान बनेगा, इंसान की औलाद है इंसान बनेगा'' को कंठस्थ किया। बच्चों ने मिलकर रहने, भोजन करने, गीत गाने आदि का व्यवहारिक प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। सुबह 6 बजे से रात के 10 बजे तक की व्यस्त दिनचर्या में बच्चों ने मानवाधिकार, डार्विन के विकासवाद सिद्धांत, सेकुलरिज्म, लोकतंत्र, अंधविश्वास से दूर रहने, वैज्ञानिक नजरिया विकसित करने, विद्यार्थी के गुण जैसे अनेक विषयों पर जानकारी प्राप्त की। दीपक जी (वैज्ञानिक, डीआरडीओ, चंडीगढ़) ने बच्चों को व्यक्तित्व-विकास के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। बच्चों ने प्रश्नोत्तरी, अंत्याक्षरी, डायरी-लेखन, भाषण-प्रतियोगिता, विचार-चर्चा आदि में भी बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस कैंप के लिए बैंगलोर से विशेष रूप से पधारे डाक्टर रणजीत ने बच्चों को भारत के प्रसिद्ध मानववादियों चार्वाक, बुद्ध, जवाहरलाल नेहरू, भगत सिंह, रविन्द्रनाथ टैगोर, मानवेंद्रनाथ राय, डॉ. भीमराव अंबेडकर, गोरा आदि के जीवन से परिचित कराया। उन्होंने बच्चों को संसार के प्रसिद्ध मानववादियों सुकरात, एपीकरस, कन्फ्यूशियस, पैट्रार्क, अलबर्ट आइंस्टाइन, राबर्ट इंगरसोल, चार्ल्स पोटर, बर्ट्रेंड रसल आदि के बारे में भी बताया।

बच्चों को भारत के अच्छे नागरिक बनने, अच्छा हयूमनिस्ट बनने, वैज्ञानिक सोच को अपनाने के आह्वान के साथ कैंप संपन्न हुआ।

कैंप को सफल बनाने में नरेंद्र सिंह, जतिंदर पंवार, महावीर जी, सुदेश बघेल का सहयोग प्राप्त हुआ।

(रिपोर्ट- मनोज मलिक)

पृष्ठ 31 का शेष लोगों को सरकार की तरफ देखने से रोका जाए, इसी मकसद के साथ राजनीति भी इन 'बाबाओं' को स्थापित करती है और सरकारें चाहती है कि ऐसे बाबा हमेशा बने रहें। सरकारें चाहती है कि इस देश से वैज्ञानिक सोच पूरी तरह खत्म हो जाए और लोग चमत्कारों की चाह में ऐसे दरबारों में सिर हिलाते बैठे रहें, बजाय सड़कों पर खड़े होकर सरकार से दिक्कतों का इलाज मांगते हुए। इसलिए ये बाबा जब कानून तोड़ते हैं, तो भी सरकारें इन्हें अनदेखा करती हैं। ये जब इलाज के बड़े-बड़े दावे करते हैं, तब भी राज्य वहां लागू चमत्कार-विरोधी कानूनों का इस्तेमाल नहीं करते हैं। मध्यप्रदेश शायद ऐसे बाबा लोगों के मामले में हरियाणा के बाद दूसरे नंबर का राज्य बन गया है, और अब वहां का यह ताजा बाबा अपने बांटे जा रहे रुद्राक्ष के पक्ष में सरकारी विज्ञान प्रयोगशालाओं के प्रमाणपत्र का दावा भी खुलकर कर रहा है और ऐसा दावा भी सरकार को मजेदार लग रहा है। हो सकता है कि मध्यप्रदेश को देखकर दूसरे प्रदेशों के बाबा भी सरकारी प्रयोगशालाओं के सर्टिफिकेट गिनाने लगें, और देश में विज्ञान की कुछ और हद तक मौत हो जाए।

साभार ''दैनिक छत्तीसगढ़'' का संपादकीय (17 फरवरी 2023)

साम्प्रदायिक राजनीति को पराजित करना बहुत बड़ी चुनौती है, और इसके खतरे को महसूस नहीं करना बहुत बड़ी दुर्घटना है...! **-शैलेन्द्र शैली**

तर्कशील होना स्वस्थ होने की बुनियादी निशानी है

डा. श्याम सुन्दर दीप्ति
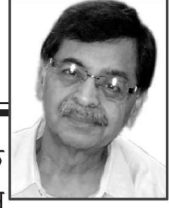
मैं तर्कशील सोसायटी से कब जुड़ा एवं लगातार 'तर्कशील' मैंगज़ीन का लेखक बना तथा वक्ता भी? यह जानने से पूर्व यह जानना जरूरी है कि मैं तर्कशील कब बना। मेरा तात्पर्य तर्कशील चिंतन से है। तर्कशील एवं वैज्ञानिक चिंतन समानार्थक शब्द हैं, परन्तु लोग दोनों को भिन्न-भिन्न अंदाज से लेते है। यदि तर्कशील कहे तो तात्पर्य होता है-सोसायटी से जुड़ी हुआ एवं नास्तिक, अर्थात ईश्वर को न मानने वाला। वैज्ञानिक सोच व्यापक दायरे वाली है। नास्तिक शब्द वैसे तो मार्क्सवादियों, कम्युनिस्टों के लिये भी प्रयोग में लाया जाता है, परन्तु सभी तर्कशील मार्क्सवादी नहीं होते। यह ब्यान और अधिक व्याख्या की मांग करता है। वैसे कार्ल-मार्क्स ने स्वयं भी एक बार कहा था, 'मैं मार्क्सवादी नहीं हूँ', इसको भी गहराई के साथ सोचने समझने की जरूरत है। मार्क्सवादी, तर्कशील व नास्तिक एक दूसरे के लिए प्रयोग में लाए अवश्य जाते हैं, परन्तु यह सभी संकल्प ही स्वतन्त्र संकल्प हैं।

मैं कह रहा था कि मेरा वास्ता कब से तर्कशीलता के साथ पड़ा ? यदि मैं विधिवत ढंग से इस विचारधारा के साथ जुड़ने की बात करूँ तो वह नौंवीं कक्षा में दाखिल होने के समय की बात है, भावार्थ यह है कि 15 वर्ष की आयु में। यह वह समय होता है कि विद्यार्थी ने आगामी पढ़ाई में विज्ञान रखना है अथवा आर्टस। माँ-बाप को अधिक ज्ञान नहीं था, अध्यापक स्वयं ही होशियार बच्चों को विज्ञान के विषय में दाखिल कर लेते क्योंकि यह भी धारणा थी कि विज्ञान की पढ़ाई कठिन होती है, कमजोर बच्चों से वह हो नही सकेगी। आगे फिर विज्ञान में मेडिकल तथा नॉन-मेडिकल की बात आती। एक विषय का अन्तर होता-गणित एवं जीव विज्ञान। ज्ञात नही कि यह फैसला अध्यापकों ने कैसे किया, मैं मेडिकल पढ़ने लग गया। कह सकते है कि विज्ञान के साथ जुड़ गया, विज्ञान के सिलेबस के विषय के साथ।

पाठ्यक्रम वाले विज्ञान के बारे में मेरा मानना है कि विज्ञान की पढ़ाई का वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ दूर-दूर तक कोई संबंध नहीं, कम से कम हमारे देश में। मेडिकल के मेरे अपनें सहपाठी और आगे मुझ से शिक्षा ग्रहण करने वाले सैकडों विद्यार्थी, मेरे नजदीकी दोस्त, रिश्तेदार, मेरे अपना परिवार, अधिकतर भाईचारा-वैज्ञानिक दृष्टिकोण में शून्य दिखाई देते हैं। हमारे इस भौगोलिक क्षेत्र में धार्मिक धारणाएं प्रभावपूर्ण हैं। 'गुरूओं' की धरती है। पता नही किस पड़ाव पर, धर्म और विज्ञान एक दूसरे के विरोधी करार दे दिये गये। इस धरती पर वेद रचे गये। इसके लिए सबसे अधिक सत्ता की भूमिका होती है। देश के हालात समझते हुए धर्म निरपेक्षता की बात करते, संविधान की रचना करते हुए, वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने की धारा जोड़ी गई। परन्तु जितनी मेहनत धार्मिक संस्थान करते है अंधविश्वास को कायम रखने के लिए, उसके मुकाबले में वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाला हथियार भोथरा भी है तथा इस तरफ कार्यशील लोगों की संख्या भी नगण्य है। इसके साथ-साथ उनमें आत्मविश्वास की कमी भी झलकती है।

तर्कशील होने के लिए, इस धारणा में विश्वास के लिए, विज्ञान के पाठ्यक्रम की पढ़ाई एक पक्ष तो हो सकती है, परन्तु उसको पढ़ाने वाला अध्यापक कौन है,यह महत्वपूर्ण है। जो कक्षा में भगवान का नाम लेकर अध्यापन को शुरू करे तों बात समझ में आ जाती है। विज्ञान का केन्द्रीय बिन्दू निरीक्षण-परीक्षण,पड़ताल,कारण की तलाश है परन्तु धर्म का नुक्ता है-'सब कुछ भगवान का ही किया कराया है और मानव के हाथ में कुछ भी नहीं है।' मेडिकल की पढ़ाई करके ,पूरे शरीर का परीक्षण करके, रोगाणुओं की किस्मों के बारे में जानकारी प्राप्त करके, उनके हमले की पूरी प्रक्रिया जान कर,लक्षणों की पैदावारी तरतीब को समझ कर भी यदि डाक्टर अपने कलीनिक में यह वाक्य लिख कर रखे, 'आई ट्रीट, ही क्योर' अर्थात् 'मैं दवा देता हूँ, वह ठीक करता है।' इस से साफ पता चलता हैं कि उस में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की कमी है।

वैसे तो नौवीं कक्षा का सिलेबस, पंद्रह वर्ष की आयु, किशोर अवस्था दौरान इस आयु में बुद्धि के विकास की शुरूआत होती है। नौवी कक्षा में ही न्यूटन,आर्किमिडीज,मेंडल आदि के सिद्धान्त पढ़ाए जाते है। विज्ञान का विषय आज कल चाहे प्रथम कक्षा से शुरू हो जाता है, जोकि जानकारी वाला होता है। शरीर की हड्डियां कितनी होती हैं, खाद्य प्रणाली के अंगों के नाम क्या हैं? परन्तु किशोर आयु में शुरू होता है-

मेंडल का सिद्धान्त जो समझाता है कि मां-बाप के गुण-दोष किस प्रकार से बच्चे में पहुंचते हैं। किस प्रकार से रंग, कद, बालों की बनावट बच्चे हासिल करते हैं। ये सिद्धान्त ज्ञानवान बनाते हैं। किसी प्रकार के अंधविश्वास एवं उलझन में पड़ने से बचाता है, पिछलग्ग् बनने से सोकता है।

सवाल है कि अध्यापक कौन है? अभिभावक एवं घर का माहौल किस प्रकार का है? भौतिक विज्ञान में चंद्रमा एवं सूर्य ग्रहण का वैज्ञानिक पक्ष पढ़ाया जा रहा है और ग्रहण वाले दिन मां अथवा दादी राहु-केतु की कथा सुनाती है। मैं इस पक्ष से ठीक रहा कि मेरे घर का माहौल खुला था, किसी विशेष गुरू, ग्रंथ अथवा भगवान को मानने, माथा रगड़ने, आरती उतारने का माहौल नहीं था। किसी मंदिर, गुरुद्वारे में जाने की दिनचर्या भी नहीं ती। वैसे नास्तिक भी नहीं थे।

किशोर अवस्था में सहज विकास है कि बच्चा बुद्धिमान हो रहा है, अर्थात जिज्ञासा का निवारण करने वाला बन रहा है। सवालों के जवाब मांगने वाला अथवा तलाशने वाला बन रहा है। इस समय अध्यापक यदि सहयोग नहीं देता और घर का माहौल भी दबाव वाला है, परन्तु बच्चा जिज्ञासु है। यह एक कुदरती प्रवृत्ति है और यदि इसे दबाया न जाए तो जिज्ञासा स्वयं ही रास्ता ढूंढ लेती है। यह मैं कह सकता हूँ कि मेडिकल कालेज की शिक्षा ने शरीर की बनावट एवं कार्य प्रणाली ने इस जिज्ञासा को नईं राहें दिखाई।

एम.डी. की पढ़ाई के दौरान जब मेरा विषय कम्यूनिटी मेडिसिन था और उस का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था- एपिडेमियोलॉजी अर्थात महामारी विज्ञान। जिसमें पढ़ाई थी कि किसी भी नयी प्रथम बार आई महामारी के कारणों तक किस प्रकार से पहुंचा जाए, जो तर्कशीलता की समझ को प्रयोग में लाना था।

पटियाला मेडिकल कालेज के अपने चिन्ह में एक वाक्य है, 'रोग दारू दोनों बूझै तो वैद्य सुजान।' एम.बी.बी.एस. अथवा और अधिक माहिर, सुपर माहिर होने का उद्देश्य ही यही है। रोग तक पहुंचना तथा उसका इलाज ढूंढना। यही तर्कशीलता है, जब सामाजिक परिघटनाओं का निरीक्षण परीक्षण करके सही कारणों तक पहुंचा जाए। कारण को जानने के बगैर इलाज करना अंधेरे में टक्करें मारने के समान है।

मानसिक रोगों के विभाग में कार्य करते हुए तर्कशीलता की यह विधी और अधिक स्पष्ट हुई, जब यह समझ लगी कि समस्त मानसिक रोग-डिप्रेशन, फोबिया, ऑबसेशन इत्यादि लक्षणों के अंग्रेजी नाम हैं। उदास, डरपोक, खबती आदि। कारण कहीं और है तथा रोग की जड़ कहीं पर और है-हमारे समाज में। रोगों की तह तक पहुंचने की समझ एक तो महामारी विज्ञान से प्राप्त हुई, दूसरे समाज विज्ञान का शिक्षार्थी होने से भी।

इस तर्कशीलता वाले पहलू को फिर मैग़जीनों व अख़बारों में लिखा। लेखन कार्य मैं पहले भी करता था, चाहे कविताओं से प्रारम्भ किया था। कहानी लिखी, फिर मिनी कहानी की तरफ भी आया, परन्तु सभी मानसिक रोगों को- उदासी रोग से शुरू कर के, समाज विज्ञान की समझ के साथ लिखा। प्रथम लेख प्रसिद्ध नाटककार गुरशरण सिंह के मैगजीन 'समता' में प्रकाशित हुआ तो हौसला बढ़ गया। फिर इन सभी लेखों को 'मानसिक रोग एवं हमारा समाज' नाम की पुस्तक में प्रकाशित करवाया। सर्वप्रथम तो स्वयं प्रकाशित करवाई तथा बाद में इसको तर्कशील सोसायटी ने प्रकाशित किया। तत्पश्चात् पुस्तक में थोड़ा बहुत संशोधन करके, कुछ और सम्मिलित करके, 'मन माहौल मनोरोग' शीर्षक के अधीन प्रकाशित की गई। यह पुस्तक तर्कशील सोसायटी ने स्वयं प्रकाशित करने का निर्णय लिया।

मानसिक रोगों को लेकर तर्कशील सोसायटी का वर्णनीय कार्य है। खासतौर पर हिस्टीरिया के केसों के मामले में। हिस्टीरिया, साधारण शब्दों में कहा जाए तो अचेत रूप में मन का विकार है। परिवार में विशेषतौर पर यदि कोई तिरस्कृत व्यक्ति है, उसे अपने मन की इच्छाओं को दबा कर रखना पड़ता है, क्यों कि उसके पास अन्य कोई जरिया नहीं होता। हमारे समाज में महिलाओं के साथ यह समस्या अधिक होती है, इसी कारण हिस्टीरिया के मामले भी महिलाओं में अधिक पाये जाते हैं। इसीलिए हिस्टीरिया उस दबाव में मानसिक विकार के रूप में सामने आता है। वह घर में पड़े हुए कपड़ों को काटना भी हो सकता है, घर में ईंट-पत्थरों का बरसना, घर में चीजों को आग लगना अथवा खून के छींटे गिरना भी। इन मामलों की तह तक जा कर, पूरी तरह से परख पड़ताल करके पीड़ित व्यक्ति तक पहुँच संभव है। तर्कशीलों ने ऐसे अनेकों मामले हल किये हैं।

इसी दौरान तर्कशील सोसायटी के प्रमुख राजेन्द्र भदौड़ ने कहा कि ऐसे केसों को सुलझाते हुए, एक नया पक्ष सामने आ रहा है। कहीं न कहीं सेक्स को लेकर लोगों की अज्ञानता का भी पहलू है। मुझे कहा गया कि सेक्स की वैज्ञानिक व्याख्या

को लेकर कुछ लिखूं। हम सभी जानते हैं कि सेक्स को लेकर 'ताकत-जवानी' के बोर्डों वाला कितना बड़ा बाजार है। शोषण है, धोखा है, क्योंकि यह साधारण बोलचाल में परस्पर चर्चा करने के लिए वर्जित विषय है।

मैंने कोशिश की और लगभग दो वर्ष इस के भिन्न-भिन्न पहुलओं के बारे में लिखा। उन्हें काफी पढ़ा गया तथा उस से अधिक नौजवानों के फोन आए और कुछ आकर भी मिले। सभी लेख एक पुस्तक 'नौजवान एवं सेक्स समस्याएं' के रूप में प्रकाशित हुई तो करनाल से मनोरोग विशेषज्ञ डा. जगदीश बठला ने इसे हिन्दी में हरियाणा के तर्कशील साथियों से अनुवाद करवा कर इसे हिन्दी में प्रकाशित करवाया तथा वे अपने पास आने वाले मरीजों को मुफ्त में बांटते हैं।

इस प्रकार मैं तर्कशील सोसायटी के नजदीक हुआ अथवा वे मेरे संपर्क में आए। मेरी लगभग 12 पुस्तकें उन्होंने प्रकाशित करवाईं हैं तथा तर्कशील बनने से जो मुझे मिला, वह बहुत विशाल है। मैं समझता हूं कि तर्कशील होना स्वस्थ रहने की निशानी है। यदि कोई शारीरिक तौर पर अपने आप को सेहतमंद कहता व समझता है, अर्थात कोई बुखार नहीं, कोई खांसी नहीं, किसी प्रकार की शरीर में कोई दर्द नहीं, परन्तु साथ ही वह इधर-उधर भटकता है, किस्मत को कोसता और बाबाओं के पास चक्कर काटता है, मन्नते मांगता है तथा व्रत इत्यादि रखता है, वह स्वस्थ नहीं है-यह भटकाव की स्थिति है। तर्कशील होना इस स्थिति को रोक देता है। एक वार्तालाप:

-यदि जानवरों से भिन्नता वाली मनुष्य की एक विशेषता को उभारना हो?

-मानव चिंतनशील है।

-सोचते तो जानवर भी हैं-जब उन्हें भूख-प्यास लगती है, जब सिर पर कोई खतरा आ जाए।

-मानव इन परिस्थितियों के मद्देनज़र फैसला करता है, सोच समझ कर फैसला लेता है।

-फैसला जानवरों को भी करना पड़ता है, हालातों के मद्देनज़र। भाग जाना है अथवा भिड़ जाना है।

-मानव विश्लेषण करता है, फिर फैसला लेता है।

-विश्लेषण तो जानवर भी करते हैं। बच जाएं या मर जाएं।

-मानव हर हालत में बचने, मरने से आगे जा कर इन परिस्थितियों के साथ निपटता भी है।

मानव का विश्लेषण तर्क पर आधारित है। अच्छे-बुरे की पहचान, उच्ति-अनुचित के प्रति परख-पड़ताल। तर्क करना दिमाग के विकास का पड़ाव है। अच्छे-बुरे की पहचान के पश्चात्, अच्छे के साथ खड़े होना तथा बुरे को नकारना, मानवीय सोच के आगामी पड़ाव हैं।

हिन्दी अनुवाद - बलवन्त सिंह लेकचरार
98158 08506

दुनिया के वो महान नास्तिक जिन्होंने मानव सभ्यता के विकास को दी गति

1. चार्वाक - "ईश्वर एक रुग्ण विचार प्रणाली है, इससे मानवता का कोई कल्याण होने वाला नहीं है।"

2. गौतम बुद्ध- "भगवान नाम की कोई चीज नहीं है। भगवान के लिए अपना समय नष्ट मत करो। केवल सत्य ही सब कुछ है अपना दीपक खुद बनो।"

3. सुकरात - "ईश्वर केवल शोषण का नाम है।"

4. इब्न रोश्द - इनका जन्म स्पेन के मुस्लिम परिवार में हुआ था, रोश्द के दादा जामा मस्जिद के इमाम थे, इन्हें कुरआन कंठस्थ थी। इन्होंने अल्लाह के अस्तित्व को नकार दिया था और इस्लाम को राजनैतिक गिरोह कहा था। जिस कारण मुस्लिम धर्मगुरु इनकी जान के पीछे पड़ गए थे।

5. कॉपरनिकस - इन्होंने धर्म गुरुओं की पोल खोल दी थी। धर्मगुरु ये कह कर लोगों को मूर्ख बना रहे थे कि सूर्य पृथ्वी के चक्कर लगाता है। कॉपरनिकस ने अपने प्रयोग से ये सिद्ध कर दिया कि पृथ्वी सहित सौर मंडल के सभी ग्रह सूर्य के चक्कर लगाते हैं, जिस कारण धर्म गुरु इतने नाराज हुए कि कोपरनिकस के जैसे सभी सार्थक वैज्ञानिकों को कठोर दंड देना प्रारंभ कर दिया।

6. मार्टिन लूथर - इन्होंने जर्मनी में अन्धविश्वास, पाखंड और धर्गुरुओं के अत्याचारों के खिलाफ आन्दोलन किया। लूथर ने कहा था "व्रत, तीर्थयात्रा, जप, दान आदि सब निरथक है।"

7. सर फ्रेंसिस बेकन - अंग्रेजी के सारगर्भित निबंधों के लिए प्रसिद्ध बेकन 23 साल की उम्र में ही पार्लियामेंट के सदस्य बने। बाद में लार्ड चांसलर भी बने। उनका कहना था "नास्तिकता व्यक्ति को विचार, दर्शन की ओर ले जाती है।"

8. बेंजामिन फ्रेंकलिन - "सांसारिक प्रपंचो में मनुष्य धर्म से नहीं, बल्कि इनके न होने से सुरक्षित है।"

शेष पृष्ठ 48 पर

मेडल नहीं, 'सेंगोल' बहाओ लड़कियों!

सीमा आज़ाद

बृजभूषण शरण सिंह ने देश के वर्तमान ही नहीं, भविष्य के साथ भी गुनाह किया है। आने वाले सालों में मां-बाप अपनी लड़कियों को इस क्षेत्र में भेजने से कतरायेंगे।

30 मई को आंदोलनरत पहलवानों की एक पाती ने देश के संवेदनशील लोगों को हिलाकर रख दिया था। यौन हिंसा के खिलाफ लड़ रही पहलवान लड़कियों ने अपने इमोशनल पत्र में लिखा था, कि आज शाम वे अपना मेडल गंगा में बहाने जा रही हैं। यह भी लिखा कि जान से प्यारे मेडल्स को बहाने के बाद क्योंकि जीवन का कोई औचित्य नहीं रह जायेगा, इसलिए वे इंडिया गेट पर आमरण अनशन पर बैठ जायेंगी। आश्चर्य की बात है कि यौन हिंसा के आरोपी बृजभूषण सिंह को गोद में लिये बैठी मोदी सरकार ने इस पत्र के खलबली मचा देने के बाद भी मुंह नहीं खोला और मेडल गंगा में बहाने से रोकने का कोई प्रयास भी नहीं किया, हरिद्वार पुलिस को यह आदेश दे दिया गया कि वे उन्हें रोकने का कोई प्रयास न करें। उल्टे भाजपा समर्थक लोग पहलवानों को ट्रोल करते हुए सोशल मीडिया पर लिखते रहे कि 'मेडल ही नहीं, जीत के बाद इनाम में मिला पैसा और सुविधायें भी लौटा देना चाहिए।' यह सब बेहद शर्मनाक और अपमानजनक था। इतना कि पहलवानों के कुछ समर्थक भी आहत होकर कहने लगे कि उन्हें मेडल बहा देना चाहिए और सबकुछ वापस कर देना चाहिए।

ऐसी अफरा-तफरी की स्थिति में देश के कुछ नागरिक और जनसंगठन सक्रिय हुए। उन्होंने पहलवानों से ऐसा कदम उठाने से रोकने की न सिर्फ लिखित अपील की, बल्कि रोकने के लिए कई लोग हर की पैड़ी पहुंच भी गये। भारतीय कुश्ती संघ में यौन हिंसा के खिलाफ मुंह खोलने वाले पहलवान जब हाथ में मेडल लिए हरिद्वार की हर की पैड़ी पहुंचे, तो लोगों के साथ मीडिया का हुजूम भी साथ पहुंच गया।

मीडिया का वह हिस्सा भी, जिसे अभी तक पहलवानों के आंदोलन से कोई मतलब नहीं था और जिनको 28 मई को इन पर होने वाले दमन की बजाय भारतीय संसद का हिन्दूकरण दिखाने में अधिक रूचि रही। इस गोदी मीडिया को एक ऐसा इमोशनल दृश्य मिलने वाला था, जिसे देखने के लिए लोग घरों में अपने फोन और टीवी से चिपके बैठे थे। ऐसा दृश्य जिससे मीडिया घरानों, चैनलों की दृश्यता, 'लाइकिंग' और 'शेयरिंग' में कई-कई गुना अधिक इजाफा होने वाला था। अफसोस कि दर्शकों के कौतुहल को ऊंचाई तक पहुंचा देने के बाद वहां उन्हें वह दृश्य नहीं मिल सका। मेडल प्रवाहित करने में अपना अंत देखने वाले पहलवानों को नरेश टिकैत ने पांच दिन का समय लेकर ऐन मौके पर रोक लिया। नरेश टिकैत आगे क्या करने वाले हैं, इस आन्दोलन में क्या भूमिका निभाने वाले हैं, इसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। लेकिन इस पूरे घटनाक्रम से एक बार फिर यह साफ हो गया कि यह सरकार किस हद तक देश के सम्मान विरोधी, असंवेदनशील, महिलाविरोधी, कानूनविरोधी और सामंती है। इस सरकार ने अपने लिए ऐसी ही जनता भी तैयार कर ली है, जिसे लड़कियों के मेडल प्रवाहित कर आमरण अनशन पर बैठने से कोई फर्क नहीं पड़ता, उल्टे उन्हें यह सामंती वाक्य कहने का सुख मिलता है, ''लड़का बनने चलीं थी....,पहलवान बन गयी तो क्या, मेडल जीत लिया तो क्या, रहोगी तो लड़की ही।''

लड़कियों! अपने मेडल नहीं, इस पितृसत्तात्मक दंभ को बहाओ

इस पितृसत्तात्मक देश में लड़कियों का पहलवान बनना कितना मुश्किल रहा होगा ये समझना बहुत मुश्किल नहीं है। ये मेडल उन्हें किसी सरकारी जोड़-तोड़ या सरकारी रहम से नहीं, बल्कि जी तोड़ मेहनत और उससे भी अधिक सदियों पुरानी एक पितृसत्तात्मक दीवार को गिराने से मिला है। कुश्ती और पहलवानी पूरी तरह पुरुषों के लिए आरक्षित क्षेत्र रहा है, क्योंकि यह खेल लड़कियों के लिए निर्धारित ड्रेस कोड में नहीं खेला जा सकता और लड़कियों के लिए बनाये गये ड्रेस कोड को तोड़ना इस समाज से लड़ना है। इस खेल में प्रवेश के लिए लड़की और उसके घर वालों को शारीरिक ही नहीं, कई-कई मानसिक वर्जनाओं को तोड़ना होता है। लड़कियां इन वर्जनाओं को तोड़ आगे बढ़ भी जायें, तो औरत को सिर्फ 'भोगने वाला एक शरीर' मानने वाले पुरुष उन्हें अपने लिए 'उपलब्ध' मान लेते हैं। खुद

कुश्ती संघ का अध्यक्ष और भाजपा का सांसद बृजभूषण भी ऐसा ही पुरुष निकला।

इन लड़कियों ने इतनी सारी विपरीत परिस्थितियों से लड़कर यह मेडल हासिल किया है। उनका मेडल लड़कों की तरह मात्र उनकी 'जीत' का पुरस्कार नहीं, पितृसत्ता की एक दीवार ढहाने का भी पुरस्कार है। यह इसका ऐलान है कि 'हर वो काम औरत कर सकती है, जो पुरुष कर सकता है'। यह इस क्षेत्र में आने वाली लड़कियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। इसे बहाना इस प्रेरणा को बहाना है।

बृजभूषण सिंह ने देश के वर्तमान ही नहीं, भविष्य के साथ भी गुनाह किया है। आने वाले सालों में मां-बाप अपनी लड़कियों को इस क्षेत्र में भेजने से कतरायेंगे। खेल में पहले भी लड़कियां कम थी, इस सरकारी बेहयाई से उनकी संख्या और भी घटेगी।

लड़कियों! मेडल के रूप में अपने इस जुझारू इतिहास को नहीं, लड़कियों के लिए बनाये गये पितृसत्तात्मक बाड़े और पूर्वागृहों को गंगा में बहाना।

कुछ लोगों ने मेडल बहा देने की अपील इसलिए भी की, क्योंकि मशहूर बॉक्सर मोहम्मद अली ने भी अपना मेडल ओहायो नदी में 'फेंक दिया था'। काले नस्ल का होने के कारण एक रेस्टोरेंट में एक गोरे वेटर ने उन्हें खाना सर्व करने से इंकार कर दिया था। इस अपमान के लिए उन्होंने जो किया, वो उनके हिसाब से सही था। सर्वश्रेष्ठ मेडल भी उन्हें सामान्य गोरे नागरिक जितना सम्मान नहीं दिला सका, यानी जिस समाज में गोरा या काला होना ही किसी की प्रतिष्ठा का मानदण्ड हो, वहां मेडल को 'फेंक देना' (पवित्र नदी में बहा देना नहीं) प्रतिरोध का अच्छा तरीका है। लड़कियों! ऐसी कोई स्थिति आये तो तुम भी बहाने की बजाय अपना मेडल फेंक देना सत्ता के मुंह पर। लेकिन खिलाड़ियों की जमात हर समय में, हर देश में, हर मुद्दे पर, हर लड़ाई एक ही तरह से लड़ें ये ज़रूरी नहीं। यहां तो सरकार इस ताक में बैठी है कि लड़कियों को खेल के मैदानों से, स्कूल-कॉलेजों से, उच्च संस्थानों से, संसद-विधान सभाओं से वापस रसोइयों में और मर्दों के बिस्तरों पर भेज दिया जाय। इसी विचार के कारण एक यौन हिंसक का इतना खुला बचाव किया जा रहा है। ये इस देश की लड़कियों पर होने वाली हिंसा के खिलाफ मनुवादी सरकार से लड़ाई है, जहां लड़कियों के सामने लड़ने के अलावा कोई रास्ता नहीं है। मेडल बहाना प्रतीक रूप में भी यहां फिट नहीं बैठता।

लड़कियों! महिला विरोधी मनुस्मृति के विचार को बहाओ, मेडल मत बहाओ

इस सरकार का जनवाद में विश्वास ही नहीं है, इस देश के संविधान में भी नहीं और इस देश के संवैधानिक कानूनों में भी नहीं। क्या ये अजीब नहीं है कि भाजपा का सांसद, सरकार का हिस्सा बृजभूषण पॉक्सो कानून में फेर-बदल के लिए साधु-संन्यासियों का जमावड़ा कर रहा है और साधु-सन्यासी उसके पक्ष में बोल रहे हैं। अब यह छिपा नहीं है कि इस सरकार का विश्वास मनुवादी संविधान में है। यह सरकार लगातार इस ओर बढ़ रही है। 28 मई को 'सेंगोल समारोह' के माध्यम से मोदी सरकार ने मनुवादी सामंती राजतंत्र की अप्रत्यक्ष लेकिन बाकायदा घोषणा भी कर दी है। उस दिन संसद किसी सामंती राजा का दरबार ही लग रहा था, जिसमें ब्राह्मण-पुरोहित राजा के इर्द-गिर्द मौजूद रहते थे और राजा को राजकाज के सुझाव दिया करते थे। 28 मई को संसद वैसे ही सामंती राज दरबार में बदल गया था, जिसमें औरतों की कोई जगह नहीं होती। नंग-धड़ंग साधु उस दिन संसद के अन्दर और औरतें इस संसद भवन के बाहर थीं, जो इस हिंसक, असंवैधानिक राजदरबार के खिलाफ प्रदर्शन कर रही थीं। दिन भर चले 'राजशाही' के कार्यक्रम के तुरन्त बाद इन लड़कियों को सड़कों पर घसीटकर राजतांत्रिक सत्ता व्यवस्था में उनकी जगह बताई गई थी।

लड़कियों! तुम्हें इस सामंती, पितृसत्तात्मक राजदरबार को उसकी जगह बतानी है। लेकिन याद रखना, जैसे ही तुम इस ऐतिहासिक काम को करने आगे आओगी, हरिद्वार में मेडल बहाने के लिए लुहकारता मीडिया गायब हो जायेगा और तुम्हें विशेषणों से नवाजने लगेगा। घबराना मत, यह वैसा समय है, जब ये विशेषण तुम्हारे गले में लटका एक और मेडल होगा। वह मेडल जो भविष्य की लड़कियों को कहेगा कि तुम सिर्फ खिलाड़ी नहीं जालिमों के खिलाफ लड़ने वालों के खेमे में उपस्थित थी। देखो लेख लिखते हुए ही तुम्हारी जीत की एक खबर आ गयी-अयोध्या में बृजभूषण की रैली कैंसिल हो गयी। यह इस लड़ाई का दबाव है लड़कियों। मेडल नहीं, मनु की सत्ता के इस सेंगोल को बहाओ लड़कियों!

(लेखिका सामाजिक कार्यकर्ता और ''दस्तक नये समय की'' पत्रिका की संपादक हैं।)

95062 07222

धर्म और ईश्वर की उत्पत्ति कैसे हुई?

-सुशोभित

सोचिये, सोचिये। आज फ़ुरसत निकालकर यही काम कीजिये। मालूम कीजिये कि यह सब कहाँ से शुरू हुआ। आप अपने आसपास जितनी भी चीज़ें देखते हैं, एक समय वे नहीं थीं। हर वस्तु और विचार का एक उद्‌गम होता है। पता कीजिये यह धर्म और ईश्वर कहाँ से आए? आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि जब मनुष्यजाति इस पृथ्वी पर अस्तित्व में आई और उसने आँखें खोलकर अपने आसपास देखा तो उसने जंगलों को पाया, समुद्रों को, पहाड़ों को-लेकिन एक भी मंदिर यहाँ मौजूद नहीं था! तमाम मंदिर मनुष्यों ने ख़ुद बनाए। तमाम पवित्र किताबें मनुष्यों ने ख़ुद रचीं। तमाम ईश्वर मनुष्यों ने ख़ुद गढ़े। मनुष्य से पहले किसी भी धर्म और किसी भी ईश्वर का कोई अस्तित्व नहीं था। मनुष्य ईश्वर का सृष्टा है, जन्मदाता है।

मनुष्य ने ईश्वर को क्यों बनाया? क्योंकि मनुष्य एक सीधी-सी बात कहने में असमर्थ है- "मुझे नहीं पता!" मनुष्य हज़ार झूठ गढ़ लेगा, लेकिन ये एक बात नहीं कह सकेगा। पर मनुष्य को सच में ही कुछ पता नहीं है। उसे नहीं पता कि जन्म से पहले वह क्या था और मृत्यु के बाद वह क्या होगा। था भी या नहीं, या होगा भी या नहीं? क्या सच में ही कोई आत्मा है, कोई चैतन्य तत्व है? संसार को कौन संचालित कर रहा है? संसार की रचना कैसे हुई और क्यों हुई? मनुष्य के जीवन का क्या प्रयोजन है? कुछ लोग सुख क्यों पाते हैं, वहीं कुछ लोग आजीवन कष्ट क्यों सहते हैं? कुछ स्वस्थ क्यों जन्मते हैं, कुछ विकृत क्यों पैदा होते हैं? कुछ बुद्धिमान, कुछ मूर्ख क्यों हैं? क्या सच में ही कोई कर्म-सिद्धांत है, जो पाप-पुण्य का हिसाब करता है? अगर हाँ तो यह हिसाब किस बही-खाते में रखा जा रहा है?

मनुष्य को इनमें से किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं पता है। पर नहीं पता है, यह कहने में उसके अहंकार को चोट लगती है। इसलिए वह कहता है कि ईश्वर यह सब करता है। ईश्वर उसके अहंकार की तुष्टि का एक साधन है। ईश्वर के माध्यम से मनुष्य यह कहना चाहता है कि मुझे सब पता है!

जिस भी व्यक्ति में बुद्धि है, वह दिन की रौशनी की तरह साफ़ इस सच को देख सकता है कि धर्म और ईश्वर का सीधा सम्बंध अहंकार से है। मेरा धर्म, मेरी जाति, मेरा समुदाय, मेरा ईश्वर , मेरा पैग़म्बर! यहाँ पूरा ज़ोर ''मेरे'' पर है। ईश्वर मनुष्य के बेमाप अहंकार का विस्तार है!

इसके अलावा, ईश्वर भय की उत्पत्ति है। डर ईश्वर का पिता है। बादल गरजते थे, बिजली कड़कती थी, जंगलों में आग की लपटें उठती थीं, भूकम्प आते थे- मनुष्य भय से थर-थर काँपता था। उसने पूछा, यह सब कौन करवाता है? फिर स्वयं ही इसका उत्तर दिया कि यह सब ईश्वर कर रहा है। क्योंकि प्रश्नों के साथ जीवित रहने की क्षमता मनुष्य में नहीं है। उसे उत्तर चाहिए। फिर चाहे कितने ही थर्ड क्लास उत्तर हों, घटिया समाधान हों, सस्ते उपाय हों- पर प्रश्नों के साथ वह जी नहीं सकता।

तो मनुष्य ने उत्तर दिया, यह सब ईश्वर करता है। फिर पूछा गया कि हम क्या करें, जो ईश्वर यह सब नहीं करे? मनुष्य की बुद्धि से उत्तर आया, जो करने से हमें अच्छा लगता है, वही हम अगर ईश्वर के लिए करें तो ईश्वर भी प्रसन्न होगा। कैसे प्रसन्न होगा? ईश्वर के अहंकार को सहलाओ, उसकी पूजा करो, उसको पशुओं की बलि दो, उसके सामने भोग लगाओ, शीश नवाओ। मनुष्य ने सोचा कि अगर कोई मेरे सामने शीश नवाए तो मुझे कितना अच्छा लगेगा? तब तो यह ईश्वर को भी अच्छा लगना चाहिए (ईश्वर की यह एंथ्रोपोमोर्फ़ीक कल्पना देखते हैं!)। उसने ईश्वर के सामने शीश नवाया और कहा, अब मेरा ध्यान रखना, बेटे की नौकरी लगवा देना, बेटी की शादी करवा देना, घर में धन-सम्पदा भर देना, सबको सुखी-नीरोगी रखना।

''ईश्वर'' का यही सब काम-धंधा है-शादियाँ करवाना, नौकरियाँ लगवाना, धन-दौलत देना, सुख-समृद्धि देना। जिस दिन ईश्वर यह नौकरी करने से इनकार कर देगा, मनुष्य उसको फेंक देगा!

तमाम धर्मों की एक ही रट है- फलाँ चीज़ें करो, फलाँ फल मिलेगा। मनोकामना सिद्ध होगी। पुण्य मिलेगा। दूसरी दुनिया में ये सब सुख प्राप्त होंगे। अगर आप इन विचारों की उत्पत्ति की पड़ताल करें तो पाएँगे कि इनके पीछे किसी न किसी शातिर इंसान का दिमाग़ काम कर रहा है, जो जानता है कि मनुष्य लालच के सामने बेबस है। ईश्वर मनुष्य के शातिर दिमाग़ की उपज है। तो ''ईश्वर'' का जन्म अहंकार से हुआ, भय से हुआ और लोभ से हुआ- इतनी नकारात्मक वृत्तियों से जो वस्तु पैदा हुई, वह शुभ कैसे हो सकती है?

और मनुष्य ने ईश्वर को बनाया-संगठन के लिए।

एकता के लिए। मनुष्यजाति विभिन्नताओं से भरी है और कोई दो लोग किसी बात पर एकमत नहीं हो सकते। इसके लिए एक बड़ी कल्पना की ज़रूरत थी।लौकिक नहीं पारलौकिक कल्पना। अगर मैं कहूँ कि मेरी बात मानो तो कोई नहीं मानेगा। अगर मैं कहूँ कि यह ईश्वर का निर्देश है, तो सब मान बैठेंगे। ईश्वर के संदेशवाहक आए, जिन्होंने ईश्वर के काल्पनिक निर्देशों को किताबों में दर्ज़ किया। राजा ईश्वर का स्वघोषित प्रतिनिधि बन गया। यह अकारण नहीं है कि आज भी राजा-लोग ईश्वर का हवाला देते हैं, मंदिर वग़ैरा बनवाते हैं, धार्मिक क्रियाएँ करते हैं। क्योंकि ईश्वर लोगों को जोड़ता है और राजनीति में लोगों को जोड़ने का मतलब है- बहुमत से चुनावी जीत! जिस दिन ईश्वर चुनाव जिताना छोड़ देगा, नेता लोग उसको घूरे पर रख देंगे!

एवोल्यूशन के सिद्धांत से ईश्वरप्रेमी-राजनीति का झगड़ा भी इसीलिए है कि एवोल्यूशन कहती है जैविकी का क्रमिक विकास हुआ है, मनुष्यों को किसी ने रचा नहीं है। नियम है, पर नियंता नहीं है। एवोल्यूशन ईश्वर को निरस्त करती है। यही कारण है कि सत्ता में बैठे हुए ईश्वर के चाटुकार एवोल्यूशन का चैप्टर स्कूल की किताबों से हटा देते हैं। बिलकुल स्वाभाविक है। अपने अस्तित्व पर ख़तरा उत्पन्न करने वाली बातों को कौन प्रश्रय दे? यह सत्ता, अहंकार, डर और लालच का घालमेल- जिससे ईश्वर की उत्पत्ति हुई- इसको आप पवित्र कहते हैं?

दो साल पहले महामारी आई थी, तब सबसे पहले धर्म और ईश्वर छुट्टी पर चले गए थे। आपको क्या लगता है, पूजा-पाठ करने वालों की जान तब ईश्वर ने बचा ली थी? एक न एक दिन मनुष्यजाति दिन की रौशनी की तरह इस सत्य का साक्षात् करेगी कि धर्म और ईश्वर ह्यूमन-कंस्ट्रक्ट हैं। मानव-निर्मित संरचनाएँ हैं। और विपदा में ईश्वर आपकी मदद करेगा, यह ख़ुशफ़हमी वैसी ही है, जैसी नमक के पुतले को लेकर समुद्र में कूद जाना और यह उम्मीद करना कि वह आपको डूबने से बचा लेगा।

कोई ईश्वर नहीं है!

कोई आपकी रक्षा नहीं करेगा!

इस क्रूर और तटस्थ यूनिवर्स में आप पूरी तरह से अकेले हैं!

अगर आपमें इस सच का सामना करने की हिम्मत नहीं है तो भजन कीजिये और नमाज़ पढ़िए।

पृष्ठ 44 का शेष **9. चार्ल्स डार्विन** – ''मैं किसी ईश्वरवाद में विश्वास नहीं रखता और न ही आगामी जीवन के बारे में।''

10. कार्ल मार्क्स – ''ईश्वर का जन्म एक गहरी साजिश से हुआ है और धर्म एक अफीम है।'' उनकी नजर में धर्म विज्ञान विरोधी, प्रगति विरोधी, प्रतिगामी, अनुपयोगी और अनर्थकारी है, इसका त्याग ही जनहित में है।

11. ई.वी. रामास्वामी पेरियार – इनका जन्म तमिलनाडु में हुआ और इन्होने जातिवाद, ईश्वरवाद, पाखंड, अन्धविश्वास पर जम के प्रहार किया।

12. अल्बर्ट आइन्स्टीन – विश्वविख्यात वैज्ञानिक आइन्स्टीन का कहना था ''व्यक्ति का नैतिक आचरण मुख्य रूप से सहानभूति, शिक्षा और सामाजिक बंधन पर निर्भर होना चाहिए, इसके लिए धार्मिक आधार की कोई आवश्यकता नहीं है मृत्यु के बाद दंड का भय और पुरस्कार की आशा से नियंत्रित करने पर मनुष्य की हालत दयनीय हो जाती है।''

13. शहीद भगत सिंह –क्रांतीकारी भगत सिंह ने अपनी पुस्तक ''मैं नास्तिक क्यों हूँ?'' में कहा है ''मनुष्य ने जब अपनी कमियों और कमजोरियों पर विचार करते हुए अपनी सीमाओं का अहसास किया तो ईश्वर की कल्पना की गई है।''

14. कामरेड व्लादिमीर लेनिन – लेनिन के अनुसार ''जो लोग जीवन भर मेहनत मशक्कत करते हैं और आभाव में जीते हैं, उन्हें धर्म इहलौकिक जीवन में विनम्रता और धैर्य रखने की तथा परलोक में सुख की आशा से सांत्वना प्राप्त करने की शिक्षा देता है, परन्तु जो लोग दुसरों के श्रम पर जीवित रहते हैं उन्हें इहजीवन में दयालुता की शिक्षा देता है, इस प्रकार उन्हें शोषक के रूप में अपने सम्पूर्ण अस्तित्व का औचित्य सिद्ध करने का एक सस्ता नुस्खा बता देता है।''

15. स्टीफन हॉकिंग– विश्व प्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी और ब्रह्मांड विज्ञानी स्टीफन हॉकिंग ने ब्लैक होल और बिग बैंग सिद्धांत को समझने में अहम योगदान दिया। उन्हें 12 मानद डिग्रियाँ और अमरीका का सबसे उच्च नागरिक सम्मान प्राप्त हुए। स्टीफ़न हॉकिंग ने अपनी किताब ''द ग्रांड डिज़ाइन'' में भगवान के अस्तित्व को सिरे से नकार दिया है.हॉकिंग कहते हैं, ''गुरुत्वाकर्षण वो नियम है जिसकी वजह से ब्रह्मांड अपने आपको शून्य से एक बार फिर शुरू कर सकता है और करेगा भी. ये अचानक होने वाली खगोलीय घटनाएं हमारे अस्तित्व के लिए ज़िम्मेदार हैं। इसलिए ब्रम्हांड को चलाने के लिए भगवान की ज़रूरत नहीं है।''

तर्कशील लहर के बढ़ते कदम

गंगानगर (राजस्थान) में लड़कियों के 9 दिवसीय कैम्प में व्यक्तित्व निर्माण कैंम्प में तर्कशील सोसायटी पंजाब के नेतृत्व का सम्मान एंव उपस्थित जन समुह

तर्कशील सोसायटी पंजाब की टीम गांव खीवा मिन्हा सिंह में पुनर्जन्म का पर्दाफाश करने के समय परिवार के साथ

शरीर प्रदानी माता गुरनाम कौर की अंतिम विदायगी

तर्कशील सोसायटी पंजाब के बरनाला में सम्पन्न हुए द्वि वर्षीय सम्मेलन में राज्य कार्यकारिणी चुनी गई इसमे उपस्थित प्रतिनिधि एंव दर्शक

कोजीकोड (कालीकट, केरल) में फ़ीरा की बैठक

तर्कशील सोसायटी पंजाब का प्रतिनिधि मंडल डिप्टी स्पीकर जय किशन सिंह रोड़ी को अंधविश्वास विरोधी कानून का ड्राफ्ट एंव स्मरण पत्र देते हुए।

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera ByPass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Cell. 98769 53561, 98728 74620
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....